'कँटीले तार'

[आयरलैण्ड के अमर उपन्यासकार हालकेन के Barbed Wires
का अविकल अनुवाद]

: अनुवादक :

श्यामू संन्यासी

सरस्वती प्रेस बनारस

१

मछुओं का एक छोटा-सा नगर पील आइल आफ मेन द्वीप के पश्चिमी भाग पर बसा हुआ है। पील से थोड़े दक्षिण में हटकर नोकालो नाम की एक बड़ी-सी ज़मींदारी है। नोकालो की ऊँची भूमि पर से एक बन्दरगाह, प्रकाशस्तंभ, और पानी में लंगर डाले मछलियाँ पकड़नेवाली नावें और दूर-दूर तक फैला समुद्र देखा जा सकता है। समुद्री किनारे और ज़मींदारी के बीच में पहाड़ियों की एक काली लकीर खड़ी है। उन पहाड़ियों के शृंग तेज़ और नुकीले हैं। सबसे ऊँची पहाड़ी पर एक चौकोन बुर्ज है। बुर्ज को वहाँ के लोग 'कोरीन्स फॉली' कहते हैं। 'कोरीन्स फॉली' के नीचे एक क़ब्रस्तान है और क़ब्रस्तान को घेरे हुए पत्थरों की एक छोटी-सी दीवाल है।

समुद्र इतना पास है कि दूर तक उसकी गर्जना सुनाई पड़ती है। गर्मियों में तो जब समुद्र की ओर से हवा बहती है तो साथ में क्षार भी उड़ाकर लेती आती है। अड़ोस-पड़ोस का दृश्य यद्यपि मोहक नहीं है, फिर भी मन को मोह लेनेवाला है। सर्दी में सूर्य की धूप के समान यहाँ की शान्ति मीठी लगती है।

पहाड़ियों के बीच में कृषि-घर है। पहाड़ियों की मधुर ऊष्मा में वह निश्चित सो रहा-जैसा लगता है। मकान काफ़ी बड़ा है। पड़ोस में और भी अनेकों कोठरियाँ हैं। एक सँकड़ी गली-द्वारा वह घर सड़क से संलग्न है। गली के दोनों ओर छोटे-छोटे वृक्ष उग रहे हैं।

इस ज़मींदारी को राबर्ट क्रेइन नाम का एक किसान लगान पर जोतता है। राबर्ट क्रेइन बूढ़ा हो गया है; परन्तु उसकी स्फूर्ति अब भी युवकों-जैसी है। अब भी वह आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर अकड़ता हुआ चलता है। नोकोलो की यह ज़मींदारी जोतते-बोते उसने अपनी उम्र बिताई है। उसके पहले

बाप-दादा भी इसी ज़मीन को जोतते-बोते थे। इस ज़मीन के साथ उनके जीवन सम्बन्धित हैं। वह उनके कुटुम्ब का एक अंग हो गई है।

राबर्ट बूढ़ा हुआ और फिर उसका बेटा युवक होकर उसकी बगल में आ खड़ा हुआ तो बूढ़े ने अपनी ज़िम्मेदारियाँ उसे सौंप दीं। अब वह अपनी ज़िन्दगी के अन्तिम क्षण आराम से बिताने घर में ही पड़ रहता। रविवार के सिवा शायद ही घर से बाहर निकलता।

'बुढ़ापा है भाई! हल तो अब चला सकता नहीं। उपदेश के दो शब्द किसी अज्ञानी को सुना सकूँ तो मन को शान्ति मिले।'—कहता वह गिर्जा-घर में जा पादरी का थोड़ा-बहुत काम कर आता।

उसकी पत्नी मर गई है। रेलवे स्टेशन की ओर ज़मींदारी का जो बड़ा-सा दरवाज़ा है, उसके सामने कर्क पेट्रीक के गिर्जे में वह दफ़नाई गई है।

उसके जवान लड़के का नाम भी राबर्ट ही है। परन्तु सभी उसे रोबी के स्नेह-भरे छोटे-से नाम से पुकारते हैं। एक लड़की भी है। उसका नाम मोना है।

रोबी २६ वर्ष का मस्ताना युवक है। उसकी आँखें खूब चमकीली हैं। हरी धरती के समान ताज़गी से भरा उसका चेहरा। और बाप का तो वह दाहिना हाथ ही है।

मोना लगभग तेईस वर्ष की कुमारी है; परन्तु उसे कुमारी तो कोई ही कहे। उसका पुष्ट और भरा शरीर देख जवाँमर्द की याद ताज़ा होती है। मज़बूत चौड़ी छाती, पुष्ट-स्नायु, स्थिर क़दम, सीधी देह-यष्टि, बड़ी-बड़ी और माँजरी आँखें और भ्रमरों से काले केश—यौवन की साक्षात मूर्ति ही हो जैसे।

मा की मृत्यु के बाद से मोना ही खेती और उस पर काम करनेवाले मजदूर—साथियों—की साल-सँभाल रखती है। वह करे सो व्यवस्था और वह कहे सो हुक्म। उसका भाई और बूढ़ा-बाप भी उसके कथनानुसार चलते हैं। सभी को उसकी शक्ति और बुद्धि में विश्वास है।

मोना के हृदय में मृदुलता नहीं है; परन्तु उसे मित्र मिल गये हैं।

उसका एक मित्र किसी छोटी-सी ज़मींदारी का भावी ज़मींदार श्री जॉन कार्लेट नाम का व्यक्ति है। नोकालो की हद एक दूसरे को छूती हैं। वह मोना के पास अकसर आया करता है; परन्तु जैसा वह बेढंगा है, वैसी ही बेढंगी और विचित्र उसकी प्रेम की रीति भी है।

'सारे डगलस को दूध पूरा दे सकें, इतने जानवर यदि हम दोनों ही के पास हों तो कितनी अच्छी बात है?'

पुस्तक की भाषा जितनी सरलता से पढ़ी जा सकती है, उतनी ही सरलता से मोना उसके मनोभावों को ताड़ जाती है और उसकी मज़ाक उड़ा उसे घर भेज देती है।

नोकालो की अधिकांश ज़मीन में खेती नहीं होती। परिवार भर के लिए साल-भर तक आसानी से अन्न का प्रबन्ध हो जाय, उतने ही भाग में गेहूँ और जौ बोये जाते हैं और बाक़ी का भाग चारागाह के लिए छोड़ दिया जाता है। उनका मुख्य व्यवसाय ही पील शहर को दूध देने का है। इसलिए गोचर-भूमि भी आवश्यक है ही।

सवेरे ६ बजे ग्वालिनें आती हैं। सात बजे दूध की बाल्टियाँ भरी जाती हैं। सभी बाल्टियाँ तब तक एक बड़े से ठेले में रख दी जाती हैं और मोना उन्हें शहर में धकेलकर ले जाती है।

× × ×

१९१४ की अगस्त के प्रारम्भिक दिन हैं। रविवार का तेजस्वी सूर्य आकाश में उगा है। मोना बड़े दरवाज़े से बाहर निकली। एक धड़ाके की आवाज़ सुनकर वह चकित-सी खड़ी रह गई। वह समझी कि किसी लाइफ़-बोट की तोप छूटने की आवाज़ होगी। उसने समुद्र की ओर निगाह घुमाई। समुद्र निर्दोष बालक के समान ऊँघ रहा था। दूर तक कहीं कोई जहाज़ दीख नहीं पड़ रहा था। फिर यह आवाज़ कैसी?

दरबे में से एक मुर्ग़ा बाँग देता है। पहाड़ी पर चढ़ती बकरियों को देखता हुआ रोबी का कुत्ता भूँकता है। बाड़ पर खिले पीले फूलों पर मधु-

मक्खियाँ गुनगुना रही हैं। गहरे आसमानी रंग के आकाश में एक चंडूल पक्षी गाता हुआ उड़ा जा रहा है। सवेरा जितना उल्लास भरा है, उतनी ही उल्लासमयी एक कुमारी दूध का भरा ठेला ढकेलती हुई शहर की ओर चली जा रही है। उस ठेले के पहियों से चूँ-चाँ की आवाज़ यकसाँ निकल रही है। बस, इसके सिवा सब कुछ नीरव है।

पील शहर में पहुँचकर मोना देखती है कि जहाज़ के खलासियों जैसी नीले रंग की पोशाक पहने लोग-बाग घर में से सड़क पर निकल रहे हैं। वे सब अपने बीवी-बच्चों और परिवार से विदा लेते हुए अन्तिम नमस्कार करते हैं और प्रसन्न-वदन स्टेशन की ओर चले जा रहे हैं।

'यह भाग दौड़ कैसी है?'—मोना एक स्त्री से पूछती है।

'तुम्हें नहीं मालूम? युद्ध आरम्भ हो गया है। आज से भरती शुरू होने लगी है। डगलस द्वीप-समूह से चार जहाज़ भरकर आदमी लाम पर जा रहे हैं।'

'युद्ध? किसके साथ?'

'किसके साथ? अरे, जर्मनों के साथ। जर्मनी ने बेल्जियम पर हमला किया है। हाथी ने सदल-बल चींटी पर चढ़ाई की है। यूरोप की दूसरी सरकारों ने नृशंस जर्मनी को शिक्षा देने बेल्जियम की मदद करने का निश्चय किया है।'

'तब तो जर्मनी में भी...'

'सब जगह...सभी जगह। फिर युद्ध का अर्थ ही क्या? अब तो स्त्रियों को भी तैयार होना चाहिए।'

× × ×

नोकालो की ओर लौटती हुई मोना ने रोबी को भी आवेश में भरा हुआ देखा।

'तुम्हें भी समाचार मिल गये?'

'अरे युद्ध तो आग है। उसे फैलते देर ही कितनी लगती है।'

'युवकों को अपनी जवानी का प्रमाण देने के लिए एक सच्चा अवसर मिला।'

'इसमें शंका ही क्या है ? मैं भी...देखता तो सही !'

रोबी की काली आँखें और चमकने लगती हैं। वह खेतों पर एक निगाह डालता है, पके हुए पौंढ़े गन्नों की ओर वह देखता है। मौसम काट लें और फिर...

एक पखवारा बीत जाता है। द्वीप पर खूब हलचल मची है। किचनर की आवाज़ यहाँ और वहाँ सुन पड़ती है—'तुम्हारे राजा और तुम्हारे देश को आज तुम्हारी आवश्यकता है।' दीवालों पर यही अक्षर हरएक जगह दीख पड़ते हैं। अख़बारों में भी यही शीर्षक छपे रहते हैं। और दूर-दूर के भागों से युवकदल इसका उत्तर देने दौड़ पड़ता है।

मोना और रोबी रात-दिन जगकर मौसम काट रहे हैं। मोना का आदेश किसी कदर रुकना जानता ही नहीं।

'हाय ! मैं पुरुष क्यों नहीं हुई ?'

'यही शुभ भावना स्थायी रहे।'

'परन्तु छोकरियाँ युद्ध में क्यों नहीं जा सकतीं ?'

उँह ! छोकरियाँ वे वहाँ क्या करेंगी ?'

मोना अपना मुँह फुला लेती है।

× × ×

फसल काटी जा चुकी है, निराई भी हो गई है। अब केवल ओसाना बाक़ी है। रोबी शहर में गया है, घर पर बाप-बेटी अकेले ही हैं। वृद्ध बेचारा गम्भीर हो गया है। उसे क्रीमिया का युद्ध और उसके परिणाम याद आते हैं।

पिता कहता है—रोबी बहुत उतावली कर रहा है।

मोना उत्तर देती है—इसमें अनोखापन क्या है !

अभी रोबी तूफ़ान की तरह घर में घुसता है।

'भर्ती हो गया। पिताजी, मोना, मैं सैनिक की हैसियत से लश्कर में भर्ती हो गया हूँ।'

मोना उसके गले लिपट गई। 'मेरा भाई मेरा वीर, बहादुर!' मोना भाई को प्यार करती है, वृद्ध चुप है। और फिर सोने के लिए चुपचाप चला जाता है।

थोड़े दिन और बीत जाते हैं। रोबी की बिदाई का दिन आ लगता है। साँझ होती है। घर के सभी व्यक्ति भोजन करने बैठे। वृद्ध सबके मध्य में स्थान ग्रहण करता है। इधर-उधर नौकर बैठते हैं। मोना परोस रही है; रोबी खाकी वर्दी पहने भीतर आता है। मोना भाई की पोशाक देखकर चकित रह जाती है—मेरा भाई इतना सुन्दर तो कभी नहीं लगता था।

'पिताजी, मोना, जाता हूँ। विदा सभी को नमस्ते।'—रोबी फ़ौजी ढङ्ग की सलाम करता हुआ उत्साह से बोला।

मोना रोबी को विदा देने बड़े दरवाज़े तक उसके साथ-साथ जाती है। लम्बे कदम रखती हुई वह उत्साह-पूर्वक बातें करती है—रोबी, मेरा वीर भाई रोबी! पर तुम कितने वीर हो यह तो तब मालूम होगा कि तुमने युद्ध में कितने जर्मनों को मौत के घाट उतारा। फिर दाँत पीसती हुई कहती है—जर्मन, बदमाश, नीच! अरे, मुझे युद्ध में क्यों नहीं ले जाते? मैं उन पापियों को कच्चे-के-कच्चे ही चबा जाऊँ।

बड़ी सड़क पर खूब कोलाहल हो रहा है। घर-घर में युवक और माता-पिता युद्ध की बातें जोर-शोर से कर रहे हैं। एक सैनिक टुकड़ी तलहटी में बसे किसी गाँव से आती, कूच-गीत गाती, बँधे-सधे क़दमों से स्टेशन की ओर जा रही है। उनकी खाकी वर्दियाँ मोना में उत्साह का तूफान भर देती हैं, फिर धीमे-धीमे वह घर में वापिस लौट आती है। लोग अपने मकानों से उस टुकड़ी को देखने सिर निकालते हैं। वातावरण चारों ओर से हर्ष-ध्वनियों से गूँज उठता है।

रोबी उस टुकड़ी में मिल जाता है। वह कर्क पैट्रिक और वृक्षों की ओट

में छिप जाता है। तब तक मोना उसकी ओर देखती रहती है। बूढ़ा बाप उस समय भारी हृदय लिये बिस्तरे में पड़ा है। ईश्वरेच्छा को कौन जान सका है ?

रोबी को बिदा हुए दो महीने बीत जाते हैं। मोना खेतीबारी का काफ़ी अच्छा प्रबन्ध करती है। रोबी की अनुपस्थिति में भी सभी काम-काज सरलता-पूर्वक चलते रहते हैं। प्रत्येक सप्ताह रोबी का एक कार्ड आता है। शुरू शुरू के पत्र काफ़ी विनोद-भरे हैं। यहाँ-वहाँ जोशीले वाक्यों की भी भर-मार रहती है। वह लिखता—'युद्ध तो मज़ेदार खेल है। युद्ध एक महान् साहस है। अब वह लाम पर भेजा जायगा।' पर बाद के पत्र छोटे और गंभीर होते जाते हैं ; परन्तु उनसे चिन्ता नहीं टपकती। थोड़े से ही समय में दैत्यों का नाश हो जायगा और वह घर लौट आयगा।

रात में ब्यालू के बाद वृद्ध पिता अँगीठी के पास बैठते हैं और एक अंग्रेज़ी पत्र सबको पढ़ सुनाते हैं। मोना उसे सुनकर भभक उठती है—इन कमबख्त जर्मनों को ईश्वर क्यों नहीं नेस्तनाबूद कर देता है। काश वह ईश्वर होती...! वृद्ध ख़ामोश ही रहता है; फिर जब खुदा के बेटे के उपदेश पढ़ने का समय होता है उससे पढ़ा नहीं जाता है। वह चुपचाप सो जाता है। भावी अगम्य है। कौन जानता है कि यह सब किस महान हेतु की प्रेरणा से हो रहा है।

सर्दी पड़ने लगती है। रातें ठण्डी और भयंकर होने लगती हैं। वृद्ध लन्दन में होनेवाले कष्टदायक समाचार पढ़ता है। जिन जर्मनों को अंग्रेज़ों ने नमक-हलाल और प्रामाणिक सेवक समझा था, वे जासूस निकले। एक ज़ेपलीन लन्दन पर उड़ता हुआ दीख पड़ा था। यद्यपि उससे लोगों की मृत्यु की कोई रिपोर्ट नहीं है, फिर भी जर्मन गोला-बारी करने से नहीं चूके होंगे।'

'सरकार सभी को क्यों नहीं जेलखाने में ठूस देती है?' मोना बोल उठती है—एक-एक को पकड़कर ! दम्भी द्रोही, खूनी !

बूढ़े ने बाइबिल खोली थी, उसे वैसी ही बन्द कर दी और सोने की तैयारी करने लगा।

'इस छोकरी का हृदय कितना कठोर है ?

२

क्रिसमस के दिन आये, वसन्त आया, धरती में बीज बोये गये, वसन्त-भर घरों में बन्द पशु और भेड़ें फिर चरने के लिए टेकरी पर चढ़ने लगीं।

परन्तु युद्ध अब भी चालू है; रोबी अभी लौटकर घर नहीं आया।

वसन्त का आह्लाद-दायक सवेरा है। पीलनगर से ठेला ढकेलती हुई मोना वापिस लौटती है। घर आ वह देखती है कि तीन आदमी उसके वृद्ध पिता के साथ खेत पर चहलक़दमी करते हुए बातचीत कर रहे हैं उनमें से एक की पोशाक किसी अफ़सर जैसी है और बाकी के दोनों आदमियों ने रेशमी टोप और हलके ओवर-कोट पहन रखे हैं।

वह बड़े दरवाज़े में घुसती है, तभी कोई चौथा आदमी टेकरी की ओर से उतरकर उनमें शामिल होता है। उसने केवल एक बन्डी पहन रखी है। उसकी बगल में बन्दूक दबी है और दो कुत्ते उसके साथ-साथ चले आ रहे हैं। मोना उस चौथे व्यक्ति को पहचानती है। वह उनका ज़मींदार है। उसके पास से ठेला ढकेलती हुई मोना सुनती है; 'परन्तु लड़ाई समाप्त होने पर क्या होगा ? युद्ध के बाद खेतों का क्या होगा ?'

ज़मींदार ने कहा—तब की चिन्ता न करो। इसे भली प्रकार से समझ लो कि जब तक जीवित हो यहीं रहोगे। तुम्हारे बाप-दादाओं ने इस ज़मीन को जोता-बोया और राबर्ट, तुम्हारे लड़के भी इसे जोतते-बोते रहेंगे।

मोना ठेला छोड़ घर में चली जाती है। जब सभी चले जाते हैं, वृद्ध भीतर आता है और रुकता-रुकता उससे सब बातें कहता है। जो व्यक्ति आये थे, उनमें एक तो स्वयं इस द्वीप का गवर्नर था। दूसरे दोनों व्यक्ति भी सरकारी कर्मचारी थे।

'मालूम पड़ता है कि सरकार तेरे विचारों से परिचित हो गई है।'

मोना ने पूछा—क्यों ?

'तू ही न कहती थी कि सभी जर्मनों को जेल में ठूँस देना चाहिए ?'

'तो इसमें नवीनता कौन-सी है ?'

'सरकार अब यही करने जा रही है।'

'क्या जर्मनों को कैद में डालने जा रही है ?'

'हाँ! वे कहीं गड़बड़ न मचायें, इसलिए उन्हें नज़र कैद की छावनियों में पहुँचाने की व्यवस्था हो रही है।'

'बिलकुल ठीक है। बदमाश, जासूसी करना चाहते हैं। परन्तु हाँ, वे राज्य-कर्मचारी यहाँ क्यों आये थे ?'

'गवर्नर ही उन्हें लाया था। उनका ख़याल है कि छावनी के लिए नोकालो से बढ़कर दूसरी और जगह नहीं है।'

मोना क्षण-भर अवाक् हो जाती है और फिर कहती है—तो जर्मन लोगों के लिए हमें अपनी जन्म-भूमि छोड़कर चला जाना होगा। हम यहाँ से निकाल दिये जायँगे क्या ?

बूढ़ा कहता है—ठीक ऐसी बात तो नहीं है। फिर जो योजना उसके सामने रखी गई थी, उसे समझाता है। वह और उनका कुटुम्ब भले ही वहीं रहें और उनकी पहाड़ी पर की गोचर-भूमि भी वैसी ही रहे, परन्तु उन्हें छावनियों को दूध देना होगा।

'अर्थात् जर्मनों को जीवित रखने के लिए हम काम करें! और उनके भाई हमारे युवकों को फ्रान्स और जर्मनी के मैदान में मारते रहें। ना यह कभी नहीं हो सकता।'

उसके पिता को चाहिए कि वह बिलकुल मना कर दे।

'बिलकुल मना कर देना।' जब तक ज़मीन का खाता ख़तम नहीं हो जाता, ज़मीन उनकी है और वे मना कर सकते हैं। कह देना गवर्नर को कि छावनी के लिए अन्य कहीं जगह तलाश करें।

बूढ़ा समझता है कि इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। युद्ध के समय सरकार जो भी माँगेगी, देना होगा।

मोना कहती है—तो सरकार भले ही खेत ले ले। हम कहीं दूसरी जगह चले जायँगे।

बूढ़ा फिर समझाता है कि हमसे ऐसे भी न हो सकेगा और यह कि मैं इस व्यवस्था को स्वीकार कर चुका हूँ।

'उन्हें मेरी तो आवश्यकता नहीं न होगी?'

'उन्हे तेरी आवश्यकता तो है ही, वे किसी स्त्री को छावनी के समीप आने देना उचित नहीं समझते, फिर भी उन्हें एक स्त्री की आवश्यकता आ पड़ी है।'

'तो वह स्त्री मैं ही क्यों हूँ?'

बूढ़ा पूछता है—तब क्या मुझे अकेला छोड़कर ही चली जायगी? मैं दिनो दिन बूढ़ा होता जा रहा हूँ और रोबी भी युद्ध में गया है...

'अच्छा पिताजी..'

मोना वहीं रहने के लिए राजी होती है। पिता की खातिर वह वहाँ रहने के लिए तैयार हो जाती है। परन्तु जर्मनों के बीच रहने और उनकी आवश्यकताओं को पूरी करने के विचार-मात्र से ही उसे घृणा होती है।

'इसकी उपेक्षा युद्ध में जाना कहीं हजार गुना अधिक अच्छा होता।'

× × × ×

पन्द्रह दिन के बाद ईंट, चूना, लकड़ी और कँटीले तार के मोटे-मोटे बण्डल जागीर की ज़मीन पर वेग-पूर्वक आने लगते हैं। सारा दिन और आधी-आधी रात तक कितने ही बढ़ई और राज़ काम करते हैं। हरे खेतों में बदसूरत सफ़ेद पत्थरों के रास्ते तैयार होते हैं। कृषि-घर से बड़े दरवाज़े तक जो शीतल हरियाली और दोनों ओर वृक्षोंवाली गली थी। उसे काटकर साफ़ किया जाता है। खिलते पुष्पोंवाली बाड़ को काट-पीटकर जहाँ खेती पर काम

करनेवाले साथियों, मजदूरों के रहने की जगह थी, घास तथा अनाज भरने की कोठरियाँ थीं, वहाँ ऊपर और नीचे डामर पोत दिया जाता है।

मोना तो देखकर स्तब्ध रह जाती है, कहाँ गया उसका हरा खेत? कहाँ गया विशाल भूमिपट और खुला मैदान? मोना उसे भयंकर जादू' कहती है।

जागीर का अधिकांश दक्षिणी भाग कँटीले तार की दुहरी दीवार से घेर दिया जाता है। इस कँटीले तार की बाड़ में से बाहर निकलने का प्रयत्न करनेवाले का रोम-रोम छिद जायगा। जंगली जानवरों को बन्द करने का मानो पिंजरा ही हो। पहले नम्बर का कम्पाउण्ड थोड़े ही दिनों में तैयार होकर काम में आने योग्य हो जायगा।

जागीर पर स्त्रियों मे अब केवल अकेली मोना ही है। बाकी की सभी मज़दूर स्त्रियों को छुट्टी दे दी गई। और उनके स्थान पर पुरुष और लड़के रखे गये हैं। पहले वहाँ लिज़ा किन्नीस नाम की एक खूबसूरत लड़की भी थी। वह सारे पील नगर को अपने इशारों पर नचा सकती थी। युद्ध में जाने से पहले रोबी भी उसकी ओर आकर्षित होने लगा था। यद्यपि रोबी चला गया था, परन्तु वह वहाँ से जाना नहीं चाहती थी। मोना उसे भी न रख सकी।

× × × ×

साँझ का समय है। मोना ने ट्रेन की सीटी की आवाज़ सुनी। स्टेशन से अन्तिम गाड़ी रवाना हो चुकी थी और उसके बाद वह 'खट-खट' की आवाज़ सुनती है, मानो सैनिक कूच कर रहे हों।

जर्मनों का पहला गिरोह आता है। मोना अपने मकान की खिड़की में से इन्हें देखती है, जैसे काले साँप चले आ रहे हों। इस तरह सभी काले रंग की पोशाक पहने एक साथ दो-दो आदमी लम्बी क़तार में चले आ रहे हैं। मोना के शरीर में कँप-कँपी छूटती है।

दूसरे दिन खिड़की में से वह ऐसे ही और अधिक जर्मनों को आते हुए देखती है। सभी आनेवालों के चेहरे चिन्ताग्रस्त हैं; उन पर संस्कारी भाव

है। गोशाला की ओर जाती हुई मोना एक पहरेदार से कहती है—देखने-भालने में तो ये बुरे नहीं लगते। उनमें के अधिकांश लोग खुशहाल थे। कोई-कोई तो मालदार भी थे। कुछेक लन्दन में व्यापारी पेढ़ियों के मालिक थे और चैन की ज़िन्दगी बसर करते थे। बूढ़ा बाप मोना से कहता है—बेचारों ने कभी ऐसा रद्दी भोजन नहीं खाया। यह उन्हें अच्छा भी नहीं लगता।

'अच्छा नहीं लगता ? शैतान कहीं के ! तो क्या इन्हें यहाँ मेहमानगिरी के लिए लाया गया है। इन बदमाशों को ऐसी खुराक़ भी क्यों दी जाय ?'

बूढ़ा शान्ति से आँखें मूँद लेता है। 'प्रभु, अपने स्त्री बालकों से विलग हुए इन बेचारे कैदियों को सद्बुद्धि दे इनके अपराध क्षमा कर।'

'तो क्या हमारे युवक जो इनके अत्याचारों का जवाब देने गये हैं, अपने स्त्री-पुत्रों को साथ ले गये हैं ? लाम पर हमारे भाइयों को जैसा खाना मिलता है, यह क्या उससे भी ख़राब है ? नालायक़ ! बदमाश कहीं के !

× × × ×

और दो सप्ताह बीत जाते हैं। जादूवाला वह गोरखधन्धा बढ़ता ही जाता है। जागीर की दाहिनी ओर दूसरे नम्बर की छावनी तैयार हो जाती है।

आज फिर मोना लोगों के चलने की 'खट्-खट्' की आवाज़ सुनती है। जर्मनों की दूसरी टुकड़ी पहुँची है। पहले आनेवालों की अपेक्षा ये अधिक बुरे दीख पड़ते हैं। गन्दे और भिखमंगों जैसे ! उनमें से अधिकांश लिवरपुल और ग्लासगो बन्दरगाह में या समुद्र में फिरते जहाजों पर से पकड़कर लाये गये खलासी थे। ये सब अकड़ते हुए चले आ रहे थे या वैसे चलने की कोशिश करते। हँसते, गाते और जोर-जोर से चिल्लाते हुए वे लोग भीतर प्रवेश करते हैं।

मोना दरवाज़े में खड़ी रह उन्हें देखती। वे भी मोना की ओर घूर-घूरकर देखते हैं और किसी अपरिचित ज़बान में उसके बारे में कुछ कहते हैं, फिर चुम्बन लेते हों ; इस तरह होठों को पुचकारते हैं।

मोना के रोम-रोम में आग लग जाती है।

'नामर्द कुत्ते...!'

वृद्ध कहता है—बेटी, तू अतीव कठोर है।

× × × ×

थोड़े दिन बाद रोबी का पत्र आता है। अब वह लेफ्टिनेन्ट के पद पर है और उसमें उत्साह भी ख़ूब है। अब तक उसने बुरी से बुरी परिस्थिति का भी सामना किया है; परन्तु अब बाजी पलटनेवाली है। उसे गुप्त समाचार मिले हैं कि एक ज़ोरदार हमला होगा और वह पहली बार फ्रंट पर भेजा जायगा। वह बहुत उत्सुक है। ज़ोर-शोर से तैयारियाँ की जा रही हैं। विस्तृत समाचार थोड़े ही दिनों में प्रकट किये जायँगे।

'इसलिए, पिताजी, प्रणाम! और युद्ध में से विजयी हो लौट सकूँ, ऐसं आशीर्वाद दीजिए। मोना से कह दीजिए कि इस पत्र का थोड़ा-सा अंश मैंने पिछली रात फ़ौजी अधिकारियों की सभा में सुनाया था। जिसे सब सुन एक साथ कह उठे थे—गजब की लड़की है। जोश इसे कहते हैं! फिर एक मेजर ने कहा—यदि अपने पास केवल एक हज़ार युवक हों तो फिर एक महीने से अधिक दिन युद्ध न करना पड़े।

रोबी के पत्र के बाद एक सप्ताह बीत जाता है। विजय के समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। दुश्मन भाग खड़े होते हैं और उनकी हार निश्चित है।

वृद्ध अपनी आदत के अनुसार अधिकांश मौन ही रहता है। परन्तु डाकिया के आने के समय वह बाहर रास्ते पर आ खड़ा होता है। जब समुद्र में सूर्य अस्त होता दीखता है, वह अपनी चुरुट से धुआँ निकालता खड़ा रहता है।

रोबी का दूसरा पत्र अभी नहीं आया है। आज मोना डाकिये को मुर्दे की तरह छावनी में प्रवेश करते देखती है। उसके हाथ में पत्र है; परन्तु सिर उसका झुका हुआ है। उसके हृदय में जैसे झगड़ा हो रहा है। डाकिया बिना कुछ बोले ही नीरव वृद्ध के हाथ में पत्र दे देता है और चला जाता है।

बूढ़ा लिफ़ाफ़े को इधर-उधर से पलटकर देखता है। लिफ़ाफ़ा बड़ा-सा है और उस पर कुछ छपा भी है। अन्त में मन को दृढ़ बनाकर लिफ़ाफ़ा फाड़ता है। काँपते हाथों से पत्र बाहर निकाल उसे टुकुर-टुकुर देखता है। वह पढ़ने का प्रयत्न करता है। परन्तु उससे पढ़ा नहीं जाता। मोना उसके पास आती है। बूढ़ा टाइप किया हुआ पत्र मोना को दे देता है।

पास के वृक्ष का सहारा लेता हुआ पिता कहता है—बेटी, ज़रा पढ़ तो! मोना पढ़ती है: 'युद्ध-मंत्री शोक के साथ सूचित करते हैं कि...

वह रुक जाती है। बूढ़ा सब स्पष्ट रूप में समझ जाता है।

रोबी मारा गया।

वृद्ध लड़खड़ाकर गिर पड़ता है, मानो उस पर बिजली गिर पड़ी हो। मोना के मुँह से चीख निकल जाती है। खेत पर काम करनेवाले नौकर दौड़े आते हैं। सब मिलकर बूढ़े को घर में ले जाते हैं। उसे बिस्तरे पर सुलाया जाता है। समीप ही रहनेवाला पहले कंपाउण्ड का एक अंग्रेज़ डाक्टर आता है।

वृद्ध को आघात तो अवश्य लगा है; परन्तु डर जैसी कोई बात नहीं है। उसे बिस्तरे में ही और शान्त पड़ा रहना चाहिए। उसकी बीमारी का वास्तविक इलाज है कि उसे ऐसा कोई भी पत्र या अख़बार न दिया जाय जो उसे अशान्त कर दे।

मोना की आँखों में आँसू नहीं हैं। उसकी आँखें चमकती हैं और साँस तेज़ी से चलने लगती है। उसके मन में जर्मनों के लिए घृणा के भाव यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि वह एक भी शब्द नहीं बोल सकती। उन्होंने उसके भाई को मार डाला और पिता को चोट पहुँचाई, ईश्वर अवश्य उसका बदला लेगा। कैसर से ही नहीं, परन्तु प्रत्येक जर्मन से ईश्वर इसका पूरा-पूरा बदला लेगा।

यदि ऐसा न हुआ, ईश्वर ने बदला न लिया तो समझना चाहिए कि संसार में ईश्वर है ही नहीं।

३

और तीन महीने बीत जाते हैं। छावनी में कैदियों की संख्या बढ़ती ही जाती है। जेलर, दूसरे अधिकारी और सिपाही मिलाकर लगभग दो हज़ार आदमी हैं। सभ्य नज़रबन्दियों की संख्या तो पचास हज़ार से भी अधिक होगी। जहाँ हरे और खुशनुमा खेत थे वहाँ अब मकान खड़े हो गये हैं। बाड़ के बीच में सूखी धरती, तंबू, कोठरियाँ, और बैरक मानो खाने दौड़ते हैं। सभी पर जैसे शैतान की काली छाया फिर गई है। जेलर के घेरे से अलग कृषि-घर और दूसरे लकड़ी के घर हैं। लकड़ी के घरों में गाय, भेड़ और बकरियाँ रखी जाती हैं। गोशाला के समीप मज़दूर साथियों के रहने का मकान है।

सत्ताईस हज़ार पुरुषों में मोना ही अकेली एक स्त्री है। कितने ही जेल-अधिकारी उसे 'नोकाली की माता' कहते हैं। भाई की मृत्यु और पिता को लगी चोट से होनेवाले दुःख का प्रथम आवेग कम हो गया है। उसका काम पहले ही की तरह नियमानुकूल होता है। गोशाला के जीवों को तो पालना-पोसना आवश्यक है ही। जर्मनों के आने से पहले जब वह नोकाली नहीं छोड़ सकी तो इस समय जब कि उसका पिता शय्या-शायी है, वह कैसे जा सकती है।

यथासम्भव वह अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय पिता के पास व्यतीत करने का प्रयत्न करती है। रात होते ही सबको ब्यालू करा वह उसके पास पुस्तकें सुनाने बैठ जाती है। बाप की इच्छानुसार अब वह केवल बाइबिल ही पढ़ती है और भजन गाती है। परन्तु मनोविनोद के लिए कुछ भी नहीं पढ़ा जाता है। बूढ़ा पहले से बहुत अधिक बदल गया है। उसके अन्तर में कड़ुआहट भर गई है और हृदय एकदम बदल गया है। जब वह अकेला पड़ा रहता है, तो पापियों को हुई सज़ा का मन ही मन ध्यान करता है।

मोना सत्य ही कहा करती थी कि ये लोग नर्क के ही योग्य हैं। इनके लिए कोई भी सज़ा बुरी नहीं।

क्रिसमस आता है—और फिर दूसरा क्रिसमस ; वसन्त आता है और फिर दूसरा वसन्त। एकरस जड़ता में व्यतीत होता छावनी का जीवन मोना देखती है। पींजड़े में बन्द जानवरों की भाँति क़ैदी सवेरे उठते हैं। इधर-उधर इकट्ठा होते हैं, निश्वासें लेते हुए दिन बिताते हैं और रात के अँधेरे में सो जाते हैं। अन्धकार से फ़ायदा उठा कहीं वे भाग न जायँ, इसलिए दूर-दूर तक प्रकाश का प्रबन्ध किया गया है। कभी-कभी मोना सुनती है कि क़ैदी विद्रोह करने पर उतारू होते हैं, पर उसे निर्दयता-पूर्वक दबा दिया जाता है। पहले कम्पाउण्ड के क़ैदियों ने एक बार भोजन के समय उपद्रव करने की चेष्टा की। 'ऐसा भोजन तो पशु भी नहीं खायेंगे।' कह उन्होंने थालियाँ फेकना शुरू कीं, पर वे गोली से उड़ा दिये गये। बाक़ी सभी क़ैदियों ने चुपचाप भोजन कर लिया। मोना के हृदय में लेश-मात्र करुणा जाग्रत नहीं होती। वह कहती है—इन लोगों के लिए ऐसी ही सज़ा ठीक है।

तीसरे कम्पाउण्ड के क़ैदियों के बारे में एक बार सिपाही जो बात-चीत करते थे, उसे सुन मोना कान में अँगुलियाँ डाल लेती है। सभी कैदी असभ्य दुर्गुणों के शिकार हैं। मोना बड़े चाव से सुनती है कि इस प्रकार के दुर्गुणों के लिए उन्हें किस प्रकार की सजा दी जाती है। काम से जब कभी उसे इन कम्पाउण्ड के पास से निकलना होता है, तब उसे लगता है जैसे वे कैदी इसकी ओर बुरी दृष्टि से देख 'ही-ही' कर हँसते हैं। 'साले बन्दर...!' वह पसीने-पसीने हो जाती है। मोना को लगता है जैसे वे उसके कपड़े खींचकर फाड़ डालेंगे...'जंगली-शोहदे !'

आती गर्मियों के एक मज़ेदार सवेरे मोना समुद्र की ओर से एक बन्दूक की आवाज़ सुन जाग पड़ती है। बाहर निकलकर वह बन्दरगाह में एक फ़ौजी जहाज़ को लंगर डालते देखती है। फिर अधिकारियों की भाग-दौड़ की आवाज़ सुनती है। लन्दन से गृह-मंत्री छावनी देखने आये हैं और जेल अधिकारियों ने गवर्नर को बुला भेजा है।

उन तीनों बड़े अधिकारियों को जेल का चक्कर लगाते हुए देखती है।

फिर कृषिघर के समीप से निकल उन्हें जेल-अधिकारी के यहाँ भोजन करने जाते देखती है। मोना रास्ते की ओर खुलनेवाली रसोईघर की खिड़की में खड़ी हो वहाँ से किसी की क्रोधभरी वाणी सुनती है।

'तब आप दूसरी और क्या आशा रखते हैं? जीते-जागते आदमी को कुत्ते की तरह बन्द रख आप लोग यह आशा रखते हैं कि वह सच्चरित्र बने। वे मुर्दे तो नहीं कि गूँगे, बहरे हो बैठे रहें। अब यदि उनमें दुर्गुण घर करें तो क्या आश्चर्य है? और फिर यह कहाँ का न्याय है कि उन्हें इसी लिए 'नीच' कहा जाय! यदि इसका कोई उपाय है तो वह काम है! केवल काम ही!'

इसके बाद थोड़े ही दिनों में ईंटें आने लगती हैं और एक कारख़ाना बनने लगता है। एक महीना बीतते न बीतते उसमें से काटने, पीटने और कुछ बनाने की आवाज़ें आने लगती हैं। कैदियों को काम मिल गया है। देख-सुन मोना हँसती है—ये पशु कभी मनुष्य हो सकते हैं! असंभव, कभी नहीं।

छावनी के बाहर धान के पके खेत लहराने लगे। लुनाई के दिन आ गये हैं; परन्तु लुनाई कर सके या मजदूरी कर सके। ऐसा तो प्रत्येक आदमी युद्ध पर चला गया है। किसान निसासें डालते हैं। 'हाय, पका धान यों ही धरती पर बिखर सड़ जायगा। अकेले हाथों काम कैसे ख़तम होगा?'

एक रात समाचार मिलते हैं कि जिन कैदियों का व्यवहार अच्छा होगा उन्हें समीप के खेत में काम करने भेजा जायगा और दूसरे दिन सबेरे तो मोना कई कैदियों को बाहर निकलते देखती भी है।

'अरे, इन बदमाशों का विश्वास ही क्या? इससे तो उलटे तकलीफ़ होगी।'

परन्तु एक महीने में तो दूसरी ही विपत्ति आ खड़ी हुई। कैदियों के नाम जो पत्र आते, अधिकारी उनकी बराबर जाँच-पड़ताल करते और मंजूर होने पर ही वे क़ैदियों को दिये जाते थे। अधिकांश पत्र तो उनके देश-स्थित

मित्रों के ही आते थे ; परन्तु इधर तो कितनों ही के नाम अंग्रेज़ किसानों की लड़कियों के प्रेम-पत्र आने लगे। ये वे लड़कियाँ थीं, जिन्होंने खेतों में काम करते समय जर्मन कैदियों के साथ मित्रता की थी। एक छोकड़ी ने तो अपने जर्मन-प्रेमी को लिखा था कि उसे एक इस प्रकार की वेदना होने लगी है, जिसके विषय में वह कुछ भी नहीं जानती और अब उसकी मालकिन उसे काम पर नहीं रखेगी। यह लड़की लिज़ा किन्नीस थी। नाम सुनकर मोना ने मारे क्रोध के अपने होठ काट डाले।

उसके क्रोध का पार न था। लिज़ा किन्नीस का भाई भी युद्ध में गया था। वेश्याएँ कहीं की। जब इनके भाई इनके लिए और अपने देश के लिए युद्ध में लड़ने गये हैं, वहाँ लड़ते और मरते हैं, तब ये छोकरियाँ जर्मन भिखारियों की बाहों में समाती हैं। बस, इन कुलटाओं को तो तोप के मुँह उड़ा देना चाहिए।

'नहीं, यह भी ठीक नहीं। पहले तो इन्हें कोड़े मारने चाहिए यदि मेरे हाथों में सत्ता हो तो मैं इन्हें भरे बाज़ार में कोड़े मारते-मारते इनकी चमड़ी ही उधेड़ दूँ।'

मोना के हृदय में बिलकुल दया नहीं है। वह नहीं समझ पाती कि जर्मन कैदियों से अधिक से अधिक घृणा कैसे की जाय। उनके चेहरे देखते ही उसे कँपकँपी आती है और उनकी आवाज़ सुन वह अपने कान बन्द कर लेती है। फिर भी पिता की ख़ातिर उसे वहीं रहना पड़ता है और साँझ-सवेरे कैदियों को दूध भी देना पड़ता है।

× × ×

वर्ष के अन्तिम दिन हैं। सुबह सात बजे वह दूध के डिब्बे भरती है। कैदी उन्हें लेने आते हैं। इन सब के चेहरे कैसे हैं! मानो चेहरे पर कालिख पोत दी गई हो। वे उसे सलाम करते हैं ; परन्तु वह तो सामने तक नहीं देखती। जब सभी लौट गये तो वह पाती है कि तीसरे कम्पाउन्डवालों का डिब्बा अभी गो-शाला के पास जैसा का तैसा रखा हुआ है। यह डिब्बा

खाँसते हुए और ऊँघते हुए सबसे अन्त में आनेवाले लड़के का था। मोना जाने के लिए पीठ फेरती है कि आवाज़ आती है :—यह क्या मेरे लिए है ?

वह चौंक उठती है। उस आवाज़ में 'कुछ' ऐसी बात है जो मोना को आकर्षित कर लेती है। वह आवाज़ मोटी और कर्कश न थी, प्रत्युत मीठी और गम्भीर थी। एक छन उसे लगता है कि यह आवाज़ रोबी की है।

वह सहज भाव से पीछे की ओर मुड़कर देखती है। यह युवक तो कोई दूसरा ही है। मोना ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। कोई तीसेक वर्ष की उम्र होगी। लम्बी, पतली और सीधी देह, पतले केश और चमकती आँखें, भावुकतामय भरावदार चेहरा, क्या यह युवक जर्मन हो सकता है ?

क्षण-भर चुप रह मोना पूछती है—क्या तुम कैदी हो ?

'जी हाँ! जो आदमी नित्यप्रति आता था, आज सुबह उसकी लहूवाली नस टूट गई है और वह अस्पताल में रखा गया है, उसके बदले में मुझे आना पड़ा है।'

'तुम्हारा नाम !'

'ऑस्कर।'

'ऑस्कर...?'

'ऑस्कर हेईन।'

'तीसरे कम्पाउण्ड में हो ?'

'जी हाँ।'

थोड़ी देर मोना उसकी ओर टकटकी बाँध देखती रहती है, फिर जैसे एकदम कुछ याद हो आया हो। कहती है—अच्छा ; यह डिब्बा तुम्हारा है। उठाकर चलते बनो। याद रखो, तुम कैदी हो, तुम्हें मेरे साथ बातचीत करने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

'जी, कृतज्ञ हूँ'—कह ऑस्कर अपना टोप उतार सलाम करता है।

वह संत्रियों के आगे-आगे चला जाता है। मोना दरवाजे में से और फिर गो-शाला की खिड़की में से जाते हुए ऑस्कर की पीठ की ओर देखती ही रहती है।

आज जाने क्यों सारा दिन काम करते समय भी उसका मन उदास है। थोड़ी-सी भूल होने से ही नौकरों को डाँट देती है। रात को ब्यालू होने के बाद जब पिता पढ़ने के लिए नीचे बुलाता है तो जवाब आता है। बाबूजी, आज नहीं। सिर दर्द कर रहा है।

अँगीठी के आगे वह अकेली बैठी रहती है। जाने किस विचार में बैठे ही सवेरा हो जाता है!

४

एक और महीना बीत जाता है। मोना के भीतर द्वन्द्व मचा है। कोई चोर उसके मन में आ पैठा है। उसका विरोध करने में उसे प्रति-दिन बहुत-ज़ोर लगाना पड़ता है।

यह असंभव है। यह हो कैसे सकता है! यह भूठ है। दोष मेरा ही है।—वह विचारने लगती।

अपने मन के चोर से बचने के लिए अब वह अपना ज़्यादातर समय पिता के पास ही व्यतीत करती है। बूढ़ा भी अब जर्मनों से घृणा करने लगा है। जिन्होंने उसके एकाकी पुत्र को मार डाला, उन्हें वह कभी क्षमा नहीं करेगा।

'प्रभु की नाशकारी शक्ति जाग्रत हो और शत्रु नष्ट हो जायँ! शैतान की अभिलाषा, ओ प्रभु पूरी न होने पाये। धधकते अङ्गारे उन पर बरसाना! उनके शरीर सड़ जायँ और कीड़ों से बिल-बिला उठें! भयंकर रौरव नर्क में वे डाले जायँ और कभी उनका उद्धार न हो।'

अपने कमरे में बैठी मोना बूढ़े बाप के शब्द सुनती है। दोनों कमरों के बीच केवल एक पतली-सी दीवार है। वृद्ध के शब्दों के साथ वह अपनी आन्तरिक इच्छा का समावेश करना चाहती है; परन्तु उसके मन में हठात् ऐसे भाव उठते हैं—नहीं, नहीं! ऐसी प्रार्थना योग्य नहीं! यह बहुत ही

क्रूर है। बाइबिल में डेविड ने ऐसी प्रार्थना की है, परन्तु वह तो सज्जन नहीं दुष्ट था।

इससे बचने वह कैदियों के प्रति अधिक कठोर हो मन को सान्त्वना देने का प्रयत्न करती है। सब लोगों के साथ ऑस्कर जब गोशाला में आता है तो वह उसके सामने तक नहीं देखती। ऑस्कर जब कभी उससे बोलने का प्रयत्न करता है तो वह उसे दुत्कार देती है; अथवा वह जो बोलता है उसे न सुनने का प्रयत्न करती है। परन्तु एक दिन उसे सुनना पड़ता है—'लुड-विग मर गया।'

'कौन-सा लुडविग ?'

जिसके बदले में दूध लेने आता हूँ।'

'वह जिसे अनिद्रा हो गई थी!'

'हाँ, रात ही मर गया। कल उसे दफ़नायेंगे। बाईस वर्ष का ही था। अभी तो मूछों की रेख तक न फूटी थी। अपनी मा का इकलौता बेटा था। मा भी बेचारी विधवा थी। मुझे ही उसे यह दुःखद समाचार लिखने पड़ेंगे। समाचार पढ़ते ही उसका हृदय टूट जायगा।'

मोना के कण्ठ में जाने क्या होने लगता है। उसकी आँखों की कोर आँसू आते हैं; परन्तु अपनी पूरी ताक़त लगा वह बोलती है—

'हाँ, पर वही तो अपनी मा का इकलौता नहीं है। युद्ध छेड़नेवालों को इसका सोच-विचार पहले से ही कर लेना चाहिए था।'

ऑस्कर उसके इन हृदयहीन शब्दों को सुनता रहता है और फिर बिना कुछ बोले ही चला जाता है। मोना को ख़याल आता है कि वह उसके पीछे ही देखती रही है। वह उसी समय चेहरा घुमा लेती है और उसके मुँह से अनायास निकल पड़ता है—हे ईश्वर! उसे लगता है कि अपने हाथों गला काट लेना इससे कहीं अच्छा है।

ऑस्कर तो नियमानुसार रोज़ ही आता है। एक सप्ताह बाद वह अपने साथ एक पेटी लेकर आता है। गोशाला के दरवाज़े की ओर वह उस पेटी

को रख देता है। लुडविग की मा ने यह पेटी भेजी है। इसमें नकली फूलों-वाली काँच की एक फूलदानी है। जर्मनों में मरनेवाले की क़ब्र के पास ऐसी फूलदानी रखने की प्रथा है।

मोना वहीं खड़ी है।

पेटी का ढँकना खोल वह फूलदानी और उसके साथ का लेख मोना को बताता है।

'लुडविग की कब्र के पास इसे रख आने के लिए उसकी मा ने मुझे लिखा है। परन्तु उसे क्या मालूम कि हम बाहर जा ही नहीं सकते हैं।'

मोना पेटी की ओर झुकती है। लेख जर्मन में था।

'यह लेख क्या है?'

'मा के शाश्वत प्रेम सहित...'

मोना को लगता है जैसे किसी ने उसकी छाती में छुरा भोंक दिया हो। पर वह सीधी खड़ी हो कहती है—मेरा इससे क्या सम्बन्ध? इसे यहाँ से उठा जाओ।

ऑस्कर चला जाता है, परन्तु पेटी वहीं छोड़ जाता है।

मोना काम में व्यस्त हो जाती है। वह पेटी को भूल जाने का प्रयत्न करती है। सारा दिन वह प्रयत्न करती रहती है। परन्तु पेटी उसकी आँखों आगे रहती है। और साँझ को सब काम समाप्त कर वह क्रोध में भर उस पेटी को उठा लेती है। फिर उसे धीरे से कोट के नीचे छिपा छावनी के बड़े दरवाज़े की ओर चल देती है।

पेटी की तरफ कभी उसके मन में कोमल भाव जाग्रत् होते हैं; परन्तु फर मन उग्र हो कह उठता है—क्या इसी लिए मैं इसे क़ब्र पर रखने जाती हूँ? मैं तो इसे जैसे बने तैसे अपनी आँखों से दूर करने जा रही हूँ। कर्क पेट्रिक की ओर जाती हुई वह इसी तरह के तर्क-वितर्क करती है।

जगह ढूँढने में उसे कठिनाई नहीं होती। छावनी बनने के बाद से आज कत जितने जर्मन मरे, यहीं कब्र में गाड़े गये। ज़मीन के इसी छोटे-से टुकड़े

पर सबकी क़ब्रें बनी हैं। कब्रों पर सफ़ेद पत्थर की तख्तियाँ लगाई गई हैं। और उन पर विदेशी नाम खोदे गये हैं। अन्तिम कब्र के पास वह फूलदानी रखती है और पेटी से अपने को मुक्त करती है।

'नहीं नहीं, इसमें दोष ही क्या! आदमी का ही तो यह काम है!'

वह कितना ही प्रयत्न करती है, कितने ही हाथ-पाँव पछाड़ती है; परन्तु अपने मन में उस जर्मन युवक और उसकी आँसू गिराती मा को दूर हटा नहीं पाती।

× × ×

मोना के कान घोड़े की टापों की आवाज़ सुनते हैं और एक सवार उसके सामने आ खड़ा होता है। वह तो जेलर है। वह मोना के साथ बातें करने लगता है। साँझ को भोजन करने से पहले घोड़े पर चढ़ यों घूम आने की उसकी आदत है।

मोना के स्वास्थ्य-समाचार पूछ वह स्वयं ही जो कुछ कहने आया था, उसे कहने की शुरूआत करता है।

'क्या तुम्हीं लुडविग की क़ब्र पर फूलदानी रख आई थी?'

मोना का हृदय धड़कने लगता है; परन्तु वह अपनी हिम्मत बटोर सच ही कहती है—जी हाँ!

अधिकारी गम्भीर हो जाता है। मोना के प्रति उसके हृदय में जो प्रेम है, उसके वशीभूत हो वह मृदु स्वर में कहता है—देखो बेटी, हमारे जैसों के हृदय दया से ओत-प्रोत तो होते ही हैं, प्रत्येक के हृदय में दया होना भी चाहिए और यह स्वाभाविक भी है कि इन कैदियों में से किसी के प्रति तुम्हें दया की अनुभूति भी हो; परन्तु बेटी, यदि मुझे बूढ़े की सलाह मानने योग्य हो तो यहीं से रुक जाना।

मोना उसकी सलाह मानने की प्राणप्रण से चेष्टा करती है; पर उस प्रयत्न में उसका हृदय फटा जाता है, उसमें से ख़ून टपकने लगता है। वह पिता के पास ही बैठी रहती है, परन्तु उससे भी शान्ति नहीं मिलती।

वृद्ध का स्वास्थ्य अब सुधर रहा है। कुर्सी में बैठ सकने जितनी शक्ति उसमें आने लगी है। अड़ोस-पड़ोस के किसानों से भी अब वह बिना किसी भय के मिल सकता है।

परन्तु एक दिन एक मेक्स किसान कहता है—जर्मनों की एक सबमेरीन ने हमारा एक बड़ा-सा जहाज डुबो दिया, जिसमें हज़ारों आदमी डूब मरे।

बूढ़ा यह सुनकर जोश में आ उछल पड़ता है—अरे कुकर्मियो! शैतानो! क्यों ईश्वर इन्हें नष्ट नहीं कर डालता! उस सबमेरीन के कप्तान की नींद हराम हो जाय! क़यामत तक उसे शान्ति न मिले। डूबनेवालों का आर्तनाद उसे पागल बना दे और अन्त में उसे रौरव नरक में गिरना पड़े।

मोना ने चुप रहने का असीम प्रयत्न किया, पर उसके मुँह से निकल ही पड़ा—पिताजी, शान्त हो जाइए। डाक्टर ने क्या कहा था?

बूढ़ा चुप हो जाता है।

'किसी को भी नरक में पड़ने का शाप देना एक भले ईसाई का काम तो नहीं है।'—धीमे-धीमे इतना और कह वह चुप हो जाती है।

परन्तु बोलने के बाद वह स्वयं ही अपने शब्दों से शर्म अनुभव करती है। वहाँ से उठकर अपनी कोठरी में भाग जाती है। उसका विश्वास है कि वह झूठ तो नहीं बोली, पर उसका ईसाईपन तो दंभ ही है।

'ओ प्रभु, मेरी रक्षा कर! मुझे बचा! किसी तरह मुझे बचा।' जर्मनों को तो धिक्कारना ही चाहिए। उन्हें तो कड़ा-से-कड़ा दण्ड मिलना चाहिए। जर्मनों के प्रति उसकी ऐसी ही भावना होनी चाहिए; परन्तु इधर कुछ दिनों से वह ऐसी इच्छा नहीं कर सकती। और इस विषम परिस्थिति में से अपने आपको उबारने वह परमेश्वर से प्रार्थना करती है।

× × ×

गर्मी के दिन थे। एक दिन सवेरे जेल-अधिकारी मोना के पिता को बुलाते हैं। वह उसे ऊपर ले जाती है। अधिकारी चमड़े का छोटा-सा बटुआ खोलता है और उसमें से एक तमगा निकालता है।

बूढ़े ने पूछा—यह क्या है ?

'विक्टोरिया क्रॉस है भाई ! तुम्हारे बेटे ने युद्ध में जो बहादुरी दिखाई थी, उसके सम्मानार्थ हमारे राजा ने यह भिजवाया है।'

वृद्ध गीली आँखों को पोंछ डालता है और कहता है—पर अब इसे पहिननेवाला है ही कौन ?

'मैं बताऊँ'—अधिकारी बोला—तुम्हारी लड़की क्यों न पहने ? हर्ज ही क्या है ?'

'बिलकुल ठीक, जरूर पहनूँगी।'—कहकर मोना उसे झपट लेती है और अपनी छाती पर लटका भी लेती है।

दूसरे दिन अपनी छाती पर तमगा लटकाये हुए वह अभिमान से चलती है। ऑस्कर आता है और वह बार-बार उसे देखती है। आस्कर भी उसे देखता है। यह क्या है ? कहाँ से मिला ? आदि पूछता है। ऊँचा सिर किये दृढ़ आवाज़ में वह रोबी के पराक्रम सुनाती है।

सुनकर ऑस्कर जवाब में कहता है—तब तो तुम्हारा भाई बहुत ही अच्छा रहा होगा।

मोना चुप हो जाती है। उसका अभिमान और उसकी दृढ़ता ग़ायब हो जाती है।

× × ×

अंग्रेज़ी अखबार तो आते ही रहते हैं। एक साँझ किसी अख़बार में वह जर्मन के कुकृत्यों के साथ एक अंग्रेज़ पत्र का जो उसने अपने कुटुम्बियों को लिखा था, पढ़ती है। उस पत्र में दुश्मनों की उदारता का वर्णन था। वह अंग्रेज़ पत्र-लेखक बेल्जियम में किसी गोलाबारी में घायल होकर रणक्षेत्र में मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। रात में अचानक उसने दूर पर दीपक का क्षीण प्रकाश देखा। आधे मील तक पेट के बल घसीटता हुआ वह एक किसान की झोंपड़ी में पहुँचा ; वह किसान जर्मन था।

परन्तु सभी जर्मन बुरे नहीं होते। यह किसान सात्त्विक विचारों और

शुद्ध हृदयवाला था। उस समय उसके अगले बरामदे में विजयोन्मत्त जर्मन अफ़सर शराब पीते और ऊलजलूल बकते हुए पड़े थे। उस वीर किसान ने अपने जीवन को संकट में डाल और सबकी निगाहों से बचा उस अंग्रेज़ सिपाही को अपने घर में छिपा लिया। सारी रात उसने उसकी सेवा-सुश्रूषा की और सवेरे चालाकी से उसे भाग जाने दिया।

किसी अस्पष्ट भावुकता और ऑस्कर के विचारों से प्रेरित हो मोना वह पत्र अपने पिता को सुनाने गई।

वह कहती है—सभी जातियों और राष्ट्रों में बुरे आदमी हैं तो भले आदमी भी हैं। क्या वह जर्मन किसान भला नहीं था?

सुनकर उसके पिता का चेहरा कठोर हो जाता है और गुस्से में उसके मुँह से निकल पड़ता है—

भला? कौन जानता है कि वह उसी लड़के का पिता, हाँ जिसने तेरे भाई की छाती में गोली मारी।

मोना के हाथ से अख़बार गिर पड़ता है। वह भागकर चली जाती है। टूटते स्वर में वृद्ध कहता है—यह छोकरी, अब पहले जितनी कठोर नहीं रही! यह बदल कैसे गई? इसे हो क्या गया?

५

एक दिन सवेरे मोना कुछ सुनती है। उसके अन्तर में छिपे बैठे शत्रु से वह मुकाबला कर सके, ऐसी वह बात है।

छावनी में पाँच हाते थे। चौथे नम्बर का हाता पहाड़ी की बग़ल में था। उस हाते का एक क़ैदी अपनी तैयार की हुई गुप्त सुरंग से भागने का प्रयत्न करता हुआ पकड़ा जाता है। जेल-अफ़सर को यह मुक़दमा सौंपा जाता है। पील की सिविलकोर्ट में मुक़दमा चलता है। जर्मनों की हराम-ख़ोरी का इससे विशेष पुरावा और क्या दिया जाय?

मोना भागती हुई कोर्ट जाती है। पुलिस, चपरासी और नागरिक कोर्ट में ठँसे हुए हैं। गवर्नर भी आया है और वह बड़े वकीलों की बेञ्च पर बैठा है। कैदी के दोनों ओर सिपाही खड़े हैं। मोना उसे देखते ही चौंक पड़ती है। उसकी धारणा थी कि कैदी भयंकर चेहरेवाला और महादुष्ट होगा। परन्तु यह तो पीला, पतला और खूबसूरत जवान था। उसकी विह्वल आँखों में बुखार की खुमारी थी।

स्त्रियों के कप्तान और कैदियों के बयान से उसका अपराध साबित होता है। दो महीने से वह अपने बिस्तरे के नीचे से सुरंग खोद रहा था। वह सुरंग छावनी के कँटीले तारों के घिराव से बाहर खोदी गई थी। जब सभी कैदी सो जाते, तब वह अपना काम करता। खुदाई में निकली मिट्टी वह छावनी के अन्दरवाले गिर्जा की खुली जमीन में डाल देता था। भागनेवाली रात को ठीक अन्तिम क्षण में एक सिपाही ने उसे पकड़ लिया। सिपाही को समाचार देनेवाला अपराधी का पड़ोसी एक दूसरा जर्मन कैदी ही था।

बीमार जैसे इस आदमी को जेल में आराम की ज़िन्दगी क्यों अच्छी न लगी? क्यों दो-दो महीने तक वह जागता रहा? क्यों उसने इतना परिश्रम किया? आदि विचारों से ही कैदी के प्रति मोना के विचार बदल गये थे; परन्तु जब मर्मवेधक वाणी में और बीच में अटकते और काँपते स्वर में कैदी ने गवर्नर के प्रश्नों का उत्तर दिया तो मोना अपने आँसू न रोक सकी। उसकी छाती पर लटकता तमग़ा भी भींग गया।

वह नाई था। एक अंग्रेज़ स्त्री के साथ उसका विवाह हुआ था, दो बालक भी थे। विवाह के बाद उसका विचार एक राष्ट्रीय पत्र निकालने का था; परन्तु पैसे इकट्ठे होते ही उसकी पत्नी बीमार पड़ी। यह पहली प्रसूति का समय था, इसलिए समुद्र किनारे ले जाना पड़ा। फिर उसने एक दूकान की, जिसमें बची हुई जमा-पूँजी स्वाहा हो गई।

गवर्नर ने टोंका—समय बर्बाद मत करो। ख़ास विषय पर आओ!

कैदी अपनी बात आगे चलाता है।

जब वह छावनी में आया तो उसकी पत्नी प्रतिसप्ताह पत्र लिखती और अपने तथा बच्चों के कुशल-समाचार देती रहती थी। उसकी लड़की गैर-सरकारी पाठशाला में जाने लगी थी; शिक्षक जब उससे पूछते—तेरा पिता कहाँ हैं? तो वह जवाब देती—युद्ध में। यही उसकी माँ ने सिखाया था; परन्तु अन्त में सच्ची बात प्रकट हो गई। तब दूसरे विद्यार्थियों के माता-पिताओं ने उसे स्कूल से निकाल बाहर करने की माँग की। अब वह किसी भी पाठशाला में न जा सकती थी। सड़कों पर भटकना ही उसके पल्ले पड़ा।

गवर्नर चीखता है—जल्दी ख़तम कर। तेरे भागने के साथ इसका क्या सम्बन्ध है। मोना का मन गवर्नर को एक चाँटा मारने का हो आता है।

'महाशय, इतने से ही समाप्त नहीं हो सकता।'

बड़ा वकील कहता है—हाँ, आगे कहो।

उसके बाद मुझे मेरी पत्नी के पत्र मिलना बन्द हो गये। परन्तु मेरे एक पड़ोसी ने पत्र में लिखा...

वकील—उसमें क्या लिखा था?

कैदी ने कहना शुरू किया। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें अमानुषी तेज से चमक रही थीं।

एक दूसरा जर्मन कैदी मेरे साथ था जिसे किन्हीं कारणों से छोड़ दिया गया। वह नम्बर एक का बदमाश था। उसने मेरी पत्नी को फुसलाया। मेरे निराधार स्त्री-बालक आश्रय तो खोज ही रहे थे। इस समाचार ने मेरे मस्तिष्क में उथल-पुथल मचा दी। मुझे इच्छा हुई कि उस दुष्ट का ख़ून कर डालूँ। और इसी लिए मैंने जेल में सुरंग बनाई कि भाग निकलूँ।

गवर्नर—अच्छा ही हुआ कि तुम पकड़ गये।

उसे सात दिन की कैद, सूखी रोटी और पानी की सज़ा सुनाई गई।

इसके बाद मोना वहाँ क्षण-भर भी न ठहर सकी। यदि वह ठहरती तो उसके मुँह से चीख निकल पड़ती। वह शीघ्रता-पूर्वक घर लौट आई। बँधा हुआ कैदी जब सिपाहियों के पहरे में घर लौट रहा था तो मोना घर पर ही

थी। उसने खिड़की में से कैदी को देखा। क्रोधित होता और ओठ काटता हुआ वह बेचारा निराशा की साक्षात् मूर्ति जैसा सिर नीचा किये चुपचाप चला जा रहा था।

जब जर्मनों के विजय-समाचार अखबारों में छपते हैं तो बूढ़ा उत्तेजित हो जाता है और जोर-ज़ोर से चिल्लाने लगता है—ईश्वर, तू यह क्या करता है? तेरे ये शैतान दुश्मन अभी तक कैसे आगे बढ़ रहे हैं? इन्हें नष्ट कर! इनका सत्यानाश हो जाय! इनका नाम-निशान तक मिट जाय!

मोना इसे सुन नहीं सकती। उसे लगता है जैसे उसका पिता ईश्वर-द्रोह कर पाप में पड़ रहा है। वह पश्चात्ताप करती है। वृद्ध उसके सामने देखता रहता है। उसकी समझ में कुछ नहीं आता। वह कहता है—समझ नहीं पड़ता कि इस लड़की को क्या हो गया? जर्मनों के लिए इसे कितनी घृणा थी! अब वह उनके प्रति क्यों दया दिखाती है! यह बदल क्यों गई है!

नित्य सबेरे वह कँटीले तारों के घेरे की उस ओर खेतों में काम करते जवान लड़के-लड़कियों को देखती है। रोबी और वह भी यों ही काम करते थे और अब रोज़ रात को मौत की जैसी काली बारकों को देखती है। इसका मन भी अब उस जर्मन नाई की भाँति छावनी से भाग जाना चाहता है। और विचित्रता यह है कि यह जानते हुए भी कि यदि उसे भाग जाने का अवसर मिलता तो भी वह भाग नहीं सकती। जाने क्यों?

ऑस्कर अपने अच्छे चाल-चलन के कारण कैदियों का कप्तान बना दिया जाता है। अब वह जहाँ मन चाहे, वहाँ घेरे के अन्दर घूम-फिर सकता है। तो भी वह मोना से शायद ही मिलता और मिलता तो शायद ही बोलता। एक दिन वह अकेले दूधशाला के द्वार आता है! उसकी मुट्ठी में कुछ था। वह हाथ फैलाकर पूछता है—जानती हो यह क्या है?

रोबी की चाँदी की घड़ी! आस्कर के पास यह कहाँ से?

'कहाँ से मिली?'

'मेनहेम के मेरे घर से। मेरे एक पुराने सहपाठी ने भेजी है।'

'उनके पास हाँ से आई?'

आस्कर पूरी बात सुनाता है।

अंग्रेज़ों के अन्तिम हमले की शुरूआत में उसका मित्र एक खाई में घायल होता है। सिर पर से सन-सन करती हुई गोलियाँ छूट रही हैं। व अपनी मा को याद करता हुआ पड़ा रहा। लश्कर चला गया। अचानक उसने एक अंग्रेज़ युवक को बोलते हुए सुना—देखो, मैं इस युवक को चीखता हुआ नहीं सुन सकता। मैं इसे भीतर लाता हूँ। फिर वह अंग्रेज़ सैनिक अपनी खाई से बाहर निकलकर ऑस्कर के मित्र को भीतर ले आता है। परन्तु एक जर्मन को बचाने में वह स्वयं घायल हो जाता है। अंग्रेज़ सैनिक उन दोनों को वहीं एक गढ़हे में पास-पास सुला चले जाते हैं। जाने कब तक वे दोनों वहीं पड़े रहे। ऑस्कर के मित्र ने होश में आकर पाया कि वह खुद तो बच जायगा; पर उसका अंग्रेज़ साथी मरनेवाला है। उस बहादुर युवक ने (फौज में लेफ़्टिनेण्ट था) ज़ोर लगाकर अपने जेब में हाथ डाला और एक घड़ी बाहर निकाली। फिर उसने ऑस्कर के कहा—भाई, इधर देखो! यदि तुम जी जाओ और अपने घर पहुँचो तो मेरी बहिन को यह भेज देना। वह नोकाजो में रहती है।'

मोना सारी रात बिस्तरे पर तड़पती रहती है। डर से अँधेरे में देखती है। अंग्रेज़ सैनिक के पत्र की बात याद कर वह पिता को घड़ी नहीं दिखलाती। यह उसे छिपाकर रख देती है। मौत के पास से आई हो इस तरह वह घड़ी को देखते डरती है।

अचानक उसे ख़याल आता है कि यह कैसे संभव हुआ! दो वीर एक गढ़हे में पड़े हुए हैं। एक को नोकालो में बसनेवाली बहिन याद आती है और दूसरा जर्मन के किसी घर में बसनेवाली मा को याद करता है। ये दोनों कैसे मित्र बन सकते हैं? बीच में कौन-सा शैतान विष की यह गाँठ बोता है?

'हे ईश्वर यह आदमी लड़ता क्यों है?'

६

मोना महसूस करती है कि पूर्णाहुती का प्रारम्भ हो गया। वह भली भाँति जान गई कि आस्कर को वह सतत और रात में सो जाने के पहले तो अवश्य याद कर लेती है। सबेरे जगते भी पहली याद आस्कर की ही आती है।

'मैं कहाँ जा रही हूँ ?'—इस प्रश्न का ख़याल आते ही उसका हृदय तड़प उठता है। और वह समझ नहीं पाती कि क्या किया जाय! बाजी उसके हाथ से निकल गई। उसके विचार उसे डराते हैं। लज्जा और भय से उसका गला रुँध जाता है।

एक बार फिर वही मेन्क्स किसान मोना के पिता से मिलने आता है और इस बार दिन-दहाड़े लन्दन पर आक्रमण होने की बातें सुना उसे आघात पहुँचा जाता है।

आकाश स्वच्छ था। दोपहर का समय था। एक प्राथमिक शाला में तीन में छः वर्ष की उम्र के लगभग एक सौ बालक छुट्टी के पहले प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना समाप्त होते न होते आकाश से दो बम गिरते हैं। चोट से दस बालक तो उसी समय मर गये और पचासेक घायल हो गये। जर्मन वायुयानों में से ये बम गिरे थे। वह भीषण हत्या-काण्ड आँखों से देखा नहीं जा सकता था। कोमल कलियों जैसे बालकों के कुचले हुए अंगों को उनकी माताएँ तक पहचान न सकीं। वे घर से दौड़ी-दौड़ी आईं, तब तक तो ये खून से तर-बतर हो गये थे।

उस बातूनी किसान की बात समाप्त होने आई कि मोना घर से चली जाती है। क्रोध से काँपता हुआ वृद्ध अपनी टाँगें पछाड़ता है, लकड़ी पटकता है और शाप देता है। सुन मोना काँप उठती है।

'अरे, सत्यानाश हो जाय इनका! आँखें फूट जायँ इनकी! इनके शरीर में कोढ़ फूटे, कोढ़! कोई न बचे! भगवान इनसे राई-रत्ती का लेखा ले! ओह, नराधम! पापी!'

लन्दन की सरकार को इसका उचित उत्तर देना चाहिए। एक अंग्रेज़ बालक के बदले हज़ार जर्मन बालकों को तोप के मुँह उड़ा देना चाहिए।

मोना पहले तो वृद्ध को शान्त करने का प्रयत्न करती है और फिर समझाती है। जो अंग्रेज़ बालक मारे गये, उन्हें गुलाब के फूल जैसे जर्मन बालकों के मारने से लाभ क्या होगा?

'बालक तो निष्पाप हैं...'

'निष्पाप? सदा ऐसे ही निष्पाप रहेंगे? आज जो कुछ उनके बड़े-बूढ़े कह रहे हैं, बड़े होकर वे भी यही करेंगे। हे भगवान, तू कहाँ है? इन सबको धूल में मिला दे।'

'पिताजी, यह आप क्या कह रहे हैं?'

'क्यों न कहूँ? पर छोड़ो, तुझे यह हो क्या गया? तू इनका इतना पक्षपात क्यों करने लगी। तेरे अन्तर में ऐसी क्या भावना है जो इतने हेर-फेर हो रहे हैं?'

ये शब्द भाले की नोक की तरह उसके हृदय को छेद देते हैं। वह कोठरी से बाहर भाग जाती है।

परन्तु थोड़ी ही देर में उसे दूसरा विचार आता है। पिताजी के कहने में झूठ ही क्या है! बालकों को हत्या! अरे, यह तो शैतानों का ही काम है?

साँझ को जब वह बाहर निकलती है तो आस्कर इसे कम्पाउंड में से बाहर आकर मिलता है। मोना निगाह बचा लेती है; परन्तु आस्कर उसे खड़ी रखता है और कहता है अखबार में समाचार पढ़े?

'पढ़े।'

'मुझे, उसका दुःख और लज्जा है।'

'यह कहने की आवश्यकता नहीं। क्या यह सम्भव नहीं कि जर्मनों के साथ भी हमारे भाई ऐसा ही करें?'—मोना कह ही देती है।

आस्कर उसे कुछ कहना चाहता है; परन्तु वह तो सिर उठाये चली ही जाती है।

एक सप्ताह बीत जाता है। मोना को ऑस्कर के कोई समाचार न मिले। इच्छानुसार आने-जाने की आज्ञा होने से ही वह उससे बचता होगा। लन्दन में होनेवाले उस कुकृत्य के लिए अब उसे कोई विशेष दुख नहीं होता। लड़ाई तो आख़िर लड़ाई ही है। ईश्वर के प्रिय बालकों के आगे सभी प्रकार की विजय हेय है। परन्तु युद्धकाल में इसे कौन याद रखता है। सिवा उस अकेली के कोई भी याद नहीं रखता कि—बालकों की पूजा तो मेरी पूजा है।

ये शब्द दो हज़ार वर्ष पहले बोले गये हैं तो भी...

× × × ×

क्रिसमस समीप आता है। तीसरा क्रिसमस ! मोना अख़बारों में पढ़ती है—पश्चिमी सीमा पर दोनों पक्ष के सेनापति क्रिसमस के उपलक्ष में चार घण्टे युद्ध बन्द रखने के लिए राज़ी होते हैं। आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व की एक घटना का स्मरण आज भी कितना पवित्र है। उसकी स्मृति में युद्ध-विराम ! तो छावनी में भी ऐसा ही कोई आयोजन क्यों न किया जाय ! वह ऑस्कर को अपने विचार बतलाती है।

'बहुत उत्तम ! ऐसे कटु प्रसंगों में भी ईसा ने जो ज्ञान दिया, उसे पालने की इच्छा बड़े सौभाग्य की बात है। जेल-अधिकारी मेरी बातें शांति से सुनता है और वह हृदय का भी बड़ा भला है। वह यह सुनकर अवश्य ही आनन्दित होगा।'

काम मिलने के बाद से कैदियों में कुछ मनुष्यता आ गई थी। उनके मनोविनोद के साधन भी कुछ संस्कृत हो गये थे। प्रत्येक कम्पाउण्ड के अलग-अलग मंडल थे। सिपाहियों को भी ख़याल आया कि हमारे भी ऐसे मंडल हों तो अच्छा रहे और उनके भी मंडल बने। प्रत्येक मंडल तरह-तरह के कार्य-क्रम की योजना कर एक दूसरे को आनन्दित करता था।

ऑस्कर जेल-अधिकारी को क्रिसमस की याद दिलाता है, और उसके उपलक्ष में कैदियों के लिए किसी धार्मिक कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए

प्रार्थना करता है। जेल-अधिकारी उसकी प्रार्थना स्वीकार कर लेता है। उसकी इस उदारता से ऑस्कर की आँखें भीगी हो जाती हैं—और फिर एकाएक लोगों की शुभ वृत्तियाँ जाग पड़ती हैं। सभी परमात्मा की प्रार्थना करने लगते हैं—

जय हो! उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की जय हो! मानव-जाति पर शान्ति और शुभेच्छाएँ व्याप्त हों!

मोना इस प्रार्थना से गद्‌गद् हो जाती है। वह तल्लीन हो खड़ी रह जाती है।

वृद्ध पिता तो खर्राटे की नींद ले रहा है।

रात को ग्यारह बजे कमरे में मोना बैठी है। तारे चमक रहे हैं। चाँद का पूर्ण प्रकाश खिड़की की राह कमरे में आ रहा है और चटाई पर चाँदनी बिखर रही है। बाहर छावनी भी चाँदनी में नहाकर पवित्रता में मग्न हो रही है।

चमकते बरफ़ में छावनी सफ़ेद दीख पड़ती है। इस वर्ष को छोड़ पिछले तीन साल बिना बरफ़ गिरे ही बीते थे। सर्दियों के इस श्वेत आच्छादन के नीचे मुक्त नागरिक और बन्दी सब भेद-भाव भूल एक हो गये हैं।

सन्नाटे की रात है। हवा तक आवाज़ नहीं करती। पाँचवें नम्बर के कम्पाउण्ड में आधे मील की दूरी पर एक कुत्ता भूँकता है। नव वर्ष के प्रथम प्रहर की प्रतीक्षा में पच्चीस हज़ार कैदी नीरवता-पूर्वक जाग रहे हैं तब झाड़ियों में एक मात्र झिल्लियों की आवाज़ के सिवा और सब शान्त है। ऐसी ही दूसरी आवाज़ प्रशान्त समुद्र की और सोये हुए वृद्ध के खर्राटों की है; परन्तु इससे तो शान्ति और भी गम्भीर होती जा रही है।

मोना जागती बैठी है। दोहर आधे शरीर तक खींचे बिस्तरे पर आँखें मींचे वह बैठी है। एक क्षण उसके मन में होता है कि वह रॉबी की घड़ी निकाल उसमें चाभी दे और अपनी कलाई पर बाँधे; परतु दूसरे ही क्षण वह 'मा' की आवाज़ सुनती है। वह वैसी की वैसी ही बैठी रह जाती है।

पील का गिरजाघर एक मील दूर है, फिर भी मोना को विश्वास है कि इस गम्भीर शान्ति में उसके घण्टे की आवाज़ अवश्य सुन पड़ेगी।

उसे फ्रांस की रण-भूमि का ख़याल हो आता है। वहाँ भी ऐसा ही पवित्र शान्ति छाई होगी। तोपों की गड़गड़ाहट और बम के धड़ाके बन्द होंगे। मात्र खाइयों की ओर से अवरुद्ध मानव-समुद्र का धीर-गंभीर घोष गूँज रहा होगा और उस पर स्निग्ध धवल चाँदनी का चन्द्रातप फैला होगा।

'जय हो उस प्रभु की! परम प्रेममय उस परब्रह्म की जय हो!'

बारह बजने में पन्द्रह मिनट का समय है और वह खड़ी होकर खिड़की के पास जाती है। पीड़ित और त्रस्त जगत् पर आज आनेवाला यह सौम्य, ईश्वरीय और रहस्यमय प्रकाश स्थायी हो।

उसके चेहरे पर प्रकाशित करता हुआ चाँद चमक रहा है। बरफ़ को कुचलती हुई 'कूच' की ध्वनि-जैसी उसे सुन पड़ती है। संत्रियों की बदली होती है। नई टुकड़ी उनकी जगह ले रही है। इस कूच की व्यवस्थित पद-ध्वनि के पीछे दूसरी अव्यवस्थित पद ध्वनि सुन पड़ती है। यह पद-ध्वनि मोना के खेतों में काम करनेवाले मजूरों की है।

और तब,—

धीमी हवा के सन्-सन्-सी पील के दूरस्थ गिरजाघर से घण्टे की आवाज़ सुन पड़ती है। एक...दो...तीन...की मधुर ध्वनि में बारह बजते हैं और साथ ही सिपाहियों का एक झुण्ड एक साथ गाता है—

'When the snow lay on the ground'

(जब बरफ़ धरती पर छा जाता है)

फिर तीसरे कम्पाउण्ड में से गीत की ध्वनि सुन पड़ती है। मोना को लगता है कि ऑस्कर इन सब में ऊँचे स्वरों से गा रहा होगा—

Deep and crisp and even

फिर पाँचवें नम्बर के कम्पाउण्ड से गीत की एक कड़ी गाई जाती है। पाँचवें के बाद दूसरे, दूसरे के बाद पहले और पहले के बाद दूर के चौथे

कम्पाउण्ड में से अलग-अलग समूहों में एक-एक कड़ी गाई जाती है। और अन्त में पाँचों कम्पाउण्ड एक स्वर में गाते हैं।

Noel, Noel—born is the King of Isarel,

(नोएल, नोएल—इज़्ज़ारेल का राजेश्वर जनमा)

गीत गाये ही जा रहे हैं। समीप से और दूर से एक ही स्वर में सुन पड़ता है—

'Lead Kindly Light..."

सुनते ही मोना की आँखों से अश्रुप्रवाह फूट निकलता है। अब उसकी समझ में आया कि क्यों उसने ऑस्कर को इस विषय की सलाह दी और क्यों उसने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। बस, अब यदि शान्ति स्थापित हो जाय तो इन दोनों को बिलग रखनेवाली कँटीले तारों की यह बाड़ टूट जाय। ओ ईश्वर !

उसके श्वासोच्छ्वास से खिड़की का काँच धुँधला हो गया है तो भी वह स्पष्ट देख सकी कि कोई मकान की ओर आ रहा है। वह कोई पुरुष है और शराबी या घायल की तरह लड़खड़ाता हुआ चल रहा है। वह मुख्य द्वार के पास ही आ खड़ा हुआ ! क्या उसे भ्रम तो नहीं हो रहा है ? नहीं तो ; पर क्या कहा जा सकता है ! ऐसी दशा में वह काँपती हुई दरवाज़ा खोलने सीढ़ी की ओर बढ़ती है।

टेबल पर जलती हुई बत्ती के प्रकाश में वह बाहर देखती है। सचमुच कोई बाहर आकर खड़ा है। ऑस्कर ?

ऑस्कर के एक हाथ में ट्रेमन वृक्ष की शाखा है और दूसरे में हलके नीले रंग का काग़ज़। उसकी टोपी कपाल से ऊँची खिसक गई है और ललाट पर पसीने की बूँदें हैं। उसकी आँखें फट गई हैं और चेहरा सफ़ेद पड़ गया है।

'भीतर आ जाऊँ ?'

'हाँ ; अवश्य !'

ऑस्कर घर में आता है। इसके पहले वह अन्दर कभी नहीं आया था।

वृद्ध के बैठने की पुरानी और टूटी हुई कुरसी पर वह बैठता है।

मोना ने पूछा—क्या है?

उसके हाथों में काग़ज़ देते हुए उसने कहा—देखो, अभी ही आया है। आज रात की डाक देर से आई। उसकी आवाज़ धीमी होती जा रही है।

मोना चिट्ठी हाथ में ले लेती है। वह अंग्रेज़ी में ही लिखी हुई है। उसे दीपक के पास ले जाकर मोना पढ़ती है।

'अमेरिकन राजदूतवास—मेनहम।'

'मेनहम में मेरा घर है।'

'दुःख के साथ लिखा जाता है कि...'

'बस! बस!'

मोना पत्र का बाक़ी अंश मन ही मन पढ़ती है। अमेरिकन राजदूत ने ऑस्कर को लिखा था कि आधी रात के समय अंगरेज़ों की ओर से किये गये एक हमले में वह घर बम की चपेट में आ गया, जिसमें उसकी मा और छोटी बहिन रहती थीं।...जिस खण्ड में उसकी बहिन सो रही थी, वह नष्ट हो गया।

मोना चीख़ पड़ती है। और वह ऊँचे स्वर में पढ़ने लग जाती है: छोटी बच्ची का कहीं पता नहीं। ऐसा विश्वास है कि...'बस करो! आगे मत पढ़ो, मत पढ़ो।'

दोनों के बीच क्षण-भर को मौन छा जाता है। केवल बीच-बीच में ऑस्कर की रुँधी हुई सिसकियाँ और मोना के श्वासोच्छ्वास उसे भंग करते हैं।

'तुम्हारी बहिन ही न?

'मैं उसके बारे में तुम्हें उस रात कहने ही वाला था।'

'जानती हूँ'—मोना बोली। उसे अपने उन कहे हुए शब्दों की याद करके पश्चाताप होने लगा।

'केवल दस ही वर्ष की थी। दूसरों को भी प्यारी लगती थी। प्रति-सप्ताह घसीट-घसीटकर वह अपने हाथों मुझे पत्र लिखती थी और अपने बनाये हुए चित्र भेजती थी।

पिताजी तो जब वह केवल दूध-मुँही बच्ची थी, तभी मर गये थे। उस दिन से मैं ही उसके लिए भाई और पिता सब कुछ था और अब...नहीं, एकदम व्यर्थ, सभी कुछ व्यर्थ है।

मोना भी कुछ नहीं बोल पाती। आस्कर कहता ही जा रहा है—व्यर्थ है, सभी कुछ व्यर्थ है।

वह हथेलियों में मुँह छिपा लेता है और मोना अँगुलियों में से बहते आँसुओं को देखती है।—मिग्नोन! बहन मिग्नोन!

तब भी मोना चुप ही रहती है। अन्त में आस्कर उठ खड़ा होता है—क्या करूँ? अब मेरा कोई नहीं रहा।

उसके चेहरे पर भयंकर निराशा फैल रही है। वह जाने के लिए पीठ फिराता है। मोना के लिए अब असम्भव है। वह एक ऐसे वेगशील आवेग से जो न रोका जा सकता है न वश में किया जा सकता है और न धीमा ही किया जा सकता है, उसके गले में हाथ डाल देती है, 'ऑस्कर, ऑस्कर!'

इसी बीच ऊपर की मंज़िल पर सोया वृद्ध गीतों की ध्वनि से जाग जाता है। उन्हें सुनने के लिए वह बिस्तरे पर बैठ गया। प्रार्थना-गीत सुनकर उसका हृदय पहले तो नम्र हो जाता है; परन्तु बाद में और भी कठोर हो पड़ता है। उसका मस्तिष्क भभक उठता है। शान्ति? उसके प्यारे पुत्र को मारनेवाले जर्मनों का जहाँ तक सत्यानाश न हो जाय, उसे शान्ति नहीं चाहिए। आवेश का दौरा ख़त्म होते ही वह थोड़ा शान्त हो जाता है। इसी समय निचली मंज़िल पर उसे खटपट की आवाज़ और किसी पुरुष का कण्ठ-स्वर सुन पड़ता है। बीच-बीच में मोना के बोलने की आवाज़ भी आ जाती है। उसने सोचा कि मैक्स कुमारिकाएँ बड़े सवेरे नव-वर्ष का अभिनन्दन करने आई होंगी, पर साथ ही उसके मन में एक बुरा विचार उठता है और वह ज़ोर लगाकर बिस्तरे में उठ खड़ा होता है।

बिस्तरे में से उठकर वह अपना लबादा पहनता है और लड़की के लिए इधर-उधर भटकता है। और फिर सीढ़ियों की ओर बढ़ता है। सीढ़ियों के

ऊपरी भाग पर घोर अन्धकार छाया हुआ था। परन्तु रसोईघर में दीपक जल रहा था और उसका क्षीण प्रकाश जीने पर पड़ रहा था। वह बड़ी कठिनाई से नीचे उतरने लगता है।

आस्कर और मोना को नहीं मालूम कि वे कब तक एक दूसरे से आलिंगन में बँधे रहे। शायद एक ही क्षण तक! परन्तु वे अपने पीछे धम-धम की बढ़ती हुई आवाज़ को सुनकर चौंक उठे। मोना ने देखने को पीछे की ओर मुँह फिराया और सीढ़ियों पर अपने पिता को खड़ा हुआ पाया।

वृद्ध का चेहरा प्रेत जैसा हो गया। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही हैं, फटे मुँह और काँपते ओठों से जैसे वह कुछ बोलने या श्वास लेने का प्रयत्न कर रहा है। अन्त में वह दोनों प्रयत्नों में सफल होता है और ख़ूब ज़ोरों से चीख़ता हुआ मोना पर अपना ग़ुस्सा उतारता है।

'कुलटा! व्यभिचारिणी! क्या यही तेरे परिवर्तन का कारण था? तेरा भाई तो फ्रान्स के मैदानों में मृत्यु की गोद में सोया और तू एक जर्मन की भुजाओं में! तुझे शान्ति न मिले! परमेश्वर करे तेरा सत्यानाश...'

बूढ़े का गला रुँध गया। उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वह लड़खड़ाकर धरती पर गिर पड़ा।

मोना के सँभलने से पहले ही साथी किसान घुस आकर बूढ़े को खड़ा करते हैं। मोना दूसरा दरवाज़ा बन्द करना भूल गई थी। वहीं से उन्होंने बूढ़े का चीखना पुकारना सुना और भीतर दौड़े आये।

वे सब मिलकर बेहोश बूढ़े को बिस्तर पर सुलाते हैं। मोना सुन्न खड़ी है कि सिर पर गाज ही टूट गिरी हो। एक डरावनी काली छाया उसे घेरे है। अन्त में अपने आपको सँभाल वह आस्कर को देखने इधर-उधर निगाह फिराती है; परन्तु वह तो कभी का चला गया था।

७

दूसरी बार की बेहोशी के बाद बूढ़ा बिना कुछ बोले ही मर गया। मोना उसके पास सतत जागती बैठी रही। बूढ़े को होश में आया जान वह अन्तः-करण से प्रार्थना करती; परन्तु मन में ऐसा भी कुछ भाव रहता कि वह होश में न आये तो अच्छा।

बूढ़े का अंत-काल आ पहुँचा। पश्चात्ताप के आवेग से मोना व्याकुल हो गई। वह किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गई और साथ ही उसके मन में यह भाव भी है कि उसने कुछ भी बुरा नहीं किया।

जग के आँगन में सवेरा भरने को है। मोना अकेली बूढ़े के पास बैठी है। पितृ-प्रेम के प्रचंड आवेग के वशीभूत हो वह चिल्ला पड़ी—पिताजी, वह मेरे वश की बात न थी। मैं असहाय थी मेरे पिता! मुझे क्षमा कर दो न पिताजी!

बूढ़े की आँखें सदा के लिए बन्द हो गईं। मोना निश्चल और स्तब्ध बैठी रही।

बूढ़ा कर्क पैट्रिक के कब्रस्तान में अपने वंशवालों की बगल में दफ़ना दिया गया। जर्मन कब्रों की बगल में ही उनसे घृणा करनेवाले बूढ़े की कब्र खोदी गई थी।

बूढ़े की मृत्यु का समाचार सुनते ही कई रिश्तेदार मातम मनाने आ पहुँचे। इसके पहले मोना ने उनमें से अधिकांश को नहीं देखा था। आज उनके आने का कारण वह शीघ्र ही जान गई। कोई काका था तो कोई फूफा। कोई भतीजा था और कोई भांजा। कोई मामा के साले के फूफे का बहनोई था और कोई दादा के भांजे का काका था। ये सब सम्बन्धी केम्प-अधिकारी से आज्ञा ले कृषि-घर में आ इकट्ठा हुए। इनके साथ एक पादरी भी था। सभी के ज़ोर देने पर पादरी ने बूढ़े का दान-पत्र पढ़ना शुरू किया। उसमें केवल एक लकीर थी—मेरी समस्त संपत्ति मैं अपनी बेटी के नाम कर जाता हूँ।

यह सुनकर सभी संबंधी जल-भुन उठे—'सभी अकेली इस छोकरी के

नाम ? बाबा हम पर बहुत प्यार रखते थे। अवश्य इसमें हमारे लिए भी कुछ लिखा होगा। क्या इसमें दूसरे किसी का कुछ भी हक़ नहीं है ?'

'नहीं।'

'उनके स्मारक के लिए ही उन्होंने हमारे नाम कोई चीज़ लिखी होगी !'

'जी नहीं। दोस्तो, मैं सच ही कहता हूँ। इसमें ऐसी कोई बात नहीं लिखी गई। सभी कुछ मोना के नाम है।'

'ठीक, तब यही उन्हें भोगे।' और वे सब जाने के लिए उठे।

जब वे सीढ़ियाँ उतर रहे थे, मोना ने सुना—बूढ़ा इस छोकरी को पहचान नहीं सका। यह तो मैं कहता हूँ कि जिस दिन यह छिनाल सब माल-मत्ता किसी हरामखोर के हाथ में सौंप देगी, क़ब्र में भी बूढ़ा चीत्कार उठेगा, यदि ऐसा नहीं तो मैं अपना नाम बदल दूँ।

मोना अँगीठी के पास हाथ फैलाये बैठी रही। रात बहुत बीत चुकी, अँगीठी में के कोयले भी बुझ गये, फिर भी वह उठी नहीं। उसी समय उसने सड़क से खेत पर काम करनेवाले मजूरों की बात-चीत सुनी—

'यह ताड़-सी लम्बी और पटिये सी चौड़ी ! इसी ने बूढ़े को मारा है।'

'और नहीं तो क्या ?'

'ऐसी छोकरी के हाथ नीचे मैं तो काम नहीं करने का।'

'हमारा भी यही विचार है।'

'अरे, कैसा जमाना आया है ! एक बे-घर-बार के जर्मन पर ही फिदा हो गई ! न तो बूढ़े बाप का ख़याल किया और न देश का ही। खुद अपना ही ख़याल भूल बैठी। राम ! राम !'

इन मजूरों ने बूढ़े की गालियाँ सुनी थीं। कुछ इधर-उधर से भी सुन लिया था। और अब बात में अपनी ओर से नमक-मिर्च लगाकर इधर उधर फैला रहे थे।

एक-दो सप्ताह बाद किसी न किसी बहाने से वे मोना से छुट्टी माँग रवाना होने लगे। मोना बिना कुछ पूछे-ताछे उनका हिसाब कर देती।

तीन दिन से वह अकेली है। प्रतिदिन जेल-अधिकारी उसके पास आता और प्रेम भरे शब्दों में कहता—बहुत बुरा हुआ बेटी ; परन्तु अब अफ़सोस करना व्यर्थ है, तू अकेली है और कोई तेरे यहाँ काम करने नहीं आयेगा। मेरा एक विचार है। यदि तुझे कोई आपत्ति न हो तो जेल के सिपाहियों को तेरी सहायता करने के लिए भेज दूँ।

'जी नहीं। ऐसी कोई आवश्यकता तो नहीं है।'

'तो किसी जर्मन को...'

दोनों शब्दों पर ज़ोर देती हुई वह बोली—जी नहीं।

'परन्तु सोच तो सही बेटी! इतना बड़ा खेत और ...'

'मेरी शरीर मज़बूत है, मैं ही अकेली सँभाल लूँगी दादा!'

'यह असम्भव है। सोलह तो गायें ही हैं।'

'यह तो कुछ भी नहीं। इनमें आधी तो ठाँठ हैं, उन्हें चरने भेज दूँगी। बाक़ी को मैं सँभाल सकूँगी।'

'फिर भी तू स्त्री है। ऐसे लोगों के बीच अकेले रहने में तुझे डर नहीं मालूम होगा?'

'मैं तो ऐसा कोई कारण नहीं देखती।'

छः महीने बीत गये। क्रिसमस के बाद से आस्कर दीखा ही नहीं। उसकी शक्ति और सच्चरित्रता की अच्छी धाक थी और इसी लिए वह छावनी में कहीं भी स्वतन्त्रता-पूर्वक आ-जा सकता था। यह जानकर मोना रोमांचित हो जाती है। साथ ही वह एक प्रकार की चोट का अनुभव करती है। कँटीले तारों के फैलाव तक आने-जाने की स्वतंत्रता होते हुए भी आस्कर उससे भेंट क्यों नहीं करता? यह बात सोचकर मोना को कई बार दर्द होता है। साथ ही यह सोचती है कि यदि आस्कर आया तो वह उसके सामने खड़ी नहीं हो सकेगी, वहाँ से भाग जायगी।

फिर भी जाने क्यों उसे इस बात का ध्यान बना रहता है कि आस्कर सदा उसकी बगल में ही है। वह कितनी ही जल्दी क्यों न उठे, खी द्वारा

नहीं हो सकनेवाले खेत के मोटे काम कोई कर ही डालता है। और वह 'कोई' दूसरा हो ही कौन सकता है।

किसी अलौकिक और अदृश्य शक्ति की प्रेरणा से वह उत्साह से भरे दिन बिताती है। रात में मीठी नींद सोती है। परन्तु एक दिन ऐसा आया कि उसकी सभी हिम्मत छूट गई।

केम्प में अफवाह फैलने लगी कि पश्चिमी सीमा पर दुश्मनों की ओर से एक ज़बर्दस्त हमला होनेवाला है। और उसे निष्फल करने के लिए सरकार ने बड़े पैमाने पर तैयारियाँ शुरू कर दीं। प्रत्येक कुशल और विश्वासी आदमी सेना में भर्ती कर लिया गया। छावनी के सभी पुराने सिपाही फ़ौज में बुला लिये गये। उनकी जगह पर जो सिपाही आये, वे एकदम असंस्कारी, लुटेरे और चरित्र-हीन हैं। जेलख़ाने पर उन्हीं की रखवाली है।

इन नये सिपाहियों का हवलदार पूरा राक्षस था। उसे कृषिघर के पड़ोस में दूसरे नम्बर के हाते में रखा गया। उसके शब्द उसकी चरित्र-हीनता के द्योतक थे। उसी के मातहत लोगों का कहना है कि वह एक शराबख़ाने का कलाल है और एक लड़की पर अत्याचार करने के अभियोग में सज़ा भी काट आया है।

मोना महसूस करती है कि वह इस लफंगे की निगाह पड़ चुकी है। वह मोना के बारे में अक्सर पूछ-ताछ किया करता और बुरे उद्देश्य से उसका पीछा भी करता। कभी वह मोना के सुनते उसकी गन्दी मज़ाकें भी उड़ाता। बहाने बनाकर वह कृषिघर में ताक-झाँक करता और बातें करने का प्रयत्न करता। एक रात तो उसने दरवाज़ा खटखटाने की भी हिम्मत की।

रात के समय छावनी में पूर्ण शान्ति है और किसी की छाया तक नहीं दीख पड़ती। बिना इस बात की जाँच-पड़ताल किये कि दरवाज़ा खटखटाने वाला कौन है, मोना ने द्वार खोल दिये। हवलदार भीतर प्रवेश करना चाहता है; परन्तु मोना डाँट देती है। वह चिरौरी करता है; फुसलाता है और धमकी देता है। अन्त में ज़बर्दस्ती घुस आने का प्रयत्न करता है।

वही बहुत धीरे-धीरे बोला—बेवकूफ़ी मत कर; आने दे नहीं तो...

मोना उसके सिर में दरवाज़ा भिड़ाकर बन्द करने के लिए पूरा ज़ोर लगाती है। उसमें प्रचण्ड शक्ति है; परन्तु विरोधी उससे भी अधिक शक्तिशाली है। वह मोना को हटा सकने में सफल हुआ। उसी समय उसके पीछे एक और व्यक्ति दीख पड़ा। मोना भविष्य की कल्पना कर काँप उठी।

परन्तु पीछे आनेवाला ऑस्कर था। वह दोनो हाथों की बाहें चढ़ा इस बदमाश की घेंटी पकड़ सड़क पर उठा पटकता है। हवलदार दरवाज़े से पन्द्रह फुट दूर जा गिरता है। थोड़ी देर तक वह बेहोश पड़ा रहता है: परन्तु अन्त में बिना चों-चपड़ किये चल देता है। ऑस्कर भी उसी समय मोना से कुछ कहे बिना ही पीठ फिराकर चला जाता है।

× × ×

मध्य गरमी के दिन हैं। स्थानीय घुड़दौड़ के खेल शुरू हो गये हैं। कैदी उसमें आनन्द-पूर्वक भाग लेते हैं, परन्तु अधिकारियों के मतानुसार ये कैदियों की समझ से परे हैं। सिपाहियों के परिवर्तन के बाद से छावनी का चरित्र बहुत ही भ्रष्ट हो गया। कोई पकड़ न पाये इतनी सफ़ाई से शराब भी आने लगी है। 'अमीर लोगों की बैरक' नाम से पुकारे जानेवाले पहले नम्बर के अहाते में पहली बार पकड़ी जाती है।

अधिकारियों को सन्देह होते ही वे एक नज़रकैद अमीर तम्बू की तलाशी लेते हैं। वहाँ आधे दर्जन आदमी ब्रांडी, शेम्पेन और सिगार आदि पीते हुए पकड़े गये। इसके बाद तो सारे बन्दीगृह की बारीकी से तलाशी ली गई; परन्तु उससे लाभ कुछ भी नहीं हुआ। तलाशी लेने से दिल चुराता हुआ सिपाहियों का हवलदार किसी तरह का स्पष्टीकरण नहीं कर पाया।

दूसरी बार दूसरे नम्बर के कम्पाउण्ड में इससे भी अधिक बुरी हालत में कैदी पकड़े जाते हैं। उस अहाते में ज़्यादातर कैदी खलासी थे। एक बार उनके बीच ताड़ी के नशे में दंगा हो गया; परन्तु उस झगड़े में से भी विशेष किसी प्रकार की जानकारी नहीं मिल सकी।

इन लोगों को इसके लिए पैसे कहाँ से मिलते थे ? छावनी में शराब कैसे आती थी ? जेल के कारखाने और खेतों में काम करने पर उन्हें जो पैसा मिलता, वह बहुत ही कम होता और फिर वह जेल की बैंक में कैदियों के नाम जमा हो जाता जो उनकी मुक्ति के समय मिलनेवाला था। हवलदार से जवाब तलब किया गया, पर वह बोला ही नहीं। कैदियों ने भी कुछ नहीं बतलाया।

एक दिन सबेरे उठते ही मोना ऑस्कर को दूसरे कम्पाउण्ड के कैदियों से कुछ कहते हुए सुनती है। खलासी उन्मत्त की तरह मुट्ठियाँ बाँधते हुए इस तरह का भाव बतला रहे हैं—देख लेंगे, देख पाजी को। थोड़ी देर बाद हवलदार पहली कम्पाउण्ड की ओर से आता हुआ दीखता है। चिल्लाकर वह लोगों से बिखर जाने के लिए कहता है। उत्तेजित-सा वह ऑस्कर की ओर घूमता है। फासला अधिक होने से मोना उनकी बातचीत सुन न सकी; परन्तु आस्कर बिना कुछ उत्तर दिये ही चला जाता है।

एक घण्टे बाद जब कि वह गौशाला में काम कर रही थी, उसने दूसरे नम्बर के कम्पाउण्ड से चीखने-पुकारने की तीखी आवाज़ें सुनीं। काम वहीं छोड़कर दरवाज़े में आ खड़ी हुई। आस्कर जिन लोगों को समझा रहा था, वे और दूसरे सौ-एक कैदी एक आदमी के पीछे पागल शिकारी कुत्तों की तरह पड़े थे। कैदी दाँत पीसते हैं और चिल्लाते हैं और एक चीखते हुए आदमी के पीछे भाग-दौड़ कर रहे हैं। उन्होंने उसका कोट फाड़ डाला और ऊपर का शरीर नंगा कर दिया। उससे बचने के लिए वह इधर से उधर भाग रहा है। उसकी पीठ पर मार पड़ रही है। वह गिरता है, लातें खाता है, और फिर उठकर भागता है। अहाते के दरवाज़े पर खड़े सिपाही उसे छुड़ाने भागे आते हैं। वे गोली चलाने का डर बतलाने के लिए राइफलें दिखलाते हैं, परन्तु कैदी उनकी राइफलें ही छीन लेते हैं। वे वहाँ से भाग आते हैं। भयानक शोरगुल हो रहा है। सारा अहाता कोलाहल और तोड़-फोड़ की आवाज़ से गूँज रहा है। 'चोर! बदमाश! पकड़ो! मारो!'

मोना को दरवाज़े पर किसी ने नहीं रोका। बिना कुछ सोचे-विचारे वह दौड़ पड़ती है। उसे डर हुआ कि ऑस्कर पर आफ़त आई है। शराब के नशे में झूमते बाहें चढ़ाये कैदियों को अपने मजबूत हाथों से ढकेलती हुई वह आगे बढ़ती है।

'हटो, खबरदार जंगली!'—परन्तु उसकी आवाज़ से अधिक तो उसके मज़बूत शरीर से ही वे लोग पीछे हटते हैं। और मोना उस हतभागे के समीप जा पहुँचती है। वह उसके चरणों पर गिर पड़ता हैं। उसके सिर और मुँह से रक्त बह रहा है और वह दया की प्रार्थना करता हैं।...

वह व्यक्ति वो हवलदार था।

जब उसने अपने बचानेवाले को देखा तो पाँव चूमकर बोला—मा, मुझे बचा!

इसी बीच पड़ोस के अहाते से सशस्त्र सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुँची। उत्तेजित क़ैदी क्षण भर में ग़ायब हो गये। वे अपनी जगहों पर पहुँच कम्बल ओढ़कर चुपचाप सो जाते हैं। सिपाही हवलदार को ले जाते हैं।

दिन में मोना सुनती हैं कि छः आदमियों को पकड़कर पील के जेलखाने में बन्द कर दिया और आस्कर उनमें से एक हैं। उसके बाद उसे दूसरा समाचार यह मिला कि दूसरे सवेरे ही उनकी अदालत में पेशी होगी।

ऑस्कर पर कौन-सा अपराध लगाया गया होगा? अदालत का निमन्त्रण न मिलने पर भी मोना ने उपस्थित रहने का निश्चय कर लिया है। उसके मन में यह शंका जाग्रत हुई कि उसके सिर अनिष्ट के बादल मँडरा रहे हैं फिर भी जाने का उसका निश्चय अडिग था।

८

गायों के रंभाने से पहले ही वह जाग जाती है। गौशाला का काम एकदम समाप्त कर वह पील की ओर चल देती है। अदालत सिपाहियों और

नागरिकों से खचाखच भरी है। बड़ी कठिनाई से वह अन्दर घुसती है। और दरवाजे के पास ही बैठने का स्थान पा लेती है!

उसके पहुँचने के समय काम शुरू हो गया था। कैदी मंच पर खड़े थे और उनकी पीठ मोना की ओर थी। गन्दे-मैले बाल तथा कपड़ोंवाले पाँच तो खलासी हैं और छठा आस्कर। सबके पीछे वह सीधा खड़ा है। गवर्नर भी उपस्थित है। गवर्नर के एक ओर हाई बेलिफ है और दूसरी ओर जेल-अधिकारी। हवलदार सिर पर मोटी पट्टी बाँधे गवाहों के कठघरे में खड़ा है। इस समय वह सरकारी वकील के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था।

'हाँ, हवलदार, बतलाओ तुम क्या कहते हो?'

हवलदार साहब, हुजूर, सरकार, मालिक आदि अभिनन्दनों के बाद झुक-झुककर सलाम बजाता है और अपनी बात शुरू करता है।

बात कल की है। समय यही होगा। वह अपनी दैनिक ड्यूटी के अनुसार जब दूसरे नम्बर के कम्पाउण्ड में घुसा तो बिना किसी प्रकार की चेतावनी और किसी योग्य कारण के बिना ही उसके ऊपर कई कैदी टूट पड़े। लगभग दो सौ क़ैदी रहे होंगे; परन्तु प्रमुख उनमें यहाँ खड़े हुए कैदी ही थे। इनमें के पाँच तो दूसरे नम्बर के अहाते के ही हैं और छठवाँ तीसरे अहाते से दौड़कर आया और उसी ने सबसे अधिक आफ़त की। केम्प कप्तान होने से उसे आने-जाने की सुविधा है और इस स्वतन्त्रता का उसने इस तरह दुरुपयोग किया।

हाई बेलिफ़ ने जिरह की—तुम यह कैसे कह सकते हो?

'उसने जो बातें कहीं, उन्हें मेरे सहकारियों ने सुना; परन्तु हुज़ूर इस मामले में तो स्वयं मैंने ही उसकी जबानी सुनी है?'

'क्या बात सुनी?'

'हुजूर, जब मैं पहले अहाते में अमीर लोगों के तम्बू के पीछे खड़ा था। मैंने इसे दूसरे अहाते के लोगों से कहते हुए सुना कि मेरा ख़ात्मा कर दिया जाय।

गवर्नर ने पूछा—क्या तेरे साथ इसकी कोई अदावत है ?

'जी हाँ सरकार, मुझसे तो वह बहुत ही खार खाता है।'

'इसका कारण क्या है ?'

'हुजूर, यह तो मैं नहीं जानता।'

'उसका नाम क्या है ?'

'ऑस्कर ! हुजूर ऑस्कर !'

गवर्नर ने हुक्म दिया—आस्कर हाजिर किया जाय।

ऑस्कर पीछे से सामने खड़ा हुआ कि मोना की आँखें चमक उठीं। वह कैदी है, इसलिए उसे सौगन्ध लेने की आवश्यकता नहीं।

गवाह के पींजड़े में बिलकुल नीचे खड़े होने पर भी उसकी गर्दन ऊँची है। जब कैदियों की ओर से जिरह करनेवाला वकील उससे सवाल पूछता है तो वह बिना घबराये पूर्ण शान्ति से उत्तर देता है।

'हवलदार की जबानी तुमने सुनी ?'

'जी हाँ ?'

'तुम्हारे बारे में इसने जो कुछ कहा, वह सच है ?'

'एक भी शब्द सही नहीं है।'

'उस दिन इस पर जो हमला हुआ, उसमें तुमने भाग लिया था ?'

'कतई नहीं।'

'तो क्या दूसरे कैदियों से तुमने ऐसा करने के लिए कहा था ?'

'जी नहीं। मैंने उनसे ऐसा कुछ भी नहीं कहा ; परन्तु हवलदार को जैसा मैंने इस समय समझा है, वैसा उस समय समझा होता तो अवश्य कहता।'

'क्या तुम बतला सकते हो कि इस समय तुमने उसे किस रूप में देखा है ?'

'कि वह बदमाश है, चोर है, यह लोगों को धमकाकर पैसे वसूल करता है, उनसे बुरा बर्ताव करता है।'

'यदि तुमने यह बात पहले जान ली होती तो तुम कैदियों से क्या कहते ?

'इसका दम न निकल जाय तब तक पीटने के लिए।'

'क्या तुम इस बात को स्वीकार करते हो ?'

'जी हाँ।'

गवर्नर हाई बेलिफ की ओर मुड़कर बोला—क्या इससे आगे बढ़ना ज़रूरी है ? यह आदमी कहता है कि इसने अपराध में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी तरह का भाग नहीं लिया, परन्तु हवलदार की बात से कौन-सी बात विशेषकर आधार-भूत है।

हाई बेलिफ़ भी इस राय से सहमत हैं। बचाव पक्ष के वकील की इच्छा दूसरे कैदियों की सफ़ाई दिलाने की थी, परन्तु इस बात पर से उनका बुलाया जाना अनावश्यक समझा गया।

सरकारी वकील बोला—मैं इन छः कैदियों को कड़ी से कड़ी सज़ा दिये जाने के पक्ष में हूँ। एक सैनिक अफ़सर जब कि वह अपनी ड्यूटी पर हो, उस पर इस तरह का बर्बर आक्रमण भयंकरतम अपराध है।

जूरियों के बीच कुछ विचार-विनियम होता है, जिसे मोना सुन न सकी। हाई बेलिफ़ निर्णय सुनाने के लिए खड़ा हुआ।

'यह एक भयंकर अपराध है। इस तरह की अव्यवस्था और मार-पीट यदि जेल में चलने दी जाय तो पूरी सेना उस पर अधिकार पाने में असमर्थ होगी। इसलिए प्रजा की सुख और शान्ति के लिए हमारा कर्तव्य है कि ऐसे सभ्य कैदियों को भी...।'

'महोदय, एक मिनिट ठहरिए !'—किसी नारी के गम्भीर कण्ठ-स्वर में क्षण-भर के लिए हाई बेलिफ की आवाज़ डूब जाती है।

दूसरे ही क्षण मोना मार्ग बनाती हुई आगे बढ़ती है। वकील उससे परिचित है। उसका विश्वास है कि वह मुक़दमे को अधिक ज़ोरदार बनाने के लिए आ रही है, इसलिए वह रुककर कहता है—यही वह युवती है जिसने हवलदार को उत्तेजित कैदियों के पंजे से छुड़ाया था और जिसका

उल्लेख मैंने अपनी बात के प्रारम्भ में किया था। यदि समय अधिक न हुआ तो वह हमें कैदियों के चरित्र और हेतु के बारे में कुछ बतलायेगी।

मोना बोली—जी नहीं, मुझे कैदियों के चरित्र के बारे में कुछ नहीं कहना है। मैं हवलदार के चरित्र के बारे में बतलाना चाहती हूँ।

जूरियों की टेबल पर कुछ गुनगुनाहट होती है; परन्तु अन्त में हाई बेलिफ़ की आवाज़ आई—तुम्हें जो कुछ कहना हो कह सकती हो।

मोना गवाह के कटघरे में जा खड़ी होती है। वह सौगन्ध लेती है; परन्तु इन विधियों से और वकीलों, न्यायाधीशों और जनता को अपनी ओर ताकते हुए देखकर वह काँप उठती है। फिर भी जब उससे प्रश्न पूछे जाने लगे तो वह बिना काँपे और स्थिरता से उनका उत्तर देती है।

'हवलदार के बारे में तुम्हें कुछ कहना है।'

'जी हाँ।'

'कहना क्या है?'

'कि वह दुष्ट है और सेना के लिए अपमान-जनक है।'

गवर्नर अपना चश्मा लगाकर उसकी ओर देखता है। वह शरारत की हँसी हँसकर बोला—तब तो तुम सेना के बारे में कुछ जानती हो। तुम्हारी छाती पर लटकनेवाला यह तमगा कैसा है?

गरदन ऊँची कर मोना ने उत्तर दिया—यह विक्टोरिया क्रास है। युद्ध में यह मेरे भाई को मरते-मरते मिला और बादशाह ने इसे मेरे पिता के पास भिजवाया।

गवर्नर की नाक पर से चश्मा खिसक जाता है। उसका चेहरा कठोर हो जाता है। थोड़ी देर की शान्ति के बाद हाई बेलिफ ने पूछा—हवलदार के बारे में तुम जो कुछ कहना चाहती हो, क्या वह तुम्हारा निजी अनुभव है?

'जी हाँ, निजी अनुभव ही है।'

मोना कटघरे की सलाखें पकड़ती है। उसकी अँगुलियाँ काँप रही हैं। वह बोलने का प्रयत्न करती है; परन्तु उसे शब्द नहीं मिलते। फिर वह

आँखें ऊँची कर जैसे स्वगत ही कह रही हो—मुझे यह क्या हो गया। फिर सिर को झटका दे बोलना शुरू करती है और बोलती ही रहती है। कैसे हवलदार ने उस पर आक्रमण किया, कैसे जब कि वह अकेली और असहाय थी, उसने घर में जबर्दस्ती घुसना चाहा, कैसे वह घुसने ही वाला था कि आस्कर ने आकर उसे धकेल दिया और उसकी रक्षा की।

अपनी बात को समाप्त करती हुई वह बोली—यदि इसमें कोई अदावत है तो वह हवलदार को है, आस्कर को नहीं।

बात समाप्त होते ही अदालत में गुनगुनाहट होने लगी। हाई बेलिफ़ उठा और आस्कर से पूछा—क्या यह बात सच है ?

आस्कर ने उत्तर दिया—मुझे खेद है कि इस महिला ही ने यह बात कही, परन्तु यह बिलकुल सच्ची है।

आँखें लाल-लाल करता और सिर हिलाता हुआ हवलदार चीखा—झूठ, साफ़ झूठ।

'झूठ ?'—आँस्कर जोश में आकर और हवलदार की ओर हाथ लम्बा कर बोला—जाँच की जाय। जब मैंने इसकी गर्दन पकड़ी मेरी अँगुलियों के निशान इसके गले में बन गये थे। देख लिया जाय कि वे निशान वहाँ अब भी हैं या नहीं ?

हवलदार अपना सिर और गर्दन छिपाने का प्रयत्न करता है। परन्तु उसके पहले ही न्याय करनेवालों ने उसकी गर्दन पर चार अँगुलियों और एक अँगूठे के काले निशान देख लिये।

जब बात यहाँ तक आ पहुँची तो बचाव के वकील ने खड़े होकर दूसरे क़ैदियों को सफ़ाई देने के लिए बुलाये जाने की आज्ञा माँगी !

एक के बाद एक पाँचो व्यक्ति खड़े हुए और सभी ने एक ही बात दुहराई जब भाग-दौड़ हुई तो हवलदार क़ैदियों को उस पर विश्वास रखने का आश्वासन दे उनकी आमदनी के पैसे बैंक में जमा करने ले जाता; परन्तु कभी उसने पैसे जमा किये ही नहीं। इस मामले में कई बार क़ैदियों की

जीत हुई; परन्तु हवलदार सदा ही झूठ बोला। परन्तु अन्त में उसकी बदमाशी पकड़ी गई।

'ऑस्कर ने हमें जेल अधिकारी से शिकायत करने की सलाह दी; पर हमने तो स्वयं उसे पकड़कर उसकी तलाशी लेने का निश्चय किया था। यह तो शराब का नशा कुछ अधिक हो जाने से इस तरह की ज़्यादती हो गई।'

हवलदार गरजा—ग़लत, एकदम ग़लत।

क़ैदियों के पीछे से एक आवाज़ आई—कुछ भी ग़लत नहीं है। यह आवाज़ कैदियों को कोर्ट में लानेवाले एक सिपाही की थी। मंच के पिछले हिस्से से आगे बढ़ वह बोला—हुज़ूर, मेरा भी बयान लिखा जाय।

हवलदार गुस्सा होकर चिल्लाया—ऐ रडक्लीफ़, जो कुछ कहे सँभल-कर कहना। यहाँ झूठ नहीं चल सकेगा।

'जी हाँ, मैं यह जानता हूँ। आपकी झूठ कितनी देर चली? और इसी लिए आपकी बात सच लगती है।'

रडक्लीफ़ की बात कैदियों से मिलती-जुलती है। उसने बतलाया कि हवलदार अपने सिपाहियों को भी इसी तरह लूटता है।

'और छावनी में शराब आती है, सिगार आते हैं और अमीरों की बैठक में जो कुछ भी अवांछनीय वस्तुएँ आती हैं, वे सब इसी हवालदार का प्रताप है। इस व्यवसाय से उसे बहुत नफा होता है। दो दिन पहले इसने खूब नशा किया था और बक रहा था कि बैंक में उसके नाम पाँच सौ पौण्ड जमा हैं।'

इसके बाद कोर्ट का काम शीघ्रता-पूर्वक ख़तम कर दिया गया। गवर्नर को भय था कि और कोई झगड़ा फूटेगा। कैदियों को एक दिन बन्द जेल की सज़ा दी गई जो वे हवालात में पहले ही भुगत चुके थे। इसलिए उन्हें पुनः छावनी में भेज दिया गया।

कोर्ट समाप्त होते ही जेल-अधिकारी ने हवलदार से कहा—अब छावनी में तुम्हारी आवश्यकता नहीं। कल ही अपने जाने का प्रबन्ध करो। शर्म है!

तुम जैसे दो-चार नालायकों के कारण ही सारी जनता को बुरा समझने का मौक़ा इन जर्मन कैदियों को मिला।

सिपाहियों से घिरे हुए क़ैदी छावनी की ओर रवाना होते हैं। ऑस्कर मोना के पास ही से गुजरता है; परन्तु वह सिर झुकाये चला ही जाता है।

अपने आपे में आते ही मोना सोचती है कि उसने क़ैदियों के लिए कुछ नहीं किया। वह सब तो उसके अपने लिए था। नागरिक उसके पास से गुज़रते हुए उसे घृणा भरी दृष्टि से देखते हैं। कोर्ट रूम से सभी के निकल जाने पर ही उसने बाहर निकलने की हिम्मत की। परन्तु बाहर तो लोगों में झुण्ड के झुण्ड सीढ़ियों और दरवाज़ों के आस-पास जमा थे। जैसे ही वह बाहर निकली कि लोगों ने 'शर्म-शर्म' के नारे लगाना शुरू किये।

'द्रोही! दग़ाबाज़!'

'अपने घर में आग लगानेवाली!'

'एक आवारे के बचाव में अपने ही देशवासी के विरुद्ध बयान देने में जीभ नहीं कट गई!'

'बड़ी धर्मात्मा!'

तवे-से गर्म पत्थर पर पानी गिरने से जैसी आवाज़ होती है, वैसी ही एक-सी आवाज़ मोना के पीछे-पीछे आती है—देखो वह है! वह जा रही है! अरे वह!

जब वह वृक्षों की ओट होती है, तभी आवाज़ आना बन्द होती है।

आधी दूर पहुँचते ही उसे जेल-अधिकारी की मोटर मिली। वह मोना से बातचीत करने के लिए अपनी मोटर ठहराता है। उसका हमेशा का स्निग्ध और प्रसन्न चेहरा इस समय गम्भीर और उग्र हो गया है।

'मैं जानता हूँ कि तूने सब कुछ न्याय के लिए किया है। फिर भी बहुत बुरा किया। मुझे तेरे लिए रंज है। तुझे चुप ही रहना चाहिए था।'

उसके घर पहुँचने से पहले ही क़ैदी छावनी में आ चुके हैं। अदालत में उसने जो बयान दिया, वह हवा की तरह सारी छावनी में फैल गया।

उसके घर पहुँचते ही दूसरे अहाते के खलासी कैदी कि जिन्होंने उसके साथ अशिष्ट बर्ताव किया था, सिर से टोपियाँ उतारे उसकी अभ्यर्थना के लिए आ पहुँचते हैं। मोना ने उनकी ओर देखा तक नहीं। घबराहट और लज्जा के मारे वह घर में घुस गई।

सारा दिन काम में उसका मन नहीं लगा। रात होते ही वह बूढ़े पिता की कुर्सी में धम्म से गिर पड़ती है। घण्टों वह आँच के सामने बैठी रही। उसे यह भी याद नहीं रहा कि सवेरे से उसने कुछ भी नहीं खाया है।

सब कुछ समाप्त हो गया। बन्द मुट्ठी उसने स्वयं ही खोल डाली। जिस बात को वह अपने आप से छुपाकर रखना चाहती थी, जिसको वह स्वयं स्वीकार नहीं करती थी, वही उसने बुलन्द आवाज़ में जग-जाहिर कर दी।

मोना ऑस्कर को प्यार करती है। अंग्रेज छोकरी एक जर्मन को प्यार करती है। जर्मनों पर सबसे अधिक घृणा रखनेवाली मोना ही एक जर्मन को प्यार करती है। अपने मन की इस बात को स्वयं वही नहीं मानती थी; परन्तु आज तो यह बात संसार-प्रसिद्ध हो चुकी है। लोग कहते हैं कि उसके पिता का ख़ून किया! यदि यह सच है तो आज दूसरी बार उसने अपने पिता का ख़ून किया है। ऐसी बात सार्वजनिक रूप से कहकर उसने अपने कुटुम्ब पर लाञ्छन लगा लिया।

'परन्तु बात मेरे हाथ की न रही थी। मैं असहाय थी।' उसके मस्तिष्क में विचार उठते हैं; परन्तु उसी सान्त्वना फिर भी नहीं मिलती।

क्षण भर के लिए वह सोचती है कि उसने अपने आप पर कलंक ओढ़ लिया। उसे अपना मुँह छिपाकर रखना चाहिए। नोकालो में अब वह कैसे रह सकेगी? परन्तु दूसरे ही क्षण उसके सामने आस्कर आता है। उसे तो यहीं रहना पड़ेगा। उसका हृदय रो उठा—नहीं, नहीं, यह भी नहीं हो सकता।

ऑस्कर ने अदालत में उसके बारे में जो कुछ कहा, उसकी याद आते ही सिर ऊँचा उठा, वह सोचने लगती है—पर क्यों? इसमें बुरा है ही क्या?

सोने के पहले जब वह दरवाज़े में ताला लगाने गई, किवाड़ों की दराज़ में उसे एक चिट्ठी खोंसी हुई मिली। कैदियों के नोट पर जैसा एक पत्र था। अक्षर अपरिचित थे; परन्तु परिचय की मोना को ज़रूरत न थी। वह जानती थी।

उसमें केवल इतना ही लिखा था—खुदा हाफ़िज़। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

हार्दिक आवेग के वशीभूत हो वह पत्र को ओठों से लगा लेती है। दूसरे ही क्षण सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसे अपने पिता का स्मरण हो आता है। उस पर पुरानी दुर्बलता सवार हो जाती है—पिता, प्रभु मुझे क्षमा करो। मैं असहाय हूँ।

६

क्रिसमस फिर आया। युद्ध-काल का यह अन्तिम क्रिसमस है।] युद्ध में सम्मिलित राष्ट्रों की ओर से दो स्विस डाक्टर यूरोप-भर की जेलों का निरीक्षण करने के लिए नियुक्त किये गये हैं। नोकालो भी आये।

पाँचों अहातों का निरीक्षण कर चुकने के बाद वे दूध की जाँच करने के लए कृषि-घर में आते हैं। दोनों खुशदिल आदमी हैं। मोना उन्हें अपने साथ चाय पीने का निमन्त्रण देती है।

भोजन-गृह में चाय पीते समय वे बातें करते हैं; परन्तु मोना जब कैदियों की शिकायत के बारे में कहती है तो वे उस ओर कोई ध्यान नहीं देते। एक तो मुँह भी बिगाड़ता है।

एक कैदी कहता था कि आलू सड़े हुए होने से खाये नहीं जा सकते। जो सार्जेन्ट उनके साथ था, वह बोला—उसकी बात पर विश्वास न कर बैठना। वह एकदम झूठा है। कैदी इसके बाद एक भी शब्द न बोला।

एक डाक्टर बोला—मैं इतना तो कह सकता हूँ कि कैदी की बात सच न थी; परन्तु साथ ही सार्जेन्ट का व्यवहार भी मानवोचित नहीं था।

मोना ने पूछा—क्या सभी जगह यही हाल है? जर्मनी के भी यही हाल हैं?

'जर्मनी जैसा कुप्रबन्ध तो और कहीं नहीं देखा। वहाँ के कर्मचारियों के हृदय में कैदियों के प्रति लेश-मात्र दया नहीं है। और खासकर अंग्रेज़ कैदी तो पशुओं से भी गया-बीता जीवन जीते हैं।'

'परन्तु वास्तव में तो यह युद्ध है ही ऐसी सत्यानाशी चीज़। हारनेवाल को यह उन्मत्त बनाकर नष्ट होने की प्रेरणा करती है और जीतनेवालों को राक्षस ही बना देती है।'

' किन सभी जगह ऐसा नहीं होता!'

'नहीं होता? तो...तो परमेश्वर की असीम कृपा।'

फिर डाक्टर मोना को दूधशाला की सफ़ाई, दूध की उत्तमता आदि के लिए धन्यवाद देते हैं। वे पूछते हैं कि तुम अकेली यह सब कैसे कर पाती हो। मोना ऑस्कर के बारे में बतलाते डरती है, इसलिए बोली—मैं अकेली ही सब कुछ कर लेती हूँ।

'वाह!' एक डाक्टर बोला—मैं तो मानता हूँ कि सच्चे दिल से दो हाथ जितना काम कर लेते हैं; बिना दिल से बाईस हाथ उतना नहीं कर सकते।

सरा डाक्टर बोला—लड़ाई में भी तो यही सिद्धान्त काम करता है। युद्ध-भूमि पर भी यही हुआ है। यही कारण अंग्रेज़ों की विजय और जर्मनों की पराजय का है।

'जर्मनी की पराजय?' मोना बोल उठी—तो क्या लड़ाई समाप्त हो गई।

'न समाप्त हुई तो अब हो जायगी और बहुत ही जल्दी हो जायगी। अधिक हुआ तो दुश्मन एक-आध बार और ज़ोर लगा लेंगे; परन्तु उससे युद्ध के अधिक दिन टिकने की आशंका नहीं है।'

मोना का हृदय प्रसन्नता से नाच उठता है। क्या यह सचमुच सम्भव है कि लड़ाई समाप्त हो जायगी? बन्द हो जायगी? ओह, परमेश्वर की असीम कृपा! फिर तो उसके और ऑस्कर के बीच कोई भी अड़चनें न रहेंगी।

ऑस्कर जर्मन होने की वजह से नहीं; परन्तु उसके देश की सरकार के विरुद्ध मोना के देश की सरकार लड़ रही है, इसलिए जनता उन दोनों के प्रेम को सह नहीं सकती। उनके प्रेम का रोड़ा जातिभेद नहीं युद्ध है। युद्ध बन्द होते ही सभी कठिनाइयाँ सरल हो जायँगी।

'हे ईश्वर युद्ध को बन्द करा! युद्ध को बन्द करा! बन्द करा।' सबेरा होते ही मानो प्रार्थना करती है। साँझ पड़ते ही मोना प्रार्थना करती है। रात को सपने में भी वह प्रार्थना करती है: युद्ध बन्द करा!

पिछले साल की तरह इस साल प्रार्थना और जलसों का कार्य-क्रम नहीं रखा गया। प्रसंग के अनुकूल ही छावनी के गिरजाघर में सामूहिक प्रार्थना उपदेश और भजन का कार्य-क्रम है। बाहर से कोई लुथरन उपदेशक भी आनेवाला है।

नये वर्ष के प्रथम प्रभात में मोना अपने एक बैल को सानी देने जंगाल लेकर बाहर निकली तो उसने गिरजाघर से भजनों की रागिनी का स्वर सुना। वह गीत सुनने के लिए खड़ी रह जाती है। आनेवाले दिन कैदियों की एक टुकड़ी कार्यक्रम में गाने के लिए गीत जमा रही है और शायद आस्कर हारमोनियम बजा रहा है।

गीत की भाषा से वह परिचित है; परन्तु स्वर अनजाने हैं। जब वह छोटी-सी गिरजाघर में गाती—

'A sure stronghold our God is still...'

(ईश्वर अभी भी उतना ही प्रभावशाली और प्रतापी है...)

एक ही भजन, एक ही धर्म, एक ही ईश्वर, एक ही आज्ञाकर्ता फिर भी...

कितनी दुष्टता, कितनी मूर्खता! कैसे लोग एक दूसरे से घृणा कर सकते हैं?

नये दिन दिन-भर का काम समाप्त कर जब वह घर से बाहर निकली तो गिरजाघर का घण्टा बज रहा था और क़ैदियों की टुकड़ियाँ गिरजाघर की ओर जा रही थीं। सबके साथ ऑस्कर भी था।

एकाएक मोना को एक विचार सूझा ; जब धर्म एक ही है तो वह इनके साथ गिरजाघर क्यों नहीं जा सकती? यदि संत्री को आपत्ति न हो, वह जाने दे सकता हो, तो हर्ज ही क्या है?

मैं क्या कर रही हूँ, इस बात का ख़याल आने से पहले ही वह ऊपर जाकर गिरजाघर में जाने के कपड़े पहिनती है और तीसरे नम्बर के अहाते की ओर चल भी पड़ती है।

छावनी का गिरजाघर लकड़ी के बड़े से गोदाम जैसा है। एक कोने में लकड़ी का मंच बना हुआ है। जमीन पर बैठकें नहीं हैं। मंच पर छोटी-सी टेबल के आगे एक लूथरन पादरी काला लबादा पहिने बाइबिल पढ़ रहा है। सामने पाँचः-छः सौ आदमी कतार बाँधे खड़े हैं। उन्हें देखकर दया आती है। उनमें कितने ही बच्चे हैं ; कितने ही जर्जर बूढ़े हैं। कितने ही साफ़-सुथरे कपड़े पहिने हैं तो कई के शरीर पर चीथड़े लटक रहे हैं। किन्हीं के पाँवों में बढ़िया जूते हैं और किन्हीं के जूतों में से सत्रह जगह पाँव झाँक रहे हैं। कई ने हजामत करवा रखी है और कई के चेहरे दुर्व्यसनों से काले पड़ रहे हैं। सभी की आँखें पादरी पर लगी हैं। पादरी की आवाज़ के सिवा और सभी शान्त हैं।

इस शान्ति में मंच पर जाने का दरवाज़ा, 'चर्र्र्' करता हुआ खुलता है और आवाज़ के साथ ही एक स्त्री सभी को दृष्टि-गोचर होती है। सभी उसे पहिचानते हैं। वह थी नोकालो की माता। क्षण-भर वह अपनी ओर लगी निगाहों से व्यस्त हो जाती है। फिर वह किसी के हाथ का स्पर्श अनुभव करती है और उसे बैठने के लिए कुर्सी बताई जाती है। उसके ध्यान में आ जाता है कि दौड़ जाकर बगल के कमरे से कुर्सी कौन लाया होगा!

पाठ के बाद भजनों का कार्यक्रम है। पहले पहल पादरी गाता है। वही

गीत जो उसने रात में सुना था। जब गीत हारमोनियम पर गाया जाने लगा, तो इतने आदमियों के बीच भी वह घुटने टेककर खड़ी हो गई।

गम्भीर और स्पष्ट ध्वनि में जर्मन कैदी वह भजन गा रहे हैं, तब उसी स्वर और ध्वनि में उस गीत के अंग्रेज़ी शब्द सुन पड़ते हैं। एक स्त्री के कण्ठस्वर में वह भजन अत्यन्त मधुर हो जाता है।

'A sure stronghold our God is still...'

सभी क़ैदी उन शब्दों और स्वरों में तन्मय हो सुनके लिए मौन हो जाते हैं। मात्र एक ही स्वर गिरजाघर में गूँजता है :

'A sure stronghold our God is still...'

किसी अनजान प्रेरणा से सभी की आँखें मुँद जाती हैं। सभी के हृदय एक ताल-स्वर में तरंगित हो उठते हैं। कमरे की दीवारें प्रतिध्वनित हो गई हैं। सभी मौन स्तब्ध खड़े हैं।

भजन पूरा होते ही मोना बैठ गई।

अब पादरी उपदेश देने खड़ा हुआ। मोना बीच-बीच में केवल एक-दो शब्द ही समझ पाती है। उसकी आँखें दरवाज़े की ओर घूमती हैं। ऑस्कर वहाँ खड़ा है। सिर उसका ऊँचा है और आँखों में प्रकाश।

'प्रभू, प्रभू, युद्ध बन्द कर!'

× × ×

फिर गर्मियाँ आ पहुँचीं। सूर्य उगता है और अस्त हो जाता है। पक्षी गाते और नाचते हैं। सृष्टि प्रशान्त भाव से खिलकर माधुर्य बिखरा रही है। परन्तु युद्ध जहाँ का तहाँ खड़ा है। उसका अन्त होता ही नहीं। वहाँ सृजन का आनन्द नहीं; परन्तु संहार की भयंकरता है। वहाँ हैं दुखियों की आहें, दर्दियों की चीखें। वे स्विस डाक्टर कहते थे कि अधिक हुआ तो दुश्मन एकाध बार और जोर लगायेगा। वह भी हो चुका। एक ज़बर्दस्त हमला दुश्मन कर चुके और अब तो तेज़ी से वे पीछे हटने लगे हैं।

छावनी के क़ैदी सभी समाचारों से परिचित रहते हैं। फ्रण्ट पर लड़ने-

वाली अपनी सेना के भविष्य के साथ उनके उत्साह और जोश का भी पारा उतरता-चढ़ता रहता है। पहले वे बहुत बढ़ चढ़कर बातें करते थे। सुननेवाले का हृदय काँप जाता। वे लोग कहते कि जर्मन सेना लन्दन पर हमला करने बढ़ रही है। वकिंघम-प्रासाद को गोलों से उड़ा दिया जायगा। सारे ब्रिटिश साम्राज्य को तहस-नहस कर अमेरिका पर हमला किया जायगा और यों सारी दुनियाँ जीत लेंगे; अस्तु अब उनकी बातें ढीली पड़ गई हैं। अब तो केवल जर्मनी की पराजय के ही समाचार आते हैं। उन्हें बड़ी चिन्ता है। लड़ाई का क्या होगा? शून्य ही? और दस वर्ष यदि इसी तरह बीत जायँ तो लड़ाई का मूल कारण ही लोग भूल जायँ।

मोना की जिज्ञासा बहुत ही तीव्र है। क्या सचमुच लड़ाई का अन्त हो रहा है? ऑस्कर क्या कहता है? क्यों वह मेरे पास नहीं आता? क्या वह यों तो नहीं सोचता कि उसके आने से मुझे तकलीफ़ होती है।

पर अन्त में ऑस्कर आता है। रात का समय है। मोना उसका कम्पित कण्ठ-स्वर खुले दरवाज़े के पास सुनती है।

'मोना!'

मोना को नाम लेकर उसने आज पहली बार पुकारा।

मोना के शरीर में एक हलकी कँपकँपी व्याप जाती है। पिता की मृत्यु के बाद आज पहली बार वह उसके सामने यों कभी खड़ी नहीं हुई थी।

अपना पूरा ज़ोर लगाकर मोना बोली—हो।

'समाप्त! मोना, समाप्त!'

'ऑस्कर, समाप्त क्या?'

'जर्मनी हार गया। हिण्डन्बर्ग की सेना टूट गई। बर्लिन में विद्रोह हो गया।'

'अर्थात् यह कि लड़ाई समाप्त हुई?

'होना ही चाहिए।

मोना का मन एक प्रश्न पूछने के लिए हो आया। वह पूछना नहीं

चाहती फिर भी पूछे बिना न रह सकी—आरकर, युद्ध बन्द होने से तुम आनन्दित होगे ? क्या सचमुच आनन्दित होगे ?

वह उसकी आँखों में निर्निमेष देखता रहता। फिर दृष्टि फिरा लेता है। 'मुझे मालूम नहीं' कहकर चल देता है।

आरकर चला जाता है। मोना उसकी पीठ की ओर देखती है। उसकी आँखों में एक दिव्य प्रकाश चमक जाता है ; परन्तु हृदय की धड़कन दुगुनी बढ़ जाती है।

१०

दसवीं तारीख, नवम्बर महीना, और उन्नीस सौ अठारहवाँ वर्ष।

ऊँचे कर्मचारियों के दफ़्तर में दौड़-धूप मच रही है। सवेरे से ही गवर्नर के कमरे में टेलीफोन की घण्टी बज रही है।

एक तरह से नजरबन्दियों की छावनी वीरान जंगल है। पवन पर चढ़-कर वहाँ अफवाहें उड़ा करती हैं। दोपहर तक तो सभी क़ैदी सच्ची बात जान जाते हैं। केसर को उसी के आदमियों ने गाड़ी से उतार दिया है। जर्मनी के प्रतिनिधि ने सन्धि की माँग पेश की है और मित्र राष्ट्र ने उसे उनसे सन्धिपत्र देकर हस्ताक्षर के लिये चौबीस घण्टे की मुहलत दी है। यदि हस्ताक्षर न हुए तो जहाँ तक सभी जड़-मूल से नष्ट हो जाय, लड़ाई चलती रहेगी। यदि हस्ताक्षर हो गये तो विद्युत् वेग से सारी दुनिया में समाचार पहुँचा दिये जायँगे। इस व्यवस्था के अनुसार ग्यारह बजे तक नोकालो में समाचार पहुँच जायँगे। डगलस बन्दरगाह के किले से उस समय बन्दूकें छूटेंगी, जहाजों की सीटियाँ बजेंगी और समस्त द्वीपखंड के गिरजाघरों की घड़ियाँ बज उठेगी।

मोना के हर्ष का वारापार नहीं। युद्ध की समाप्ति इतनी समीप है। जिस वस्तु के लिए वह इतनी प्रार्थनाएँ करती रही, वह अब प्राप्त होनेवाली

है। इस हर्ष में भी उसके अन्तर में चल रहा संघर्ष ऊपरी सतह को विह्वल कर देता है। उसे रोबी की याद आती है और मन में होता है बिलकुल ठीक! युद्ध का जैसा अन्त होना चाहिए था ठीक वही हुआ। जिन निर्दय शत्रुओं ने युद्ध की आग फैलाई और उसके प्यारे भाई को नष्ट कर डाला, उन्हें उचित सज़ा मिली है। परन्तु उसे जब अस्कर की याद आती तो उसके मन में होता है कि...जाने कैसा होने लगता है।

ऑस्कर कहाँ होगा?

सवेरे वह जब जागी तो रास्ते पर अभी तक दिये जल रहे हैं। पहली बात जिसने उसका ध्यान खींचा, वह एक गुनगुनाहट थी। ध्वनि छावनी की बगल से आ रही थी। अन्तिम बात जो उसे याद आई, वह कल रात बिस्तर में सोने से पहले की थी। क़ैदी इधर से उधर जा रहे थे। प्रेत छायाओं जैसे वह घूम रहे थे। बातें और केवल बातें कर रहे थे। सारी रात क्या उन्होंने बातें ही बातें की होंगी; सारी रात क्या वे फिरते ही रहे होंगे?

किसे मालूम? कल उगनेवाला दिन क़यामत ही का दिन हो। पिछली रात उनकी मातृभूमि पराजित हो गई हो, और वे देश-हीन जगत से अस्पृश्य और जगत् पर भार-रूप हो गये हों तो किसे मालूम?

सबेरा होता है; दीये बुझते हैं, मन्द प्रकाश में चलनेवाले लोग मोन को अस्थिर देहधारी जैसे लगते थे; परन्तु अभी सब कुछ शान्त है। छावनी के साधारण नियमों को जैसे वे भूल बैठे हैं। आज कोई कारख़ाने में नहीं गया। नाश्ते के समय घण्टी बजती है। परन्तु कई तो भूख को ही भूल बैठे हैं और खुले में फिर रहे हैं।

नवम्बर के अधिकांश दिनों जैसा ही आज का दिन भी है। स्वच्छ आसमान, ठंडी हवा और समुद्र पर चमकनेवाली किरणें वैसी ही हैं। आँगन में गाय जुगाली कर रही है, पहाड़ी पर भेड़ें चर रही हैं, प्रकृति वैसी ही शान्त और एकरस है।

मोना दूधशाला में गई; परन्तु आनेवाले कैदियों के मुरझाये हुए चेहरे

ह न देख सकी ; पहले अहाते में कैदी छोटे-छोटे झुण्ड बनाकर खड़े हैं।
ौर वे बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं। दूसरे अहाते के उजड्ड खलासी
ी मौन धारण किये खड़े हैं। उनके बीच में इस समय न तो गाली-गलौज
और न शोरगुल।

घण्टे के बाद घण्टे बीतते चलते हैं। कँटीले तारों की बाड़ के उस पार
ाले में जानेवाली गाड़ियों की कतार जैसी तोपगाड़ियों की जाती हुई कतार मोना
खती है। कर्क पेट्रिक के ध्वजदंड के पास कोई खड़ा हुआ कुछ कह रहा है।

साढ़े दस बजे तो जैसे सारी पृथ्वी निश्चल हो जाती है। छावनी की
ातुरता और उत्सुकता का पार नहीं। सभी की दृष्टि डगलस के किले की
ारदीवारी की ओर लगी है। उनके चेहरे प्रेत-जैसे हो गये हैं। जड़-मूल से
खड़े वृक्षों जैसी उनकी दशा हो रही है। कितने ही क़ैदी बेचैन घोड़े के
मीन पर पाँव ठोकने की तरह ज़मीन खोदा करते थे; परन्तु आज सब ओर
ीरव शान्ति है।

परन्तु आस्कर कहाँ है? वह दीखता क्यों नहीं?

अन्त में अफ़सरों के कार्यालयों में प्राण का संचार दीखता है। जेल-
ाधिकारी के तंबू से टेलीफोन की घण्टी का स्वर सुन पड़ता है। स्थिर हवा
ौर श्मशान जैसी शान्ति में वह उसके स्वर को जैसे सुनती है।

'हल्लो! कौन? सरकारी दफ़्तर?...हाँ...! हस्ताक्षर हो गये? हो
ाये! वाह!'

उसी समय वह पील के घण्टाघर में ग्यारह के डंके सुनती है और उसके
माप्त होने से पहले ही तोप छूटने की आवाज़ आती है।

अवश्य वह डगलस बन्दरगाह की दिशाओं से तलहटियों को चीरता
ुआ आता है और पहाड़ियों से टकराता और छावनी पर छाता हुआ समुद्र
र फैल जाता है।

दूसरे ही क्षण जहाज़ के भोंपे सीटी बजाते हैं। समीप और दूर से
गेरजाघरों के घण्टों की आवाज़ आती है। उसके पीछे-पीछे पील-निवासियों

के उन्मत्त आनन्द की ध्वनियाँ हैं। सबेरे से सभी चौक बजार में खड़े ही अन्तिम समाचारों की प्रतीक्षा करते रहे होंगे और इस समय हर्षातिरेक से पागल हो नाचते होंगे; परस्पर भेंटते होंगे और तालियाँ बजाते होंगे।

छावनी के पच्चीस हज़ार बन्दी निश्चेष्ट हो गये। उनका सर्वनाश हो गया; उनकी मातृभूमि हार गई थी।

पर यह भावना एक हास्यास्पद घटना से नष्ट हो जाती है। 'अमीर लोगों की बैरक' के किसी जर्मन क़ैदी का एक कुत्ता इस आकस्मिक शोर-गुल से चौंककर भौंकने और उछलने-कूदने लगा। बेचारे उस कुत्ते की घबराहट सभी के हँसने का विषय हो जाती है। लोग उसके सामने देख-देखकर हँसते हैं।

कुछ पलों बाद पहले नम्बर के क़ैदियों में जीवन आता है। एक दूसरे से हाथ मिला वे बधाई देते हैं। जो हो, लड़ाई बन्द हो गई, अब वे छोड़ दिये जायँगे। छूटेंगे, घर जाकर पत्नी-पुत्रों से और मा से मिलेंगे। यह आनन्द क्या कम है ?

दूसरे अहाते के खलासी भी यह विचार आते-आते पागल हो उठते हैं। वे ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर गाते हैं, हँसते हैं और ऊधम मचाते हैं। और आपस में एक दूसरे को धकियाते हैं। लुका-छिपी और खो-खो खेलते हैं। देश के साथ उनका सम्बन्ध ही क्या ? कौन पहिचानता है उसे ? जहाँ रोटी मिले, वही उनका देश है। सारा संसार और दूर-दूर तक फैला समुद्र ही उनका देश है।

मोना दूधशाला के दरवाज़े पर काँपती हुई खड़ी है। जिसके लिए उसने प्रार्थना की, प्रतीक्षा की और आशा बाँधी, उसे अपने सामने स्पष्ट देखती है—शान्ति ! सम्पूर्ण संसार पर शान्ति फैल रही है ! ऐसा अवसर तो जग ने पहले कभी न पाया होगा। और न कभी भविष्य में आयेगा। युद्ध की यह बर्बरता और पशुता किसी युग में खोजे न मिलेगी। जनता की मूर्खता, बुद्धिमानी, घृणा और ईर्ष्या का फिर से आवर्तन न होगा। वह नष्ट हो जायगी और फिर...और फिर...

अचानक उसे अपने पीछे किसी के होने का भाव होता है। वह समझ गई कि पीछे कौन है ; परन्तु वह पीठ नहीं फिराती है। क्षण-भर दोनों मौन रहते हैं और फिर हर्ष-विषाद के मिश्रित स्वर मोना के मुँह से निकलते हैं—अब तो तुम भी घर जा सकोगे। आस्कर, तुम्हें इससे प्रसन्नता तो होती ही होगी।

क्षण-भर मौन रहता है और फिर ऑस्कर धीमी काँपती आवाज़ में उत्तर देता है—नहीं मोना, तुम जानती हो कि मुझे आनन्द नहीं होता।

सहज ही मोना के हाथ पीछे चले जाते हैं और दूसरे ही क्षण कोई काँपते हाथ उन्हें दबाते हैं।

११

उसके बाद एक महीना बीत गया, परन्तु छावनी वैसी ही है। मोना ने तो सोचा था कि इस बीच कैदी छूट जायँगे ; परन्तु वे अभी वहीं हैं, सुना जाता है कि जेल अधिकारी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

छावनी में अब नियम-व्यवस्था नहीं रही है। अमुक कैदी इस अहाते का और अमुक उस अहाते का, ऐसा कोई स्पष्ट भेद भी अब नहीं रह गया है। जिसको जहाँ अच्छा लगता है, वहाँ जाता है। बन्धन केवल दो जगह है—बड़े दरवाज़े के आगे जहाँ भरी बन्दूकों का पहरा है और बाड़ के आगे जहाँ कँटीले तार हैं। बन्धन रखने की भी अब आवश्यकता नहीं रही ; क्योंकि किसी के भाग जाने का डर नहीं है। आज-कल में तो सभी छूटनेवाले हैं।

मोना को अब काम में काफ़ी मदद मिल जाती है। क़ैदी कृषि-घर में आते-जाते हैं और जितना कर सकते हैं, काम करते हैं। वे अपने स्त्री-बालकों की तस्वीरें उसे बतलाते हैं और अपनी बची पूँजी का हिसाब करवा लेते हैं।

अन्त में सन्धि-परिषद् बैठने और जेल अधिकारी को आवश्यक आज्ञाएँ मिलने के समाचार भी आ गये। रोज़ दो सौ के हिसाब से क़ैदी जहाज़ पर चढ़ाये जायँगे और छावनी बिखेर दी जायगी।

परन्तु इस छुटकारे के साथ एक शर्त भी रखी गई है। जिसे सुनकर मोना अचरज में डूब जाती है। एक अहाते के तीन कैदी घर के पास खड़े रहकर बातें करते हैं। मोना को आश्चर्य होता है कि बाते अंग्रेज़ी में ही नहीं, परन्तु ब्रिटेन के प्रान्तीय उच्चारों में होती है।

'ये सब लोग मेरे को जरमन केते हैं। पर के कैसे सकते हैं? इत्ता-सा पाँच बरस का था तो इंगलैण्ड आया और पांच पे मिसो पचास का होने आया। पाँच बरस का जरमन और चार वे पांच पंतालिस का इंग्रेज, तो भी मेरे को केते हैं तू जरमन! तेरे को जरमनी में भेजेंगे।' एक आदमी कह रहा था।

'अपना भी कुछ ठीक नहीं भैया पर तुम्हारे जैसा ही—' दूसरा बोलता है—मा की गोद में रहा तभी गिलासगो आया। जिन्दगी यहीं बिताई। विवाह यहीं किया। बच्चे यहीं हुए। दो लड़के लड़ाई में काम भी आ गये। इस दुःख में विचारी घरवाली भी चल बसी। आगे रामधणी ने पीछे सीतलामाता। और कहते हैं कि मैं परदेशी!

तीसरा कहता है—बाबा, अमेरी कुछ न पूछो। इस साली लड़ाई के पहले अमेरे को ये तक नहीं मालूम था कि अम कौन हूँ। लड़ाई हुई और सिरकार ने खबर दी कि तुम जर्मनी है। इसी द्वीप पर अम बड़ा हुआ हूँ। अमेरा जैसे को यहाँ मैजिस्ट्रेट बनाकर बिठाया है। अमेरा लड़का को देश और राजा के वास्ते तेरी जरूरत है कहकर लड़ाई में ले गया। वो जब जख्मी हो गया तो घायल का लड़ाई में क्या काम का है, ऐसा बोलकर वापिस कर दिया। और मजा ये है कि अमेरा जैसा को यहाँ मैजिस्ट्रेट बनाता है, अमेरा लड़का को अंग्रेज मानकर अमेरा ऊपर चौकसी करवाता है और अमेरे को, उसके बाप को जर्मनी बोलकर जेल में बिठा देता है। और छोकरा से हुकम करता है कि तुमेरे बाप को जर्मनी भेज दो क्योंकि वो परदेशी है। ये लड़ाई तो कुछ नई ही हुई है। अमेरा बुढ़ापा, जर्मनी के बारे में कुछ खियाल करने नहीं सकवा, वहाँ अम जाकर क्या करूँगा? छावनी

में आने से पहले बे मा का बच्चा को लेकर बखत काटता था। अब सरकार बोल देगा ये तो अँग्रेज है इसको जर्मनी नहीं ले जा सकेगा।

मोना का खून जम गया। इतने अत्याचार, इतनी पशुता, इतना ख़ून-खच्चर क्या काफ़ी न था, कि उन सबसे भयंकर आज इस मानवजाति की यों हँसी उड़ाई जाती है! जाति! जाति! ओ जाति! संसार के आधे युद्धों की ओ जननी! युद्ध की ओ मूल कारण, बता किस दिन वह चराचर विश्व का निर्माता ईसा के अनुयायियों के मुँह से इस दंभी शब्द को मिटा देगा।

जो बातें मोना ने सुनीं वे उसके अन्तर में गहरे घाव करने लगीं। यदि सभी जर्मन रक्तवाले क़ैदियों को जर्मन भेज दिया गया तो आस्कर को भी जाना पड़ेगा। तब फिर...?

उसी रात मोना का दरवाज़ा खटखटाया जाता है। आस्कर आया है। उसकी आँखें फट रही हैं और ओठ काँप रहे हैं।

'समाचार तो सुने ही होंगे?'

'हाँ, तुम्हें भी जाना पड़ेगा?'

'जाना ही पड़ेगा। जहाँ तक मेरा ख़याल है जाना ही पड़ेगा।'

× × ×

पहली टुकड़ी 'अमीरों की बैरक' से जानेवाली है। मालदार होने से उन्हें शर्तें एकदम स्वीकृत थीं। फिर चाहे 'पार्क लेन' में रहने को मिले या 'थर गार्डन' में इससे उन्हें क्या? वे तो चमकीली काली पोशाक, बढ़िया फरवाला कोट पहने और 'सूट केस' लिये आनन्द से कूच कर गये।

उसके बाद दूसरे अहाते के क़ैदियों का नम्बर आया, उनकी शान-शौकत अमीर लोगों की उपेक्षा कुछ जुदी ही थी। फटे जूते, तार-तार बिखरे कपड़े पहने, जेल के कारख़ाने में कमाई अपनी थोड़ी पूँजी के साथ बगल में सन का थैला दाबे रवाना होते हैं। जनवरी महीने की हड़कम्पी सर्दी में मुँह अँधेरे जब कि एक हाथ परे को नहीं देख सकता, जेल-अधिकारी की आज्ञा

पाते ही वे भेड़ों की तरह बरसते पानी में बाहर निकल आये। यहाँ आते समय गाने और चिल्लानेवाले लोग ये जैसे थे ही नहीं।

सिपाहियों का नया जमादार मोना को सुनाने लगा कि ये लोग जहाज़ पर ऐसे चढ़े जैसे फाँसी के तख्ते पर चढ़ रहे हों। एक कोने में सभी ठूँस-ठाँसकर बिठाये गये। जहाज जब रवाना हुआ तो वे द्वीप के किनारे की ओर ताक रहे थे।

'शैतान, पर बेचारे ग़रीब ! छावनी को नरक समझनेवाले यही छः महीने बाद यहाँ 'अन्नदाता, हुजूर' कहकर आने को तैयार होंगे।'

मोना ने पूछा—पर क्यों ये सभी जर्मन भेजे जा रहे हैं ?

'ऐसी ही आज्ञा है बहन ! कोई भी देश अपने दुश्मनों को रखने के लिए तैयार नहीं है। केवल थोड़े-से अपवाद हैं जब कि उन्हें रखना ही पड़ता है।'

'जैसे...'

'जैसे किसी जर्मन की पत्नी अंग्रेज हो और उनका व्यवसाय भी अंग्रेज़ी हो।'

'तो क्या उन्हें रहने देते हैं ?'

'मेरी ऐसी ही धारणा है।'

मोना का हृदय नाच उठा। उसके मन में एक विचार आया। आस्कर को यदि जर्मनी न जाना हो, तो वह यहीं क्यों न रहे ? नोकालो को ही क्यों न जोते-बोये ?

× × ×

दूसरे दिन तीसरी टुकड़ी रवाना हो जाने के बाद वह जमींदार के यहाँ जाने की तैयारी करती है। आधे वर्ष का हिसाब बाकी है और नवम्बर में ख़तम होनेवाले खाते के बारे में भी बात-चीत करनी है।

बहुत बढ़िया सवेरा है। आकाश भूरे रंग का हो रहा है। मीठी चमकीली धूप फैली है। बरफ के कण चमकने लगे हैं। नन्हे कोमल पीले फूल सिर उठा रहे हैं। लम्बे क़दम भरती हुई मोना चली जा रही है। वह सोच रही

है कि ज़मींदार क्या जवाब देगा। आज से चार बरस पहले उसके पिता ने पूछा था—लड़ाई समाप्त होने पर क्या होगा ? और ज़मींदार ने उत्तर दिया था—इस बात की तो चिन्ता ही मत करो। जहाँ तक तुम या तुम्हारी संतान जीवित है, कोई भी तुम्हें निकालने के लिए नहीं कहेगा।

जमींदार अपने घर के आगे ही मिल गया। उसने गिरजाघर जाने के कपड़े पहन रखे हैं। अभी ही पील से लौटा होगा। वहाँ उसे मजिस्ट्रेट की हैसियत से बैठना पड़ता है।

'लगान !' बोलते-बोलते वह मोना को घर में ले जाता है।

मोना उसे गिनकर सरकारी नोट देती है और वह भरपाई की रसीद लिख देता है। फिर जैसे छूटना चाहता हो, इस तरह से ले जाने के लिए खड़ा होता है। मोना बैठी ही रहती है और पूछती है—नये खाते के बारे में क्या होगा।

जमींदार बोला—आज यह सब रहने दो।

'आज ही तै हो जाय तो ठीक। उस पर मेरी और कितनी ही बातें निर्भर करती हैं।'

जमींदार उसकी ओर निर्निमेष दृष्टि से देखता है।

'फिर भी महोदय, अगर आपको यही उचित जँचता हो कि समय आने पर ही तै किया जाय तो अभी रहने दीजिए।

जमींदार दरवाजे तक पहुँच चुका था। वह उसे खोलने की तैयारी में था यह सुनकर वह मुड़ा और बोला—नहीं नहीं, फिर भी तो अभी ही कह दूँ। देखो, सच बात यही है कि उस जमीन में दूसरी ही व्यवस्था करनेवाला हूँ।

मोना के सिर पर जैसे बिजली टूट गिरी हो। वह एकदम बोल उठी—अर्थात् ? अर्थात आप वह किसी और को देना चाहते हैं ?

'यदि मैं देना चाहूँ तो क्यों न दूँ ? जमीन तो मेरी ही है न ? और मैं चाहूँ जैसा कर सकता हूँ।'

'परन्तु जब खेतों परछावनी बनी थी तो आपने मेरे पिता को बचन दिया था।'

'हाँ, हाँ, दिया था। परन्तु भोली छोकरी, हर समय परिस्थिति वैसी ही नहीं रहती। तेरे पिता गये, तेरे पिता का बेटा भी गया।'

'परन्तु उसकी पुत्री तो जीवित है। उसने ऐसा किया क्या जिससे...'

'मुझसे क्यों पूछती है बेटी कि उसकी लड़की ने ऐसा किया क्या !'

'तो भी साहब, मैं तो ऐसा कुछ नहीं जानती। बतलाइए मुझे मैं जानना चाहती हूँ।'

'यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो सुन। देख, मेरी मंशा यह है कि मेरी जमीन मेरी ही जातिवाला जोते ; शत्रु-पक्ष का नहीं।'

मोना स्तब्ध रह जाती है। उसका क्रोध उसके गले में ही रुँधा रह जाता है। वह सिसक-सिसककर रोने लगती है और घर की ओर दौड़ जाती है।

ऑस्कर इसी समय घर के आगे आकर खड़ा है। मोना का चेहरा देखकर उसने प्रश्न किया। आस्कर के बारे में बिना कुछ कहे वह सारी घटना कह सुनाती है।

'तुम्हारा कुटुम्ब तो वर्षों से नोकालो में रह रहा है।'

'चार पीढ़ियों से।'

'और नोकालो में ही तुम्हारा जन्म भी हुआ ?'

'हाँ।'

'ओह धिक्कार है इस न्याय पर, हज़ारों बार लानत है।'

मोना टूट जाती है। नोकालो अब उसका नहीं रहा। यह संधि ! क्या इसी घड़ी के लिए उसने सन्धि की प्रार्थना की थी ?

× × ×

दिन आते हैं और चले जाते हैं। रोज़ एक-आध टुकड़ी जहाज़ पर चढ़ती हुई दीख पड़ती है। देख-देखकर मोना का हृदय फटा जाता है इसी तरह ऑस्कर की भी बारी आयेगी। परन्तु उसके जाने के विचार-मात्र से ही मोना का सिर फटने लगता है। घर के सामने से ही कर्क पेट्रिक के गिर्जाघर का चक्कर लगा एक दिन वह भी सभी के साथ कूच कर देगा।

उसके मन में विद्रोह जागता है। नोकालो उसकी अतीव प्यारी जगह है। इस भूमि के साथ उसके अनन्त संस्मरण जुड़े हुए हैं। परन्तु द्वीप पर केवल यही तो एक जगह नहीं है। नवम्बर में उसने सुना है कि एक दूसरा खेत हाँकने के लिए दिया जानेवाला है। बहुत बड़ा होने के कारण वह साधारण किसान के लिए अनुपयोगी है। परन्तु मोना के पास जानवरों की कमी नहीं थी। छावनी की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए उसने अपनी सब पूँजी ढोरों पर ही खर्च की थी, इसी लिए आज उसके पास बहुत से ढोर हैं। यदि वह उस बड़ी ज़मीन को हाँकने के लिये ले ले तो फिर उसे वह धरती पड़ती नहीं छोड़नी पड़ेगी।

वह उस खेत के मालिक के पास जाने की तैयारी करने ऊपर गई ही थी कि नीचे उसने दरवाज़े पर घोड़े की टापें सुनीं और थोड़ी देर में कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा था। मोना आवाज़ पहचान गई। वह जान कार्लेट था। मोना को उसकी बेवकूफ़ी पर क्रोध हो आता है। भले ही टापता रहे, इस विचार से वह खिड़की में भी नहीं आई; परन्तु दूसरे ही क्षण उसके मन में आया कि चलो इसे बनाया ही जाय और वह बाहर आती है। जान कार्लेट आया तो सही, परन्तु घोड़े पर ही सवार है।

'कहो, क्या जान कार्लेट!'

'देख, मजाक नहीं है, तुझे सुनाने आया हूँ कि अगले नवम्बर से इस धरती का खाता मुझे मिलनेवाला है। अब मैं नोकालो को हाँकनेवाला हूँ इसलिए...'

'यह तो मैं बहुत पहले ही से जानती हूँ। परन्तु तुम्हारे इस धरती को हाँकने के साथ मेरा क्या सम्बन्ध?'

'मैं यह जानने आया हूँ कि तू अब इस ज़मीन पर कितने दिन तक और रहेगा?'

'जमीन का खाता जब तक मेरे नाम है तब तक। इसके सिवाय, महाशय, आप और क्या आशा रखते हैं?'

'परन्तु छावनी तो उससे पहले ही उठ जायगी, आदमी चले जायँगे और तब तू दूध का क्या करेगी ?'

'यदि तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, इन लोगों के आने से पहले जो करती थी वही।'

'तो तेरी यह आशा झूठी है पिछले ग्राहकों को फिर से पाने की आशा छोड़नी पड़ेगी।'

'क्यों ?'

'बस यों ही। सभी यही कहते हैं। पूछना हो तो किसे भी पूछ आना। अपने पुराने ग्राहकों को ही पूछ देखना।'

मोना की आँखें लाल हो आती हैं। हूँ ! तो मुझे भी परवाह नहीं है। चिन्ता नहीं मेरा दूध बिके या न बिके।

मोना घर में जाने के लिए घूमती है।

'ठहर, एक और भी बात है, उसे सुन जा। ज़मीन को जो कुछ नुकसान पहुँचा होगा, उसके लिए क्या करेगी ?'

'क्या ?'

'नियम की जानकारी तुझे होना ही चाहिए। सरकारी दस्तावेज के अनुसार जमीन हाँकनेवालों को आकस्मिक दुर्घटनाओं से होनेवाली हानियों की मरम्मत करवानी पड़ती है।'

मोना इस नियम को जानती थी, परन्तु अभी वह इस नियम को भूल ही गई थी।

पच्चीस हज़ार आदमी चार साल तक लगातार इन खेतों पर रहे हैं। ऐसी ज़मीन को फिर से जोतने-बोने लायक बनाने में ऐसा-वैसा खर्च नहीं होने का। थोड़ी हिचकिचाहट के साथ वह कॉलेंट से ख़र्च का अन्दाज़ा पूछती है, और वह एक बड़ी रकम बता देता है।

'इतना तो इस धरती का तीन साल का लगान हुआ।'—वह गहरी साँस लेती है सौर उसके चेहरे का रंग उड़ जाता है।

मोना बोली—इतना सब करने के बाद मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं बच रहेगी।

'उँह ! तो सरकार के पास से तुझे क्या कम रक़म मिली है ? यह साफ़ झूठ है कि तेरे पास कुछ बचा न हो। बहुत बड़ी थैली जमा कर रखी होगी।'

'नहीं ! कुछ नहीं है। मैंने अपना मुनाफ़ा ढोरों पर ही ख़र्च किया है।'

घोड़े पर से कार्लेट उसके सामने देखता है और अपने पाँव पर हाथ की पतली लकड़ी मारता हुआ, स्वर को लम्बा कर बोलता है—ठी...क, यह भी अच्छा ही हुआ। सभी कुछ जमीन ही पर तो हुआ है !

फिर काठी पर से कूद वह मोना के प स आ गया और जैसे समझाने के स्वर में मोना से बोला—देख मोना, कार्लेट को बिलकुल ही निष्ठुर मत समझ बैठना। इस जमीन पर जो कुछ जिस स्थिति में है, उसे वैसा ही छोड़-कर चली जा और फिर तुझे या मुझे कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता न रह जायगी।

मोना क्षण भर चुप रही। उसकी साँस ज़ोर से चलने लगती है। वह बोली—जान कार्लेट, क्या तुम मुझे अपने पिता के खेतों पर से एक दम नगी करके निकाल देना चाहते हो ?

'अरी छोकरी ! इसमें बुरा ही क्या है ? मैं नहीं, परन्तु एक कोई दूसरा भी यह चाहता है कि तू तेरा सर्वस्व छोड़कर उसके पीछे-पीछे परदेश चली जाय, क्यों झूठ कह रहा हूँ !'

सुनते ही मोना के रोंए खड़े हो जाते हैं। उसका मुँह मारे गुस्से से लाल पड़ जाता है। बिजली की तरह वह जॉन कॉर्लेट पर टूट पड़ती है—बदमाश, चोर उचक्का, बेईमान ! निकल यहाँ से ! बाहर निकल ! मेरी धरती पर से निकल !

जॉन कॉर्लेट एकदम घोड़े की पीठ पर उछल बैठता है ; और लगाम पकड़ते हुए बोलता है—कोर्ट तक घसीटूँगा, यों ही नहीं जाने दूँगा।

पास ही पड़ी हुई एक लकड़ी मोना उठाती है। 'बाहर निकल।'

कॉलेंट हवामें ऊँची उठती हुई लकड़ी को देखता है और उसे अपने पर पड़ने की पूरी सम्भावना देख घोड़े को एड़ मारता है। इस तरह वह तो लकड़ी की मार से बाल-बाल बच गया, परन्तु घोड़े के पुट्ठे पर वह पड़ी। घोड़ा अपने पिछले पाँव उछालकर भागा और थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गया।

वह सवार घोड़े की पीठ पर मुश्किल से अपने शरीर को सँभालता हुआ बोलता गया—तू और तेरा...

कुछ सिपाही उसे इस दशा में भागते देख खिल-खिलाकर हँस पड़े; परन्तु मोना का तो हृदय ही फट गया। वह भीतर के कमरे में भाग गई और सिसक-सिसककर रोने लगी। उसके प्यारे ढोर! और उन्हें बेचकर उसके लिए फिर नोकालो तो क्या सारे द्वीप में भी कहीं ठौर नहीं बचती।

रात में जब ऑस्कर आया मोना की आँखें सूजी हुई थीं।

'मुझे सब समाचार मिल गये। यदि मैं स्वतन्त्र होता तो उस बदमाश की एक भी हड्डी-पसली सलामत न बचती। यह मैं सह नहीं सकता कि मेरे लिए तुझे इतना सहना पड़े, मोना, तू मेरा विचार छोड़ दे।'

दोनों के बीच आज पहली बार प्रेम की ऐसी खुली स्वीकृति हुई। मोना क्षण-भर मौन रही और तब बोली—क्या तू यही चाहता है ऑस्कर, कि मैं तुझे छोड़ दूँ?

ऑस्कर ने जवाब नहीं दिया!

'तू यह चाहता है कि [illegible] के साथ तू भी चला जाय और मैं तुझे कभी याद न करूँ!'

ऑस्कर चुप रहा।

'ऑस्कर, मुझे जवाब दे!'

'मुझे न पूछ मोना! ईश्वर ही जानता है।' जवाब देकर वह चला ही गया।

१२

इसके बाद चौथी रात को ऑस्कर फिर आया। सदा की भाँति आज भी वह घर के बाहर ही खड़ा रहा, इसलिए मोना को देहली पर खड़े रह उससे बातें करनी पड़ती हैं। ऑस्कर की आँखें चमक रही हैं; वह उत्तेजित और उतावला-सा दीख पड़ता है।

'मुझे एक बात सूझी है।'

'क्या...?'

'इतने छोटे-से द्वीप के निवासियों का मस्तिष्क यदि कई बार विपरीत अवस्थाओं में संकुचित और भावनाहीन हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु अंग्रेज़ ऐसे नहीं हैं। अंग्रेज़ी प्रजा महान है। यदि तू मेरे साथ इंग्लैण्ड चले तो...!'

'इंग्लैंण्ड?'

ऑस्कर मोना को अपने विषय की सभी बातें सुनाता है। मोना ने उसके बारे में कभी सुना ही नहीं था। ऑस्कर एक कुशल इलेक्ट्रिक इंजीनियर था और नोकालो में पकड़कर लाये जाने से पहले वह मरजी में एक अंग्रेज़ी कम्पनी में वार्षिक एक हज़ार के वेतन पर प्रधान इंजीनियर था। युद्ध शुरू हुआ तब 'नालायक कैसर' के कारण उसमें से स्वदेश के कारण उसमें से स्वदेश के प्रति की समस्त सहानुभूतियाँ नष्ट हो गईं।

'ऑस्कर!'

'मैं सत्य कह रहा हूँ। उन दिनों में अन्दर ही अन्दर मारे शर्म के मरा जाता था। यदि मुझे सेना में भर्ती किया जाता तो अवश्य ही भर्ती हो जाता, परन्तु अंग्रेज़ ऐसा करने के लिए तैयार नहीं थे। उलटे इन लोगों ने तो मुझे छावनी में कैद कर दिया! जिस कम्पनी में मैं काम करता था, उसे मेरी अनुपस्थिति में बेहद नुकसान होने की संभावना थी, इसलिए उसने मुझे छुड़ाने की भरसक कोशिश की, परन्तु सभी व्यर्थ हुआ। अन्त में कम्पनी के मैनेजर ने मुझसे कहा—ऑस्कर, तुम्हारी कमी तो पूरी की नहीं जा सकेगी,

परन्तु युद्ध समाप्त होने के बाद यदि तुम्हारी इच्छा हो तो आ सकते हो। अपनी नौकरी को स्थायी ही समझना।

'सच ?'

'सच, मोना ! वह कितना भला था। यदि इतना भला आदमी भी अपनी बात न निबाहे तो मानव-जाति पर से मेरा विश्वास हट जाय। मैं...मैं...'

'क्या ?'

'मैं उसे लिखने को सोच रहा हूँ कि मेरी मुक्ति का समय आ गया है। और यदि तेरी सम्मति हो कि तू मेरे साथ...'

मोना की आँखें गीली हो जाती हैं। यह देखकर ऑस्कर चुप हो गया। फिर गद्-गद् कण्ठ से बोला—मोना, तुझे द्वीप छोड़ने के लिए कहने में मुझे दुःख होता है।...

'नहीं, इससे अधिक दुःख की बात तो यह है कि द्वीप स्वयं ही मुझे धक्का देकर निकाल रहा है।'

'तो क्या तू मेरे साथ इंगलैण्ड चलेगी ?'

'हाँ...', मोना ने जवाब दिया।

ऑस्कर पत्र लिखने के लिए वहाँ से चटपट चल दिया।

मोना उस सप्ताह भर आनन्दित रहने का प्रयत्न करती है, परन्तु कई शंकाएँ उसके मन में उठती हैं और वह घबराती है।

एक दिन जेल अधिकारी और गवर्नर की बात थोड़ी-बहुत वह सुनती है। दोनों मकान के नीचे खुले में छावनी को उठा कितना सामान कहाँ और कैसे भेजा जाय, इस विषय पर बातचीत करते हैं। बातों ही बातों में सन्धि-परिषद् की बातें आ निकलती हैं।

जेल अधिकारी ने कहा—मेरा तो अनुभव है कि सन्धि के प्राथमिक वर्ष युद्ध के अन्तिम वर्षों से भी ख़राब होते हैं। कितनी करुणाजनक स्थिति है।

गवर्नर ने उत्तर दिया—यह तो ऐसा ही चलता रहेगा। आप ही

बतलाइए यदि हम अपने देश-द्रोहियों पर विश्वास कर लें तो हमसे बढ़कर और कौन मूर्ख होगा ? जिन जर्मनों को हमने दबा दिया अब उन्हें सदा के लिए ऐसे ही दबे रहने देने में कुशल है।

'मैं आपके मत का नहीं हूँ। मैं तो मानता हूँ कि युद्ध के दिनों में जिस तरह हम अन्तिम घड़ी तक लड़ने का विचार रखते हैं, उसी तरह शान्ति-काल में युद्ध की परछाईं तक नहीं पड़ने देनी चाहिए। क्षमा-भावना होने पर ही यह सम्भव हो सकता है।'

'युद्ध के प्रारम्भिक दिवसों में जब कि मैं सरहद पर था, एक करुण घटना घट गई। एक जर्मन घायल होकर हमारे बीच आ गया। उसकी हालत बहुत शोचनीय थी। जब वह पूरी तरह होश में था, बोला—कर्नल ! (उन दिनों मैं सेना में कर्नल था) विचित्रता तो देखो ! यदि हम खाइयों में मिलते तो तुम अपनी मातृभूमि की खातिर और मैं अपने पितृदेश की ख़ातिर एक दूसरे को मारने के लिए तत्पर हो जाते। फिर भी यहाँ तुम मुझे भ्रातृ-देश की ख़ातिर बचाने का प्रयत्न कर रहे हो।

'ऐसी ही बातें वह किया करता, और जब उसका अन्तकाल आ पहुँचा, उसका सिर मेरी छाती पर था और मेरी भुजाओं में उसका शरीर सोया था। मुझे यह कहते ज़रा भी लज्जा नहीं आती कि मैंने उसका कपाल चूमा था।'

मोना का सारा अंग झनझना उठा। भ्रातृदेश ! किसका भ्रातृदेश ! तुम्हारा नहीं, मेरा नहीं, परन्तु हमारा भ्रातृदेश ! कौन-सा है वह देश ? आनेवाले कल समस्त जगत ही भ्रातृदेश हो रहेगा। और तब वह और आस्कर लिवरपुल में बिना डरे सुख और प्रेम-पूर्वक जीवन बिता सकेंगे।

उसी रात ऑस्कर फिर आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और ओठ काँपते थे। उसके मुँह से शब्द नहीं निकल पाते। उसने एक काग़ज़ सामने रखा। वह मरज़ी की इञ्जिनियरिंग कम्पनी का पुत्र था।

'श्रीमान्, दसवीं तारीख को हमारे स्वर्गीय व्यवस्थापक के नाम, कि जो युद्ध में काम आये, लिखा आपका पत्र मिला। हमें दुःख के साथ लिखना

पड़ता है कि आपकी स्थायी जगह पर हमें एक दूसरा व्यक्ति मिल गया है, जिसका काम पूर्ण सन्तोषजनक है। यदि यह खाली रही होती तो भी हम उसे आपको दे सकने में असमर्थ थे, क्योंकि जर्मनों के विरुद्ध यहाँ जो भावना लोगों में फैल रही है, उसे देखते हुए कोई भी अंग्रेज़ मज़दूर आपके साथ काम करने के लिए तैयार नहीं होता। और आपका अंग्रेज़ पत्नी के साथ विवाह करना तो उनकी घृणा-भावना को घटाने की अपेक्षा बढ़ानेवाला ही होगा। आपका ही...'

ऑस्कर बोला—इसे माना ही नहीं जा सकता।

'युद्ध! युद्ध! कब इस युद्ध का अन्त आयेगा?'

'लगता है कि कभी नहीं।'—दाँत पीसते हुए ऑस्कर चला गया।

हृदय पर एक बोझ रखे मोना बिस्तरे पर पड़ जाती है। अंग्रेज़ जर्मनों के साथ काम करने को तैयार नहीं। इंगलैण्ड में भी उनके लिए स्थान नहीं। फिर भ्रातृदेश, भ्रातृदेश...परन्तु यह तो केवल एक छल है!

× × ×

दूसरा सप्ताह भी बीत चला। छावनी खाली करने का काम नित्य ढाई सौ क़ैदियों को जहाज़ पर चढ़ाने के हिसाब से चालू है। चौथे और दूसरे अहाते की बारी है। तीसरे कम्पाउण्ड का क्रम अन्तिम रखा गया है। क्योंकि उसमें आस्कर जैसे कई इञ्जिनियर हैं जो छावनी की बिजली आदि आसानी से बिक सकनेवाली चीज़ों को खोलने में काम आ सकेंगे। पर अन्त में उनकी भी बारी आनेवाली है। और फिर...फिर क्या?

एक सप्ताह बाद ऑस्कर फिर मिलने आया। उसके कपाल पर सल पड़े हुए हैं। और आँखें गड्ढे में घुस गई हैं। फिर भी उसका उत्साह अपार है।

'मोना, मुझे अब कहीं सूझा कि हमें क्या करना चाहिए...'

'क्या?'

'अंग्रेज़ भावहीन और असहिष्णु हो सकते हैं; परन्तु जर्मन ऐसे नहीं हैं।'

'जर्मन ?'

'मेरे भाइयों को तो मैं पहचानता हूँ न ? वे राक्षसों और हत्यारों की तरह युद्ध-भूमि पर लड़ते रहे हैं। मैं इसे स्वीकार करता हूँ, परन्तु लड़ाई समाप्त होने पर वे दुश्मन को दोस्त समझते हैं।'

'तो, अब तुम्हारा क्या विचार है ?' मोना ने पूछा; परन्तु जवाब तो वह जानता ही है।

'यदि तुझे आपत्ति न हो, यदि तू चल सके तो मेरे साथ जर्मनी...'

'जर्मनी ?' मोना को लगा जैसे धरती घूम रही है।

'मोना, तुझे तेरा देश छोड़ने के लिए कहने में निरी पशुता है, निर्लज्जता है ; परन्तु तू ही न कहती थी कि यह द्वीप धक्का देकर निकाल रहा है।

मोना ज़बरदस्ती उमड़ते आँसुओं को रोकती है।

'ऑस्कर, ऑस्कर ! यह असम्भव है। देश छोड़ना ? नहीं हो सकता ऑस्कर ! यह विचार ही असह्य है।

क्षण-भर ऑस्कर चुप रहा, फिर काँपती हुई आवाज़ में बोला—मोना, ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुझे लेशमात्र तक़लीफ़ न होने दूँगा। तेरी प्रत्येक इच्छा पूरी करूँगा। मोना मेरे साथ चलकर तुझे अफ़सोस नहीं करना पड़ेगा। क्षण-भर के लिए भी तुझे पछताना न पड़ेगा मोना !

'पर मैं किस तरह से आ सकूँगी ?'

'जिस तरह दूसरी स्त्रियाँ जाती हैं। इतने सारे लोग अपनी जर्मन पत्नियों को अपने साथ नहीं ले जा सकता ?'

'पत्नी ?'

'हाँ, पत्नी ! गिरजाघर का पादरी हमारा विवाह कर देगा।'

'पादरी ?'

'हाँ, आधी रात में या बड़े सवेरे मेरे दो साथियों की साक्षी में।'

'तो क्या, तुमने उसके साथ बात-चीत भी कर ली है ?'

'हाँ, उसने कहा है कि लुथरन गिरजा में लुथरन पादरी द्वारा कराया गया विवाह जर्मनी में जायज होता है। फिर तो जर्मनी तुझे अपनी मान लेगा।'

'परन्तु, फिर हम कहाँ...कहाँ जायँगे ?'

'मेरी मा है।'

'तुम्हारी मा के पास ?'

'हाँ-हाँ, और कहाँ ? अहा, कितनी भोली हैं मेरी मा ! भाग्यशालियों को ही ऐसी माताएँ मिलती हैं। जब से मैं यहाँ आया कोई ऐसा सप्ताह नहीं कि उसकी चिट्ठी न आई हो। और जब हम उसके पास पहुँचेंगे तो वह मारे खुशी के पागल हो जायगी।'

'परन्तु ऑस्कर, तुम्हें पूरा विश्वास है कि...

'कि वह तुझे स्वीकार करेगी या नहीं ? वह अवश्य स्वीकार करेगी। बेचारी अब तो मौत के समीप पहुँच रही है ; मेरी बहन की मृत्यु के बाद से वह बिलकुल एकाकिनी हो गई है। अब तो हम विवाह कर लें, फिर मैं लिखूँ कि मा, चिन्ता मत करना। तेरी एक बेटी गई तो दूसरी बेटी मैं सेवा करने और तुझे परेशान करने ला रहा हूँ।'

'पहले ही लिख देखो, ऑस्कर !'

'अवश्य। यद्यपि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है फिर भी जैसा तू कहे। और यदि वह तुझे अपने लिए नहीं स्वीकार करे—जिसकी मुझे ज़रा भर अन्देशा नहीं है, तो भी मेरी ख़ातिर तुझे अवश्य स्वीकार कर लेगी।'

'ठीक। यदि उनका उत्तर अनुकूल हुआ तो क्या तुम जाओगे ?'

'हाँ।'

'यदि ईश्वर की कृपा हुई तो हम इस तरह सुखी हो सकेंगे। इस सुख के योग्य बनने में मैंने कितना सहन किया है !'

ऑस्कर जाता है। प्रकाश से निकल वृक्षों के अन्धकार में, जब तक वह नहीं छिप गया मोना उसे देखती रही। फिर कोठरी में जा अपना मन सम-

झाने का प्रयत्न करती है; परन्तु उसे चैन नहीं मिलता। अन्त में उसे एक मज़ेदार बात याद आ जाती है। उसके पिता जब बिस्तर पर पड़े हुए थे तब वह पास बैठकर उन्हें सुनाया करती थी—

'जहाँ तू जायगा, मैं भी जाऊँगा। तेरे आदमी मेरे भी होंगे। तेरा ईश्वर मेरा भी ईश्वर होगा।'

इसके बाद कई-कई दिनों तक काम करती हुई भी मोना इसी पद को फिर-फिर गाया करती है। और रात में जब वह सोती है तो ऑस्कर के साथ अपने भावी जीवन के स्वप्न देखती है। उसे अपनी मा का तो इतना ही स्मरण है कि वह वर्षों बिस्तरे पर पड़ी रही। इसलिए वह अपने आप को ऑस्कर की माता की सेवा करने में संलग्न है। वह बेचारी बूढ़ी हो गई है और सेवा कर सकने योग्य एक-मात्र लड़की को खो बैठी है।

'परन्तु क्या मैं वहाँ खाली हाथ ही जाऊँगी?'

उसे जान कार्लेट की बात याद आती है। कोर्ट में घसीटे जानेवाली धमकी याद आती है। वह सोचने लगी कि केवल मरम्मत में इतने जानवर देना मूर्खता है। किसी न किसी की सलाह लेनी चाहिए।

× × × ×

'बहन, उस आदमी की बात सच है।'—मोना जिस वकील से सलाह लेने गई थी, वह बोला।

'तुम्हारे पिता ने सरकार के साथ इस तरह का इकरार करने में ही गलती की थी। केवल दो ही आदमी इसमें सहायता दे सकते हैं। एक ज़मींदार और दूसरा नया किसान।'

'तब आप अब मुझे क्या सलाह देते हैं?'

'सभी जानवर बेच डालो। मरम्मत के ख़र्च का बराबर अन्दाज़ करवाओ। जो कुछ देने का निकलता हो, दे डालो और बँची पूँजी से नये सिरे से काम-काज शुरू करो।

'आप ही यदि यह सब व्यवस्था करवा देंगे तो कृपा होगी।'

मोना प्रसन्न मन से नहीं, फिर भी निश्चिन्त होकर इतनी बातचीत करके उठी।

वह घर पहुँची। कपड़े बदले। आँगन में गायों को दुहने गई। सर्दी का सन्ध्याकालीन सूर्य दरवाज़े की राह गुपचुप झाँका कि ऑस्कर आया। उसका रुई जैसा सफ़ेद चेहरा देखकर मोना के हृदय में 'धाड़' पड़ती है।

'क्यों, क्या खबर है?'

हँसने का विफल प्रयत्न करता और काग़ज़ आगे बढ़ाता हुआ वह बोला—सोच ले, क्या होगा?

'मा का पत्र है?'

'पढ़ ले न!'

'क्या वह मुझे अपने पास रखने के लिए तैयार नहीं?'

'अंग्रेज़ी में ही लिखा है। पढ़ ले, तेरे लाभ की ही बात होगी।'

मोना पढ़ती है:

'ऑस्कर, तेरा पत्र पढ़कर मुझे अतिशय दुःख हुआ। मेरा पुत्र एक ऐसी स्त्री के साथ विवाह करता है, जो अंग्रेज़ है। अंग्रेज, जिन्होंने तेरी ख़ूबसूरत बहन को मार डाला। मेरी ज़िन्दगी में मैं नहीं जानती कि इससे अधिक और कोई करारी चोट आयगी...।'

इसी तरह की बातों से सारा पत्र भरा हुआ था। यदि ऑस्कर किसी अंग्रेज़ पत्नी को जर्मनी में लायेगा तो उसकी अपनी मा ही उसे घर में घुसने न देगी। और यदि उसने घर में आने दिया तो सारे शहर में बदनामी होगी और लोग उनका बहिष्कार कर देंगे। सब जगह ऐसा ही वातावरण है। जर्मन अंग्रेज़ों से घृणा करते हैं। युद्ध में अंग्रेज़ों ने जिन अमानुषी उपायों से काम लिया और सन्धि की शर्तें जितनी निर्मम हैं उससे उनके प्रति घृणा की भावना शतगुनी बढ़ जाती है। उन लोगों ने खाद्य-पदार्थों की आमद रोककर हज़ारों बालकों को भूखों मरने दिया। खलासियों को जहाज सहित डुबो दिया। उड़ाकों को विमान सहित जला दिया। अब युद्ध-दंड के भयंकर बोझ

से जर्मनी को पीस देना चाहते हैं। जर्मनों की भिखारियों से भी गई-बीती हालत बना देना चाहते हैं। तो कोई भी सच्चा जर्मन कैसे इस अंग्रेज़ जाति के किसी भी व्यक्ति को अपने घर में घुसने दे सकता है।

'उस अंग्रेज़ स्त्री से कह देना कि यदि वह तुमसे विवाह करेगी तो उसकी हालत कोढ़ी से भी अधिक बुरी हो जायगी। उसे कोई छुयेगा तक नहीं। वह कभी मेरे घर की देहली लाँघ न सकेगी। ऑस्कर, बेटा, यह कैसे बतलाऊँ कि मैं तुझे कितना प्यार करती हूँ। दिन-रात तेरी ही प्रतीक्षा किया करती हूँ। अब तो मेरी उम्र आ लगी है। और कितने साल जीने की हूँ! तू ही मुझ डूबती का सहारा है।...परन्तु तू एक अंग्रेज़ स्त्री से विवाह करता है, इस समाचार की अपेक्षा मैं यह सुनना पसन्द करूँगी कि तुझे काले साँप ने डस लिया कि मैं निपूती ही हूँ।'

पत्र समाप्त कर मोना ऊँचा देखती है। उसके सामने भयानक हास्य करता हुआ ऑस्कर खड़ा है।

'चार-चार साल तक जेल की सज़ा काटने के बाद यही सज़ा योग्य है। क्यों है न? वह फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

'मुझे तो यहाँ तक विश्वास था कि मेरी मा मेरे लिए सब कुछ सहन करने को तैयार है। परन्तु...' वह फिर पागल की तरह हँसा। वह ज़ोर ज़ोर से हँस रहा है।

'लड़ाई ने कितना परिवर्तन कर डाला! लड़ाई मा के हृदय को नष्ट कर देती है। सभी जर्मन पागल ही हो गये हैं कि क्या? अंग्रेज़ बालकों को भूखों मारते हैं। अंग्रेज़ों ने मल्लाहों को डुबो दिया। अंग्रेज़ों ने विमानों और उनके चालकों को जला दिया। और तुमने क्या नहीं किया। अपने कृत्यों को तो याद करो। युद्ध। यह युद्ध! ओ जर्मन जाति, तू भी बुद्धि खो बैठी?'

ऑस्कर फिर हँसता है। मोना का दम घुटने लगा।

'वह बूढ़ी है। अधिक जीने की नहीं। और मैं संसार में एक निराधार

कन्या से विवाह कर उसे अपने साथ ले जाना चाहता हूँ, मात्र इसी कारण से...'

परन्तु एकाएक उसकी हँसी बन्द हो गई। वह धाड़ें मार-मारकर रोने लगा। वह बोल नहीं सका। मोना की आँखों से भी आँसू झरने लगे। उसका हृदय गद्गद् हो गया। वह बोली—ऑस्कर, सभी दोष मेरा ही है। मैं तुम्हारे—मा-बेटे के—प्रेम में अन्तराय होकर आई हूँ। तुम अकेले ही घर जाओ। उस वृद्धा का हृदय मत तोड़ो। तुम अपने देश जाओ। मा के पास जाओ।

ऑस्कर अपना ग़मगीन चेहरा उठाकर ऊँचे स्वर से बोला—देश? माता? जो दयाहीन है, जो बुद्धिहीन है, वह देश? ऐसी माता? न मेरा कोई देश है, न कोई मेरी माता है। घर जाना? कैसा घर? किसका घर? नहीं इस जीवन में तो कभी नहीं।

दूसरे ही क्षण पीठ फिरा, मोना उसे रोके उससे पहले ही, वह लम्बे डग भरता हुआ दूर निकल जाता है।

अकेली होते ही वह नित्य की भाँति काम में मन लगाने की कोशिश करती है। ढोर दुहने हैं। दाना देना है। बाक़ी बचे तीन जहाज़ों के आदमियों को दूध देना है। परन्तु इस सब से निपटने के बाद सिवा परिस्थिति सुलझाने के और उसके पास अन्य कोई काम नहीं रह जाता है।

ऑस्कर की मा उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं, इसलिए जर्मनी के द्वार भी उनके लिए बन्द हैं। वह ऑस्कर को और ऑस्कर उसे चाहता है। वे एक ही जाति और राष्ट्र के नहीं। उनके देश युद्ध में परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध लड़े थे, इसी लिए अछूतों के समान उन्हें जहाँ-तहाँ से धकेला जाता है। इस विशाल पृथ्वी पर उनके लिए कहीं भी स्थान नहीं।

ऑस्कर! उसे कितनी वेदना भुगतनी पड़ रही है! मोना विचारती है।

१३

चौथे और पाँचवें अहाते के आदमी, तीन-चौथाई सिपाही और अधिकांश अधिकारी चले गये। आज कोई नया आदमी जेल का काठ-कमण्डल ख़रीदने आया है।

लड़कियों के उन मकानों को एक नज़र देख आ वह कँटीले तारों की बाड़ के पास आया और एक चबूतरे पर चढ़कर सब कुछ देखता है। इसी समय मोना दुग्धशाला के दरवाज़े पर आती है।

आगन्तुक अमेरिकन है। स्वभाव से विनोदी और ख़ूब बोलनेवाला है। बात शुरू करने के लिए हँसकर माफ़ी माँगता हुआ वह पूछता है— कृषि-घर तो नहीं ही बेचा जायगा न ?

'मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती, महोदय! आप जमींदार से पूछिएगा।'

'तुमसे नहीं ? इस समय तो इस खेत पर तुम्हीं ही हो न ?'

'जी हाँ, परन्तु मैं तो अब छोड़ देनेवाली हूँ।'

'हाँ, हाँ, याद आया। तुम्हारे विषय में तो मैंने कुछ सुना भी है और यहाँ से तुम कहाँ जाओगी ?'

'अभी तक तो कुछ भी निर्णय नहीं कर सकी हूँ।'

अमेरिकन उसे ऊपर से नीचे तक एक निगाह में जैसे नापता-सा देख लेता है फिर हँसता हुआ कहता है—हमारे देश में चलो, बहन! हमारे वहाँ अनेकों जातियों के स्त्री-पुरुष हैं। तुम भी उनमें चलकर सम्मिलित हो जाओ।

मोना चौंकती है। मजाक में ही कहा गया हो फिर भी उसे इसमें से विचारणीय सामग्री मिलती है। अमेरिका! विभिन्न जातियों का मिलन-गृह! संसार की सभी जातियाँ वहाँ बसी हुई हैं। सभी को मिलकर शान्ति-पूर्वक रहना चाहिए, नहीं तो जीवन असह्य हो जायगा।

रात में जब ऑस्कर आया तो वह अमेरिकन आगन्तुक की बात उसे सुनाती है। और उसकी आँखों से प्रकाश की दीप्ति फूट निकलती है।

'क्यों नहीं ? हर्ज ही क्या है ? वह महान स्वतंत्र देश ? इस भयंकर यूरोप से बचकर विश्राम पाने के लिए कितना मधुर स्थल है वह !'

फिर भी एक कठिनाई है। उसने सुना है कि एक बार जेल हो आनेवाला व्यक्ति अमेरिका में प्रवेश नहीं कर सकता। ऑस्कर तो चार साल तक नज़र क़ैद रह चुका है। अमेरिका उसे अपनी धरती पर चढ़ने देगी ? गिर्जाघर के पुजारी से पूछ लिया जाय ?

दूसरे दिन प्रसन्न मुख ऑस्कर वापस आया। 'कोई हानि नहीं होगी मोना ! अमेरिका की जेल में नज़रकैद होती ही नहीं।'

'किन्तु एक दूसरी कठिनाई भी है। अमेरिका में जाने के पहले मनुष्य के पास कुछ रकम होना चाहिए जिससे कि वह नये देश पर बोझ रूप में न पड़ जाय।'

'यह रकम अधिक तो नहीं, पर मेरे पास इतनी भी नहीं। यदि मैं स्वतंत्र होता तो यहीं रहकर इतने समय में चार हज़ार पौंड कमा सकता। किन्तु कैम्प के बाहर निकला तो मेरे पास केवल पचास ही रहे होंगे।'

'इसमें कठिनता जैसी तो कोई चीज़ नहीं, ऑस्कर ! थोड़े ही समय में यह सारा नीलाम होना है और उसमें से देना भरने के बाद तो मेरे पास, हम दोनों को पूरा हो जाय, इतना बच जायगा।'

नीलामी के लिए अगला दिन है; मोना ने प्राणियों को इकट्ठा कर-करके घर में ला खड़ा किया—चरने छोड़ी हुई गायें, बछड़े और बें-बें करतीं भेड़-बकरियाँ। टेकरी पर उसका छोटा-सा झुण्ड जो उसने चरने छोड़ दिया था, उसे वह लेने गई। झुण्ड को सारे चौमासे चरने दिया था। सप्ताह में दो बार वह वहाँ खुद जाकर बाली दे आती थी। आशा की एक किरण फूटी, उसका भविष्य प्रकाशमय हो गया मालूम हुआ। वह मन ही मन में गाने लगी और चरागाह में से रास्ता बनाती ऊपर चढ़ने लगी।

ठीक ऊपर 'कोरीन्स फॉली' की मीनार के पास पहुँची। वहाँ अचानक उसने एक प्राणी का छींकना सुना। और दूसरे ही क्षण टापें बजाते तीन

जानवर नज़र पड़े। एक तो उसका अपना ही छोटे गधे के बराबर मेढ़ा था और दूसरे दो बड़े और काले नाथे हुए मेढ़े थे। जॉन कॉलेंट के वे दोनों मेढ़े थे। मोना दोनों को पहचानती है। उसके चरागाह पर दोनों को खुला छोड़ दिया गया था। यह वह समझ गई।

कँपकँपी पैदा करनेवाली लड़ाई होने लगी। छोटा मेढ़ा खून में सराबोर हो गया और भागने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु बड़े मेढ़ों ने दोनों तरफ़ से उसे दबा लिया था, इसलिए उससे भागा न गया। वह दाहिनी तरफ़ दौड़ता तो उस तरफ़ से उस तरफ़ का मेढ़ा उसे सींगों से टक्कर मारकर बाईं तरफ धक्का मार देता और जब वह बाईं तरश भागता तो उस तरफ दूसरा मेढ़ा उसे सींगों की टक्कर मारकर दाहिनी तरफ भगा देता। इस तरह दौड़-दौड़कर वह किंकर्त्तव्य-विमूढ़ जैसा हो गया। आगे-पीछे भी उसके लिए रोक थी।

आख़िर मेढ़ा एक बार स्थिर खड़ा हो गया। उसकी फटी आँखों से चिनगारियाँ चमकने लगीं। उसका मुँह ज़ोर-ज़ोर से साँसें छोड़ता टेकरी की तरफ़ झुकने लगा।

सामने ही मीनार थी। मीनार के पास एक छोटे क़ब्रस्तान की बाड़ थी। इस बाड़ के दूसरी तरफ़ सीधी नोकदार टेकरी थी और उसकी तलहटी में नीचे गहरा समुद्र लहराता था।

मेढ़ा इस तरफ़ देखकर समुद्र की आवाज़ को कुछ देर तक सुनता रहा और फिर ज़ोर से एक छलाँग लगाई और पिछले पैरों पर खड़ा होकर सामने खड़े अपने प्रतिद्वन्द्वी के सिर से सींग भिड़ा उसके सिर पर अगले पैर रखकर उसे लाँघ गया और वहाँ से फिर क़ब्रस्तान के घेरे के दूसरी तरफ़ मेढ़ा ज़ोरों से साँसें छोड़ते और फटी आँखों से स्तब्ध होकर इस तरफ़ देखने लगा और फिर वहीं पर, मानो कुछ हुआ ही हो, वह चरने लगा।

लड़ाई जब तक जारी रही, तब तक मोना सुधबुध खोकर खड़ी रही, और समाप्त होने पर वह ठिठक गई। किसी के आने के आशा में उसने नज़र घुमाई और ऑस्कर को बगल में खड़ा पाकर वह चकित हो गई।

'भयानक।'

'भयानक।'

दोनों के मुख से एक ही बात निकली।

ऑस्कर मीनार पर इलेक्ट्रिक का सम्बन्ध तोड़ने को चढ़ा था, वहीं से उसने सारी घटना देखी थी।

'हिंसक निर्दयता की इससे अधिक हद ही क्या?' कहते-कहते ऑस्कर के दाँत बजने लगे, 'इतनी नीचता—'

मोना उसकी तरफ़ एकटक देखने लगी। फिर दोनों धीरे-धीरे टेकरी से उतर गये।

नीलाम का दिन आ गया। जेल-अधिकारी ने छावनी की हद में, नीलाम होने की मंजूरी दे दी। यह उसका मोना के प्रति आख़िरी कार्य था, अगले दिन तो उसे वहाँ से चले ही जाना था। मोना ने मोटर में जाते उसे देखा। शहरी पोशाक में वह पहचान में नहीं आता था; कृषि घर के सामने से गुज़रते हुए उसने अपना हैट उतारकर मोना से विदा ली। अणु-अणु से अंग्रेज़ सच्चा है!

जब ग्यारह बजने को होते उस समय खान के पास खूब हो-हल्ला मचा रहता। जेल-अधिकारी के हुक्म से सिपाही मोना की सहायता करने खड़े हो गये। वे बाड़ में से तन्दुरुस्त प्राणियों को बाहर निकालकर लाते और बछड़े और भेड़ों के झुण्ड में रखते। बें-बें और शोरगुल गूँजने लगा; मोना ने सब कुछ सुना, और उससे यह दृश्य देखा नहीं गया। वह घर में दरवाज़े के पास खड़ी हो गई।

थोड़ी देर बाद ही दूसरी आवाज़ भी होने लगी। वकील के साथ नीलामी बोलनेवाला और उसका क्लर्क आता दिखाई दिया। उनके पीछे कई किसान थे। जान कार्लेट सबके बीच में ज़ोर से हँसता और आगे बढ़-चढ़कर बातें करता सबसे आगे चल रहा था। उसका भावहीन चेहरा देख-

कर मोना को घृणा हुई। तीसरे हाते की बाड़ के दूसरी तरफ़ फीके चेहरेवाला ऑस्कर उसकी नज़र पड़ गया।

थोड़ी देर निरीक्षण होने के बाद नीलामी शुरू हो गई। वकील ने मोटे रूप से शर्तें पढ़कर सुनाईं—'एक भी बाकी नहीं रहेगा, सारे चौपाये बेच दिये जायेंगे।' फिर नीलाम बोलनेवाला स्टूल पर खड़ा हो गया। क्लर्क उसके नीचे कुर्सी पर बैठ गया और किसान चारों तरफ़ घेरा बनाकर खड़े हो गये।

'मेहरबानो! आप सबने माल बराबर देख ही लिया है। इस तरह के मौक़े बार-बार नहीं मिलते। जान कार्लेट, साहब! मुझे मालूम है कि आप बहुत-सा माल खरीदेंगे, इसलिए अब थैली का मुँह खोल रखिए। आपका नाम क्या? आप तो माल के सच्चे पारखी हैं। अब यहीं पर अपनी परख का सबूत दीजिएगा; आपको चेलेंज देता हूँ।'

एक अच्छी हृष्ट-पुष्ट गाय को एक सिपाही बीच में लाया। उसकी पाँच वर्ष की उम्र थी। मोना को याद था कि दो वर्ष पहले उसने उसके चालीस पौण्ड दिये थे। नीलाम होने लगा—बोलो, बोलो, बोलो, दस-पन्द्रह हाँ, देखो इस तरह अन्याय नहीं हो सकेगा। साठ पौण्ड देने पर भी ऐसी गाय नहीं मिलेगी, इतने में नहीं दिया जा सकता। हाँ कितना? सोलह? सत्रह? अठारह? एक-एक बढ़ाने में मज़ा नहीं। थैली की भी इसमें इज़्ज़त नहीं। वाह, कितना? बीस हाँ, बीस-बीस—बोलो, बीस से ज़्यादा?'

किन्तु बीस पौण्ड से अधिक कोई बढ़ता ही नहीं था। बहुत समय हो गया, इसलिए बीस में ही बोल ख़तम कर डाली गई।

'नाम?'

'जॉन कार्लेट।'

आध घण्टे से भी लम्बे वक्त ऐसा ही होता रहा। एक के बाद एक पशु लाया गया; आधी कीमत भी न लगने के पहले उसे एक तरफ़ कर दिया जाता और हर बार 'नाम?' प्रश्न में जॉन कॉर्लेट ही उपस्थित हो जाता।

मोना से न रहा गया। लूट मार ! जॉन कॉलेंट ने कई किसानों को रोक लिया। वह जहाँ बैठी थी वहाँ से उठ गई। इसने सोचा कि खिड़की खोलकर चिल्लाऊँ, किन्तु आँगन की तरफ़ हाथ बढ़ाते ही उसकी ऑस्कर पर नज़र पड़ी। ऑस्कर लम्बे कदम बढ़ाता हुआ चला गया। मोना बैठ गई।

दूसरा घण्टा निकल गया। फिर मोना बाहर नहीं देखती, किन्तु बाहर जो कोई बोलता, वह उसे सुनाई देता।

इसी प्रकार माल नीलाम होता रहा। किसान बिना बोली बोले रह नहीं सकते थे। नीलाम करनेवाला और वकील आपस में कुछ कानाफूसी करते हैं। 'तो जैसी आपकी इच्छा।' नीलाम करनेवाला वकील से कहता।

वकील ने स्वर को मोटा करके कहा :

'कृपालुओ, यह तो अब हद हो रही है। जो मैं पहले से प्रकट न करता होता कि बहुत-से चौपाये बेच डालने को हैं, तो मैं नीलामी बन्द ही कर देता, किन्तु अब इतनी आशा तो रखता हूँ कि आप सच्चे पारखी बनिए। आप यह क्या कर रहे हैं ? क्या यह युद्ध है ? आप विचार तो कीजिए। आप राबर्ट क्रेइन को जानते होंगे, वह तो गुज़र गये। अब यह उनकी एक कन्या है, उसके प्रति आप अपनी सहृदयता नहीं बता सकते ?'

कई हँसते हुए बन्द हो गये, किन्तु भाव चढ़ानेवाले भी कम हो गये और परिणाम में तो कोई भी सन्देह नहीं रहा जो नीलाम शाम तक चलते रहने का ख़याल था, वह दोपहर होते ही ख़तम हो गया।

नीलामी ने कहा—कृपालुओ ! आप सब लोग जो यहाँ उपस्थित रहे और नीलाम निर्विघ्न हो जाने में जो मदद की, इसके लिए मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ। अधिकतर काम, जिसकी मैंने सूचना दी, उसके मुताबिक ही उसका अन्त गुज़रा। आखिर जान कालेंट ने ही बहुत-सा ख़रीद डाला।'

'ईश्वर इसे सुमार्ग बतायेगा।' वकील ने कहा।

'बिना नीलाम के ही माँगा होता तो मैं इसकी कीमत अधिक दे दिया होता ; साहब !' जान कालेंट ने कहा।

'ठीक है, किन्तु आपको इस बात की शर्म भी नहीं आती, इससे दुःख होता है।'

मोना सब लोगों की आवाज़ सुनती है।

'इस क्षेत्र में जर्मन को रखने की जो हिम्मत करेगा उसकी तो ख़बर ली जानी चाहिए—

'और हमारी एक भी पाई जर्मन के पास कैसे जा सकेगी, यह भी हम देख लेंगे।'

गये हुए किसानों की बातें सुनकर मोना गुस्सा हो जाती है।

थोड़ी देर बाद वकील उसके पास आया और कहा—मुझे यह कहते दुःख होता है कि अपनी धारणा के अनुसार माल की कीमत नहीं मिली। जितनी कीमत वसूल हुई है, उसमें से निलामी के दूसरे ख़र्च भी मुश्किल से निकलेंगे।'

'ऐसा क्या, मेरे लिए कुछ बचता ही नहीं?' मोना ने उत्तेजित होकर पूछा।

वकील नीचे देखने लगा 'नहीं।' उसके मुँह से मुश्किल से उत्तर निकला।

मानो सिर में चोट लग गयी हो, इस तरह मोना नीचे बैठ गई। वकील के चले जाने के बाद, उसका सिर भन्ना गया। उसके कानों में कुत्ते का भौंकना, मनुष्यों का कोलाहल, मेमनों का 'बें-बें' और गायों के रँभाने की आवाज़ आने लगी। चौपायों को उनके नये स्वामी का नौकर हाँक ले गया।

इसके बाद बड़ी शान्ति हो गई, पर यह शान्ति तो उस वज़न की तरह थी; जिसके नीचे वह दब रहा था।

उसकी आँखों में अँधेरा छा गया, उसका अमेरिका इस अँधेरे में दिखना बन्द हो गया। उसके लिए तो होगी कहीं पृथ्वी पर दूसरी कोई जगह जहाँ वह और ऑस्कर जा सके?

सुबह का समय हो गया, तब ऑस्कर आया। उसके होंठ फड़क रहे थे, उसकी आँखें अंगारे बरसा रही थीं। मोना असहाय अवस्था में उसके सामने देख रही थी, उसमें से मानो चेतनता ही उड़ गई थी।

'परिणाम सुन लिया न ?'

'सुन लिया।' दाँत भींचकर उसने कहा।

'मनुष्य इतना नीच हो सकता है ?'

'नीच !' ऑस्कर पागल की तरह हँसता है।

'युद्ध ! कितनी भयंकरता ! कितनी मूर्खता ! और यह युद्ध को जगाने-वाले कहे जाते हैं—देशभक्त ! नहीं, ये लोग तो बदमाशों के भी बदमाश हैं, जो राजाओं में राजा है, ऐसे विश्व-अधिष्ठाता के सामने चालबाज़ी खेलने-वाले बदमाश !'

'किन्तु अधिक विचारने पर ऐसा लगता है कि युद्ध की विभीषिका नष्ट हो जाने पर भी ऐसी ही एक ख़राब वस्तु दूसरी है—'

'क्या ?'

'सुलह ! युद्ध के बाद की यह दम्भी सुलह ! लोगों ने माना है कि युद्ध समाप्त होने पर निद्रा आती है, बहुत-सा विस्मृत हो जाता है। कितनी मूर्खता ! इसका विचार ही कँपकँपी पैदा कर देता है। ये बुड्ढे युवकों के भविष्य की, भावी प्रजा के जीवन की कैसी निर्लज्ज खिल्ली उड़ा रहे हैं। वे कीमती मानव-धन के विनाश को भूलकर आज उसके पसे की ख्वारी, ज़मीन का कब्ज़ा और जड़ वस्तुओं के नाश का ही अन्दाज़ आँकने बैठे हैं। और पालने में सोते बालक को झुलाती मा से उसके ख़ून और आँसुओं से भरपाई करना माँगते हैं। प्रजा के विरुद्ध प्रजा को खड़ा कर देते हैं और प्रत्येक स्त्री-पुरुष और बच्चे के हृदय में द्वेष, शत्रुता का भयानक विष भर दिया जाता है। जर्मन सेना को जो अच्छा लगता है, वह करती है और ब्रिटिश सेना भी जो अच्छा लगता है, वह करती है। किन्तु इनके साथ जर्मन माता का या अँग्रेज़ पत्नी का क्या सम्बन्ध है ? ओह !'

मोना ऊपर देखती हुई खड़ी है, मानो आकाश से किसी की बात को ग्रहण करने की राह देखती हो।

'अपने हाथ की बात नहीं रही थी, हम असहाय थे। ऐसा ही था न ऑस्कर ?' मोना विचार कर रही थी ?

ऑस्कर ने अपने को सँभाला। उसने लज्जा और करुणा के मिश्रित भाव से, काम करते-करते मैले हुए मोना के हाथ को लेकर अपने होठों से स्पर्श किया।

'मोना, मुझे माफ़ कर दो ?'

'तुमने संघर्ष से दूर रहने का कितना प्रयत्न किया ? कितना प्रयत्न ?'

'किन्तु ईश्वर ने ही इसकी प्रेरणा ऑस्कर के हृदय में उत्पन्न की। इसके सामने अपना ज़ोर कितना चलता ?'

'और ऑस्कर, अब ईश्वर ने ही हमको त्याग दिया।'

ऑस्कर सोच ही रहा था। वह बोल उठा—'नहीं, ईश्वर ने हमको ज़रा भी नहीं छोड़ा है ?'

फिर वह वहाँ से चला जाता है।

१४

ईस्टर के त्यौहार के पहले का शनिवार है।

मोना ने सोने के कमरे की खिड़की में से झाँका। जहाँ बाहर हरियाली का वातावरण था। जहाँ पच्चीस हज़ार मनुष्य किसी प्रकार रहकर अपनी ज़िंदगी बिताते थे, उस जगह काली, सूखी, वीरान भूमि आँखों को जलाती है। बिना जन्म के चार-चार वसन्तों की यहीं पैदाइश हुई थी। इस ऊजड़ ज़मीन में से वे वसन्त फिर कब जीवित होंगे ?

केवल तीसरे हाते में कितनी प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। वहाँ भी थोड़े ही मनुष्य रहते हैं। ऑस्कर को यह बताया गया कि उसे आख़िरी टुकड़ी के साथ ही छोड़ा जायगा, पर अब छूटने का समय दूर नहीं।

'घर' ज़्यादातर ख़ाली है। प्राणियों की आवाज़ ख़तम हो गई और

आसपास की हवा में भी रस नहीं रहा है। यह कृत्रिम शान्ति हृदय में घबराहट उत्पन्न करती है। तीन-तीन आदमियों का खेत का सख़्त काम जो मोना अकेली ही खेल खेल में कर डालती थी, उसी मोना से अब एक का भी खाना नहीं बनता। फ़ुरसत और काम से उसे थकावट हो जाती है।

वसन्त ने अपने आगमन की ख़बर भेज दी। घर के दरवाज़े के सामने ज़मीन पर उसने दो-चार फूलों के पौदे उगा दिये। उनमें फूल खिलने को हो रहे थे, पिता की मृत्यु के समय का उसे स्मरण हुआ। पिता की क़ब्र पर उसने उस दिन यहीं से लेकर फूल चढ़ाये थे। इसी इरादे से उसने आज भी यहीं से थोड़े से फूल तोड़े।

घेरे के आगे से वह चलती जाती है, किन्तु उसके उस तरफ़ आज कोई दिखलाई नहीं देता। दरवाज़े के आगे सिपाहियों के घरों की चाल उजड़ गई। रास्ते पर नज़र डालती है तो कोई पेट्रिक के रास्ते तक एक भी जीता मनुष्य दिखाई नहीं देता।

एक पत्थर की तख़्ती के पास वह पहुँची। उस पर खुदा था—'राबर्ट क्रेइन—नोकालोना का निवासी।' उसके बगल में ही दूसरी तख़्तियाँ खड़ी हैं, इन कइयों पर जर्मन नाम लिखे थे। नज़रकैद के चार वर्षों के बीच में मरे हुए जर्मन वहाँ सो रहे थे;

मानो मृत्यु की शान्ति में वृद्ध पिता ने जर्मनों के प्रति अपने द्वेष भाव दूर दिये हों, उसे ऐसा करुण वातावरण मालूम हो रहा था।

थोड़े ही फ़ासले पर एक ऊँची क़ब्र पर छोटी-छोटी घास उग रही थी और पास ही फूलों का एक काँच का गमला रखा हुआ था। रोग से मरे हुए लुडवीग की क़ब्र पर उसने ही वह रखा था। बर्फ़ और ठंड के कारण काँच में दरार पड़ गई थी, और सफ़ेद फूलों की सुन्दरता ग़ायब हो गई थी। वृद्ध पिता ने जर्मनी के प्रति घृणा-भाव हृदय में पाले मृत्यु पाई थी, किन्तु उन्हें क्या पता था कि कुछ समय बाद धरती माता के हृदय में सोकर वह एक जर्मन बच्चे के साथ अपनी मिट्टी को एक बना देगी?

'यह युद्ध ? भगवान ! इतनी नादानी ? इतनी घृणा किस लिए ?

मोना क़ब्रस्तान से वापस फिर रही थी। उसे किसी राज़ की टाँकी की आवाज़ सुनाई दी। ज़रा और आगे चलकर उसने उस राज़ को देखा। उसके बगल में एक काग़ज़ पड़ा था और सामने संगमर्मर की एक तख़्ती पड़ी थी। उस पर वह काग़ज़ में देख-देखकर कुछ खोद रहा था। मोना उसके पास गई।

'क्या करते हो चाचा ?'

'यह देखो न बेटी ! अपने देश के युवकों ने युद्ध में प्राण गँवाये हैं। अपने इलाके से जिन्होंने प्राण गँवाये, उनका नाम खोदता हूँ।' राज़ ने टाँकी को ज़रा रोका और उत्तर दिया। मोना उसके बगल में बैठकर स्वाभाविक तौर पर नामों को पढ़ने लगी।

'यहाँ पील का बड़ा स्तम्भ है न ? उसी के दरवाज़े के आगे इस तख़्ती को स्मरण-स्तम्भ मानकर रोपना है।' राज़ ने कहा।

और ईस्टर के सोमवार को, हाँ, परसों ही इसकी उद्‌घाटन-क्रिया होगी ; सुबह नौ बजे। उसी समय यहाँ से युद्ध में गये अपने युवकों का पहला स्टीमर डगलस की खाड़ी में आयगा न ? वह रविवार को लिवरपूल से रवाना होकर सोमवार को सुबह बराबर यहाँ पहुँच जायगा। और इसकी उद्‌घाटन-क्रिया किसके हाथों द्वारा होगी, यह भी ख़बर है ? बन्दरगाह के लार्ड विशप के हाथों से ; बड़े-बड़े आदमी यहाँ मौजूद होंगे। गवर्नर, कमिश्नर, पादरी, उपदेशक, व्यवसायी और बहुत से योग्य प्रतिष्ठित लोग। पुरुषों के साथ स्त्रियाँ और बालक भी आयेंगे।'

मोना का ध्यान नामावली पढ़ने में ही था ; इसलिए वह बातें तो सुन ही नहीं रही थी।

'तू भी आयगी क्या ?' राज़ ने प्रश्न किया।

'मैं ?' मोना कुछ विचार में पड़ी और फिर उत्तर दिया—'नहीं।'

'नहीं !' तो राज़ सैकड़ों बार सुनता रहा है।

'हाँ, किन्तु चाचा, मोना ने कहा।—इसमें रॉबी का नाम तो दिखता ही नहीं।'

राज़ टाँकी फिर तख़्ती पर अड़ाने हुआ कि इस प्रश्न को सुनकर ऊँचा देखने लगा।

'रॉबी ? रॉबी क्रेहन ? सच ? इस काग़ज़ में उसका नाम ही नहीं दिया।'

'क्यों ? यह युद्ध में ब्रिटेन के लिए मरा है। इसे तो विक्टोरिया क्रास भी मिला था।'

'मिला होगा।'

'मिला होगा।'

'मिला होगा ? तुम यह जानते ही हो। तो फिर इसमें उसका नाम न देने का क्या कारण ?'

राज़ अपने काम की तरफ़ ध्यान देता है, टाँकी पत्थर पर टक-टक होने होने लगी और वह उदासीनता से उत्तर देता है।

'उस बेचारे ने तो देश के लिए बहुत कुछ किया, किन्तु किसी दूसरे ने इसके किये-कराये पर पानी फेर दिया।'

मोना की पीठ पर मानो चाबुक पड़ा। वह वहाँ से भागी। रास्ते पर बहुत आगे बढ़ गई, वहाँ तक भी उसे राज़ की टाँकी सुनाई दी, पर मानो प्रलयकाल का तूफ़ान आया हो, ऐसा उसे मालूम हुआ। उसके स्वजनों को जीवित रखनेवाला एक स्मरण ही उसको घर से बाहर निकाल रखना चाहता है ? ऐसा उसने क्या किया है ? किन्तु अधिक ग़ुस्से के आवेश के दूसरे ही क्षण, उस पर अपनी निर्बलता सवार हो गई।

'सारे मनुष्य ही इतने निर्दय कैसे हो सकते हैं, यह समझ नहीं पड़ता !'

× × ×

शाम तक उसका मन बड़ा उदास रहा। फिर अचानक उसे ऐसा लगा कि इसका कारण युद्ध होगा, युद्ध के बाद की सुलह होगी—इस कारण लोगों के हृदय मन चाहे दूषित बन गये, पर ईश्वर ने इनमें ऑस्कर को

और ऑस्कर में इसे चाहने की प्रवृत्ति प्रेरित की हो तो उसे सँभाल लेना ईश्वर पर निर्भर है। अवश्य, ईश्वर ही इनका उद्धार करेगा, ईश्वर ही लोगों के हृदय में सहानुभूति उत्पन्न करेगा, वही इनकी आँखें खोलेगा—तब बिशप, पादरी, शहर का कमिश्नर और बहुत से अपने काम का पश्चात्ताप करेंगे।

'मैं निष्पाप हूँ। दूसरे भी निष्पाप क्यों नहीं बने ? निर्दोष को दोषी मानने का पाप वे कैसे कर सकेंगे ?'

प्राणी तो बहुत ही हो गये थे; इसलिए घर की ज़रूरी वस्तुएँ खरीदने वे अब शहर में जाने को थे। दूकानदार इनके प्रति ज़रा भी समझ से काम नहीं लेते, किन्तु उन पर तो दोष या अवहेलना का असर होता नहीं। बहुत कुछ खरीदकर वापस घर आते उन्हें देर होती है। इस समय नोकालो का छोटा रास्ता एक सँकरी गली में होकर जाता है। गली के नुक्कड़ पर ही एक शराबखाना था।

आज इस गली में कुछ गड़बड़ मच रही थी, खुले बरामदेवाले एक घर के सामने स्त्रियों और बालकों का एक झुण्ड घर में होते झगड़े को सुनने एकत्र हो गया था। एक पुरुष चिल्ला रहा था, एक छोटी लड़की चीख रही थी, एक युवा स्त्री उस पुरुष को वैसे ही जवाब दे रही थी और एक बुढ़िया दोनों को शान्त करने के लिए समझा रही थी।

'लड़ाई में से मैंने खर्च के लिए जो रुपये भेजे थे, वे क्या तेरे अपने इस जर्मन...को खिलाने !'

'हेरी, इसमें मेरा दोष नहीं, मैंने दूसरा काम खोजने का प्रयत्न किया, पर किसी को मेरी परवा ही नहीं हुई।'

'किन्तु मुझे तेरी परवाह नहीं थी। चल, निकल मेरे घर से।'

'मैं कहती हूँ मुझे परेशान मत कर। मेरी बच्ची को हाथ लगाया तो याद रखना—'

'याद रखना, अच्छा ! देखता हूँ, घर से कैसे नहीं निकलती। चल, उठा ले जा अपनी लड़की को ?'

'हेरी ! लीजा ! हेरी ! हेरी !! क्या करते हो मेरा पेट ? ओ हेरी, कुछ भी हो, है तेरी बहिन ; लीजा, अपने भाई से ही ऐसे बोलेगी ?' बुढ़िया आड़ा हाथ करती है और सिसकती है।

भीड़ में की एक स्त्री से मोना ने पूछा : यह क्या हो रहा है ?

'अरे, वह लीजा है न ! तुम नहीं जानती ? भाई लड़ाई में गया और बाद में बहिन और मा एक जर्मन कैदी से दोस्ती कर बैठीं और उससे यह लड़की पैदा हुई। अब भाई लड़ाई से वापस आ गया है, उससे यह कैसे सहन होता ? इसलिए उसे घर से निकाल बाहर कर रहा है, यह स्वाभाविक ही है ?'

और भी कई शराबखाने से गुज़रते हुए आदमी वहाँ खड़े हो गये। इसी समय लड़ाई में से वापस आया भाई, वह सिपाही अपनी बहिन को खींचते हुए घर के बाहर ले आया। वह स्त्री छाती से अपनी छोटी बच्ची को चिपकाये थी। उसके बाल बिखर गये और पीठ पर फैल गये। सिपाही का सिर झुला था।

'हट कुलटा ! इस अपने जर्मन पाप को लेकर बाहर निकल जा !'

स्त्री को रास्ते पर धक्का दे वह घर में घुस गया और भड़ाभड़ दरवाज़े बन्द कर दिये।

स्त्री दौड़कर दरवाज़े से जाकर टकराई। 'खोल, आने दे मुझे, अन्दर आने दे मुझे !' एक हाथ से अपनी छोटी बच्ची को थामे दूसरे हाथ से वह दरवाजे को खड़खड़ा रही थी।

अचानक दरवाजा खुल गया, और उसका भाई दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

'देख, सुन ले, सोमवार को सवेरे कई मिलनेवाले आयेंगे और तब मेरे सामने देख-देखकर हँसेंगे तो मुझसे सहन न होगा। इसलिए यदि तू यहाँ से न जायगी तो दो मिनट में ही तुझे...'

'राक्षस, निष्ठुर, जंगली, तू लड़ाई में मर क्यों न गया। तू ज़िन्दा घर क्यों आया ?' लीजा ने तेज होकर कहा।

यह सुनते ही उसका भाई आवेश में हो गया। उसकी मुट्ठी सख़्त हो गई, किन्तु वह ऊँची होकर नीची हो पाये, इसके पहले ही लोगों की भीड़ ने उसे धक्का दिया और भीड़ से मोना को भी धक्का लगा, जिससे ख़रीदे हुए सामान का झोला ज़ोर से एक सिपाही के मुँह पर पड़ा और वह 'उफ़' आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ा।

उधर वह सिपाही उलटा मुँह किये पड़ा हाँफ रहा था तब मोना इकट्ठे हुए शराबियों की तरफ़ मुड़ी और हाथ ऊँचा करके बोली।

'तुममें से मनुष्यता ही नष्ट हो गई क्या? सब शिकारी कुत्ते बन गये क्या? तुम्हें जन्म देनेवाली एक स्त्री थी, इस बहिन के प्रति बर्ताव से वह बेचारी शर्म से मरी जाती होगी।'

सिपाही को ग़श्त जैसा आ गया, वह बैठा नहीं रह सकता था, फिर भी वह पड़ा-पड़ा 'ही-ही' करके हँस रहा था, किन्तु बिना बोले उससे नहीं रहा जाता था।

'देख लो यह इसकी बहिन! इसका चरित्र तुम सबने सुना ही होगा। मैंने भी आकर सुना। अरी, जब लड़ाई शुरू हुई तब तू कहाँ थी और आज कहाँ है यह तो याद कर! अपने काम सँभाल न, फिर हमें सीख देना। हा...हा'

उसके साथ इकट्ठे हुए लोग हँसने लगे। और स्त्रियाँ नीचे सिर किये चलती बनीं। मोना स्तम्भित हो गई। सिपाही को उसने जैसे बात की चोट मारी थी, उससे भी अधिक ज़ोर से उसके उल्टी लगी। पत्थर की मूर्ति की तरह कितनी ही देर तक वह खड़ी रही और फिर झोला उठाकर बिना पीछे देखे चली गई।

अभी-अभी उसे भाग्य से ही अच्छी नींद आ गई है। आज तो उसका ज़रा भी पलक नहीं झँपा। सुबह की गुलाबी में उसे ऐसा लगा कि उसके बरामदे में रॉबी प्रवेश करता है। रॉबी की जैसी उसने मन में कल्पना की, वैसे ही अफ़सर की पोशाक में वह आ खड़ा हुआ। मोना को बराबर याद

है कि रॉबी की मृत्यु हो गई, इसलिए इस दृश्य को वह असत्य नहीं ठहरा सकती थी।

'मोना, तीन वर्ष पहले जो मुझे इस बात का पता चलता तो उसे मैं जान से मार डालता। ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उसे मैं जिन्दा नहीं छोड़ता।'

मोना को स्पष्ट शब्द सुनाई दिये, उसने बोलने का प्रयत्न किया, किन्तु उसके मुँह में से आवाज़ ही नहीं निकलती थी।

'रॉब्...राब्...ब्...बी, रॉबी!'

'दूसरे किस काम के लिए तुमने यह किया है। यह सब नहीं समझते हैं, तुम्हारे पिता ही ने इसे समझा और इसी आघात ने उनके प्राण लिये।'

मोना फिर चिल्लाना चाहती थी, पर उसके होंठ ही नहीं खुले।

'भूमि मार्ग दे तो भूमि में समा जा। नदी नहीं मिलती कि उसमें डूब मरे? यह देख, मेरी छाती में तूने कितना गहरा घाव किया है और अब...'

रॉबी-रॉबी...!'

तन्द्रा में से वह उठ बैठी। सूर्य उदय हो गया था और उसके अस्त-व्यस्त बिछौने में उसकी प्रखरता पड़ रही थी।

स्वप्न ही था, पर स्वप्न इतना अधिक स्पष्ट? चारों तरफ़ से इसके प्रेम को विकरालता घेरे रहती है, यहीं अधिक बातों का अन्त आ जाता है। जगत और जीवन इसके लिए अब रहा नहीं। इसने जो किया है, पाप न होते हुए भी वह पाप के नाम से परिचित होता है, यह थोड़ी सज़ा है? इसकी अपेक्षा प्राण-दण्ड की सज़ा थोड़ी नहीं होती। हज़ार दर्जे मृत्यु इससे बेहतर है।

मृत्यु का मार्ग तो सहल ही है और परिणाम भी हलके हैं। किसी को इसका दुःख नहीं हो सकता, सिवा ऑस्कर के! किन्तु खुद के जाने से तो उसका मार्ग सरल होता है। किसी विशेष व्यथा के बिना वह अपने घर जा सकती है। दोनों में से कोई एक तो आनन्द से जी सकता है। उसके साथ रहने का ही प्रतिबन्ध है। और देखो, दोनों में से एक ही जीवित रहेगा;

आस्कर ही जीये तो उसके जीवन के बराबर है, उसके लिए यही बहुत अच्छा होगा।

आँस्कर को दुख होगा, ये विचार उसे काँटे की तरह चुभते हैं। आस्कर को दुख होगा, पर वह तो जल्दी ही भूला जा सकेगा और एक समय दुख हल्का होते उसे सुख की कल्पना जागेगी, अभी तो वह जवान है, इतना भावुक भरा होगा, इसकी शायद ही किसी को खबर हो...

नहीं, नहीं, यहाँ तक तो इससे बिचारा ही नहीं जा सकता।

१५

ईस्टर, ईश्वर की मधुर से मधुर स्मृति! वर्ष का सुन्दर गुलाबी दिन!

मोना जाने के पहले आखिरी सुख का अनुभव करने घर को सजाती है। बहुत कुछ काम निबटने के बाद उसे ख़याल आया कि उसने अभी नाश्ता नहीं किया, पर अब इसकी ज़रूरत ही क्या है? और फिर प्यास कितने ज़ोर से लगी है? चाय की तपेली उसने तैयार की और खूब कड़क चाय बनाकर पी गई।

गिर्जे का घंटा बजने लगा; आखिरी बार उसने गिर्जा में हो आने का विचार किया। किस लिए न जाऊँ? अच्छे दिखलाई देते लोग पसन्द नहीं करेंगे, इसलिए? कुछ परवा नहीं?

वह बाहर निकली।

हवा चल रही थी। साथ ही फूलों की और वनस्पति की सुगंध बह रही थी, समुद्र के खराश की उसमें सुगन्ध मिली थी; तरह-तरह के पक्षी आनन्द से किलोलें कर रहे थे।

गिर्जे में जब वह पहुँची तब घंटा बजना बन्द हो गया था। वह देर से पहुँची थी, रास्ते पर कोई दिखाई न देता था। कपड़े पहनने में ही उसे देर हो गई थी, खड़े रहने से वह थक गई थी और बार-बार बैठना पड़ा था, इससे देर हो गई थी।

गिर्जे के सामने जब वह पहुँची तब आराधना शुरू हो चुकी थी। अध-खुला दरवाजा वह देख सकती थी। लोग घुटने टेके थे और पादरी 'पाप का इकरार' पढ़ रहा था। लोग उसके पीछे-पीछे थे। अब वह अन्दर नहीं जा सकती थी। वह बाहर स्टूल के पास खड़ी हो गई। स्कूल के बच्चे मंच के बाईं तरफ घुटने टेके सिर झुकाये हुए थे। ईस्टर के नये कपड़े पहनने को मिलने से उनके चेहरे खिल उठे थे। वह भी बचपन में ऐसी ही थी। हृदय-स्पर्शी दृश्य था। जब मौत दरवाज़े पर खड़ी थी, तब बचपन का जीवन उसे बहुत प्यारा लगने लगा।

जब कुछ आवाज़ बन्द हुई, तब वह अन्दर घुसने लगी। कितने ही लोग उसे पीछे खड़ी जानकर देखने लगे। उसको ऐसा लगा कि मानो अस्पृश्य की तरह उसे बाहर खड़ा रखा गया है। ऐसा विचार आते ही वह जहाँ की तहाँ खड़ी रही।

आराधना के बाद भजन, पाठ, कीर्तन आदि होते हैं। और फिर आख़िरी उपदेश के पहले का भजन बाद में होता है :

'Jesu, lover of my soul,
Let me to thy bosom fly...,

मोनां ने कई बार इसे गाया है और फिर भी उसे ऐसा लगता कि इसका अर्थ वह आज तक भी नहीं समझी।

While the gathering waters roll,
While the tempest still is high,

मोना तल्लीन हो गई। उसे इसकी भी ख़बर न रही कि उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उपदेश शुरू हो गया। पादरी की आवाज़ उसके कानों से टकराती है। जो पक्षियों के कलरव में, हवा की सिसकारी में और खेतों में मैमनों के बें-बें स्वर में मिल जाती है।

ईशू के अन्तिम दिन हैं—उसकी मृत्यु और पुनर्जीवन, उसके शत्रुओं का रोष और मित्रों का लोप; बड़ी करुण कहानी है, फिर भी कितनी सुन्दर है।

मृत्यु को वह नीचे ठेल सकती थी, पर उसने लोभ न रखा था। स्वेच्छा से उसने मृत्यु को निमन्त्रण दिया था। किस लिए उसने ऐसा किया? क्योंकि उसे विश्वास था कि अपने नाश में जगत की रक्षा है। ईशू ने मरकर बताया कि आत्मा के कल्याण के आगे सारी वस्तुएँ तुच्छ हैं। धन तुच्छ है, कीर्त्ति तुच्छ है, ग़रीबी और अमीरी इसके मार्ग में कोई रुकावट नहीं डालते। ईशू को अपमान मिला, तुच्छता मिली, मित्र रहे नहीं, घर रहा नहीं, मानव-परिवार से दूर उसे रखा गया, उसे ज़रा भी किसी प्रकार का उद्वेग न रहा। उसके हृदय में प्रेम ही एक बड़ी निधि थी। संसार को प्रेम करने के बदले उसे मौत मिली!

'और इसी से संसार आज उसके आगे मस्तक झुकाता है। आज दो हज़ार वर्ष से उसकी महिमा की यात्रा शुरू हुई है और वह संसार के अन्त तक चालू रहेगी। 'Let me to thy bosom fly,' ईशू के इन वचनों में हमें आराम मिलेगा।'

पादरी का बोलना ख़तम होता है और वह आशीर्वाद के वचन शुरू करता है, उसके पहले ही सोना घर की तरफ़ भाग जाती है। उसकी आँखों में आँसू की एक बूँद नहीं, उसका हृदय आनन्द से प्रफुल्ल है।

आज तक वह यही समझ रही थी कि उसने ऐसा कार्य किया है कि जिसकी ईश्वर से क्षमा माँगनी पड़ेगी, किन्तु अब उसके हृदय में नई भावना उत्पन्न हुई। ईशू ने प्रेम के लिए अपना बलिदान दिया; वह भी प्रेम के लिए ही सब कुछ सहन करती है। बलिदान भी देने जाती है। ईशू ने मृत्यु पाकर जगत को जीवन दिया, किन्तु उसके लिए ऐसा नहीं।

विचारों के उठने में उसे ऐसा लगता है कि ईशू के और अपने कार्य में ज़रा भी भेद नहीं। खुद जो करने की इच्छा रखती है, वह पाप नहीं, बल्कि पुण्य है, इसके पीछे बलिदान की भावना है। युद्ध के परिणाम-स्वरूप घृणा से संसार पीड़ित है, उसे खुद वह बचाने जाती है। यद्यपि वह जगत में

सामान्य है, किसी को इसके काम के विषय में मालूम नहीं होता, पर ईश्वर तो यह जानने का ही है।

पर ऑस्कर? उसने ऑस्कर को कुछ कहने का विचार न रखा था। वह उसे इतना प्रेम करती थी कि वह उसे ऐसा न करने को समझाता था। उसका विचार ऐसा था कि मौका देखकर सटक जाऊँ, पर ये नवीन विचार बाद में उसे आये, ऑस्कर भी यह नहीं जानता था?

घण्टों बीत जाते हैं, उसे विश्वास है कि आज ऑस्कर आयगा। बैठी-बैठी वह कई प्याले चाय पी जाती है, यह तो वह भूल ही गई है कि उसने कल से कुछ खाया नहीं है। हमेशा की तरह आज रात भी अच्छी तरह गुज़र गई, बाद में ऑस्कर आता है। आवेग और उपवास से वह इतनी तो निर्बल हो गई है कि दरवाज़ा खोलने के लायक़ भी नहीं रही।

'हाँ, हाँ!'

वह घर में आता है। कितने ही दिनों बाद वह अन्दर आया है। वृद्ध को दूसरी बार बीमारी का जोर हुआ तब वह आया था। आकर वह अँगाठी के पास उसके बगल में ही बैठ जाता है। उसका चेहरा बिलकुल सफ़ेद हो गया है। उसकी आवाज़ भर्राई हुई है।

'क्या करना है, आस्कर?'

'कुछ भी नहीं, डरने लायक कुछ नहीं। मैं तुमसे कुछ कहने आया हूँ।'

'क्या'

'कल मैं छूट जाऊँगा, मुझे हुक्म मिल गया है।'

'सवेरे ही?'

'हाँ, आखरी टुकड़ी के साथ रहे-सहे सिपाही और अफ़सर भी चले जायेंगे। कल तो छावनी निर्जन बन जायगी।'

मोना का हृदय जोश से धड़कने लगता है। उसे वह कम करने के लिए इधर-उधर के प्रश्न करती है।

'लोग कुछ कहते है?'

ऑस्कर मर्म-बेधक हँसी हँसता है और सहज ही कहता है लोग ? ये लोग तो जानते हैं और कहते हैं कि हमें फिर वापस यहीं आना है। आज तो हमें भूखों मार डालने जर्मनी में धकेला जा रहा है; किन्तु हृदय में घृणा की आग भरकर हम यहीं फिर वापस आयेंगे।'

'इसका मतलब यह कि फिर एक दिन आज की ही तरह भयंकर लड़ाई होगी ?'

'मतलब तो यही होता है, आज जीती हुई प्रजा हारी हुई प्रजा को जिस निर्दयता से कुचलने में आनन्द मानती है, इसका परिणाम क्या होगा ? पर ऐसा कभी यदि होने को हो तो भगवान ऐसा होना रोके, इस दुःखी जगत और जगत के दुःखी जीवों के लिए इतना दुःख बहुत हो चुका है, अब तो प्रभु इन्हें इससे बचा ले और सुखी करे।'

मोना को ऐसा लगता है कि वह अच्छी तरह समझती है, पर बोल नहीं सकती। ऑस्कर बात करने का मौक़ा जान कहने लगा :

'युद्ध के अन्त में संसार को तो एक सुन्दर मौक़ा मिलेगा ही। जो इसका अच्छा उपयोग हुआ होता तो फिर दूसरा युद्ध किसी समय होना सम्भव नहीं रहता। किन्तु प्रजाओं के विधाता-सत्ताधारी पुरुषों ने 'सुलह' और 'बैठकों' में तो शान्ति की ऐसी दुर्दशा कर दी कि इस स्थिति के बजाय तो युद्ध का चलता ही रहना अच्छा था, और देखो अपने गिर्जों को ही, जिन गिर्जों ने हमें एक समय सिखाया था कि सैनिक की तलवार के नीचे कल्याण नहीं, शान्ति नहीं। किन्तु आज यही गिर्जे कल्याण और शान्ति के विघातक सैनिकों के सिवा और दूसरों को प्रवेश नहीं करने देते। कितनी दाम्भिकता! कितना असत्याचरण! आध्यात्मिकता का कैसा व्यभिचार! ऐसा ही होना है तो क्यों न इन आराधना-गृहों में आग लगा दी जाती ? क्यों न इनके दरवाज़े बन्द कर दिये जाते ? और क्यों न जैसे हैं वैसे ही रहकर संसार के सामने खड़े नहीं रहते ? पर मैं अभी आया हूँ, दूसरी बात करने।'

'किसकी बात, ऑस्कर ?'

ऑस्कर थोड़ी देर रुकता है और फिर बाद में शब्दों के प्रवाह में बहता है।

'तुझे डराने की इच्छा नहीं मोना ! तथापि बीवा की तरह तुझ पर नहीं बीती ; मुझे विचलित नहीं होने देती...किन्तु तू ही मेरी अब सर्वस्व है। और...तुझे अकेली छोड़कर जाते...नहीं, मुझसे ऐसा होना अशक्य है, असम्भव है, कभी सम्भव नहीं।'

'पर ऑस्कर ! ये लोग तुम्हें ज़बर्दस्ती जहाज में चढ़ा देंगे तो तुम फिर क्या कर सकोगे ?'

ऑस्कर पागल की तरह हँसता है।

'ज़बर्दस्ती ? संसार में सिवा ईश्वर के ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो एक मनुष्य से उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करा सके !—यदि उस मनुष्य में शक्ति हो तो ?'

'शक्ति ?'

'हाँ, शक्ति...मेरे कहने का मतलब अभी भी नहीं समझी ? मोना ! पहले जब मुझे यह विचार आया, तब मुझे लगा कि तू यह सुनकर घबरा जायगी, शायद बेहोश भी हो जाय और शायद मुझे मेरे निर्णय से डिगाने का प्रयत्न करे, इसलिए मैंने तुझसे कुछ न कहने का विचार किया, पर जब आज रात को हुक्म आया कि मुझे सवेरे जाना पड़ेगा। तब मुझे ऐसा लगा—नहीं, मोना अधिकांश स्त्रियों जैसी सामान्य नहीं, मोना बहादुर है, मोना समझ सकती है कि यही मार्ग उत्तम है, इसलिए—'

मोना समझ जाती है कि 'इसलिए' शब्द के बाद अब क्या आया है। उसका हृदय बहुत आतुर होता है, फिर वह कहती है—

'कह डालो, ऑस्कर ! मैं जान जाऊँ, यही बेहतर है।'

ऑस्कर उसके अधिक पास आ जाता है। हवा के साथ बात करता हो, इस प्रकार वह बोलता है, दीवालों को भी वह अपनी बात नहीं सुनाना चाहता।

'सुबह जब मेरी तलाश होगी तब मैं तो हूँगा ही नहीं ? मैं वहाँ चला जाऊँगा, जहाँ से मुझे कोई पकड़ न सकेगा। इसी लिए ही तुझसे विदा माँगने अभी आया हूँ। अपना यह आख़िरी मिलन है मोना—'

ऑस्कर की आँखें इतना कहकर मोना को देखने लगीं। उसने यह सोचा था कि मोना से ये आख़िरी शब्द सहन न हो सकेंगे, वह मूर्च्छित हो जायगी, किन्तु मोना की आँखें तो जैसी की तैसी ही रहीं। वियोग का दुख जो इसके हृदय में अब तक हो रहा था, वह यह सुनकर उड़ गया और हर्षावेश से उसने ऑस्कर को गले लगा लिया।

'ऑस्कर ! मुझे तुम्हारा वियोग असह्य न होगा ? तुम चले जाओगे,

ऑस्कर की आँखों से आँसू गिरने लगते हैं।

'ऑस्कर ! तुम चले जाओगे तो फिर मेरी कैसी स्थिति ?'

'नहीं, ऐसा न कहो, मोना !'

'पर देखो, इस संसार से तुम विलीन हो जाओगे क्या यह अनिवार्य है, यदि तुम्हें ऐसी ही जगह चले जाना इष्ट हो कि जहाँ प्रजा-प्रजा में आपस में भेद-भाव नहीं, तो हम दोनो साथ ही वहाँ क्यों न चलें ?'

'साथ ही ?' ऑस्कर मोना के तेजोज्वल चेहरे की तरफ़ देखता है। 'इसलिए क्या तुम भी—'।

मोना उसका हाथ पकड़ती है। उसका हाथ काँप रहा है ; मोना का हाथ भी काँपता है।

'ऑस्कर, टेकरी पर की खूँटों की लड़ाई याद है न तुमको ?'

'हाँ, जब भाग्य-विधाताओं की ऐसी ही इच्छा हो कि नम्र होकर हमें ज़िन्दा नहीं रहना तब नम्र के लिए एक ही मार्ग रहता है कि उस बाड़ को कूद जाना।'

मोना सिर झुका देती है। ऑस्कर का श्वासोच्छ्वास ज़ोर से चलता है। मोना आँखें ऊँची कर इसकी तरफ़ देखती है, एक क्षण तक दोनो के बीच मौन छा जाता है, फिर ऑस्कर बोला—

'तब तुम भी ऐसी ही इच्छा रखती हो ? सचमुच ?'

'सचमुच ।'

और फिर मोना अपने प्रगल्भ, दैवी और पागल जैसे भावों को व्यक्त करती है।

ऑस्कर के चेहरे पर गम्भीरता आ जाती है, ज्यों-ज्यों मोना के विचारों की आभा उसके मस्तिष्क में छाती है, त्यों-त्यों वह तेजोमय बनता जाता है।

'अपनी मृत्यु को तुम व्यर्थ और मूर्ख मानते हो; ऑस्कर ? जो ईशू ने किया वही हम नहीं कर सकते ? क्या स्वेच्छा-पूर्वक हम इतनी घृणा और विषमता से जगत को चेताने में ही अपना बलिदान नहीं कर सकते ?'

ऑस्कर सिर ऊँचा करता है, उसकी आँखों से आँसू बहते हैं।

'नहीं, ईश्वर का पुण्य-प्रताप ऐसा ही प्रभावशाली है।'

और फिर संसार को छोड़ देना ही उचित प्रतीत होता है, इस प्रकार के अद्भुत भावों में वे धीरे-धीरे बातें करते हैं। जगत को युद्ध और युद्ध के परिणाम-रूप अनिष्ट से बचाने के भाव में दोनो तल्लीन हैं। महान् मृत्युञ्जय, आत्माओं के उद्धारक, शिव ने जैसे ख़ुद हलाहल पी लिया और जगत को जीने दिया, प्रभु का निर्देश हमें प्रेरणा करता है, इस विचार में वे मग्न बन जाते हैं।'

'आराधना-गृह भले ही भ्रष्ट हो गये हों, किन्तु ईशू कहीं किसी जगह बैठे थोड़े ही हैं। वे अपने विश्व-मन्दिर में अमरत्व भोगते हैं।'

'सच है मोना, प्रभु का कार्य अबाधित है।'

१६

दूसरे दिन सुबह पाँच बजे एक युवक और एक युवती दूर की एक टेकरी पर चढ़ते दिखाई देते हैं! टेकरी के इस तरफ़ वीरान काली मिट्टी पर छावनी के छत-विहीन मकान खड़े हैं और उस तरफ़ समुद्र के पानी पर अव्यवस्थित लहरें ऊँची उठ रही हैं।

आकाश में अभी थोड़ा-थोड़ा अँधेरा लहरा रहा है और इस अँधेरे की लहरें घनी हो जायँ, इसके पहले ही जल्दी-जल्दी इन्हें तैर जाने की उतावली में कहीं-कहीं थोड़े तारे छिटकने लगे। प्रभात में नीरवता सोती है। कहीं किसी मुर्गे की आवाज़ आ जाती है। इसके अलावा वातावरण की एक झमझम आवाज़ सुनाई देती है। इसके सिवाय चारों तरफ़ मौन व्याप रहा है।

दोनों एक दूसरे को साधे चल रहे हैं। दोनों परस्पर एक दूसरे का मुख नहीं देख सकते! साथ-साथ रह सकें, इसलिए एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले चल रहे हैं, वे धीरे धीरे चल रहे हैं, इसका एक कारण अँधेरा तो है ही, किन्तु दूसरे कारण जो हैं भी, वे दूसरे कारण उन्हें स्पष्ट मालूम नहीं। थोड़े कदम चलकर वे साँस लेने रुकते हैं। रास्ते को, जितना हो सके, उतना लम्बा बनाने का प्रयत्न करते हैं।

यह इनका आख़री प्रवास ही था।

'ऑस्कर, आख़िरी वक्त मैं तुमसे अपने कसूरों की माफ़ी माँगती हूँ।'

'मोना, तेरा कोई भी कसूर नहीं;'

'जो कुछ हुआ है, वह प्रकृतिवश ही हुआ है, केवल असहाय अवस्था में ही हुआ है।'

केम्प से निकले तब सर्वत्र शान्ति थी। केम्प में थोड़े आदमी थे, वे भी शान्त थे।

किन्तु टेकरी पर आधे रास्ते पहुँचे तब पीछे देखने पर नीचे काली ज़मीन पर कितने ही लोग चलते दीखे। थोड़ी देर में उनके कान में बिगुल की आवाज़ आती है। कैदियों की आख़िरी टुकड़ी को इकट्ठा किया जाता है और फिर बहुत प्रकाश होता है। तब घंटे की तीक्ष्ण आवाज़ होती है। हाज़री ली गई होगी और ऑस्कर मौजूद न होगा।

'मेरी खोज के लिए घंटा बजा है।' कहकर ऑस्कर ज़रा रुक जाता है।

इस दरम्यान वे टावर के छोटे क़ब्रस्तान की दीवार के आगे आ जाते हैं

और किसी की नज़र न पड़ जाय, इसलिए काले झाड़ों के पीछे ग़ायब हो जाते हैं।

दोनों चुप हैं। थोड़ी देर बाद काली पोशाक पहने कैदियों का दल देखने में आता है। इनके दोनों तरफ़ पीले कपड़ों में सजे सिपाही हैं। बहुत से कम्पाउण्ड के बाहर कूच कर जाते हैं।

'मेरी खोज बन्द कर दी गई, ऐसा मालूम होता है।' ऑस्कर कहता है। दोनों छुटकारे की साँस लेते हैं।

एक हुक्म का स्वर सुनाई पड़ता है और फिर कैदियों की काले साँप जैसी कतार चलती दिखाई देती है। जो बड़े दरवाज़े के बाहर निकलकर रास्ते पर चलती दिखाई देती है। पहले तो 'ठब ठब' ऐसे जूतों की आवाज़ सुनाई देती है। पर पीछे रहे पहरेदार जब मोटा लोहे का दरवाजा 'किचूड़' आवाज़ के साथ बन्द करता है, तब कैदियों की ऊँची हर्ष-ध्वनि सुनाई देती है।

यह हर्ष-ध्वनि है, पर सभी के मुँह से वह एक स्वर में नहीं निकली। इसके अन्दर भयंकर निराशा है, और इसके पीछे एक गीत का स्वर भी है—

'Glory to the brave men of old,
Their sons will copy their virtues bold,
Courage in heart.and a sword in hand...

× × ×

थोड़े मिनटों में ये दृश्य खतम हो जाते हैं। और आवाज़ भी सुनाई बन्द हो जाती है।

सब गया—अपने देश में था जहाँ इसकी ज़रूरत है और चार-चार वर्ष से इन्हें कैद कर रखनेवाली जेलों में इनके स्मरण ही रहेंगे। जेल अभी पवित्र पहाड़ की गोद में अँधेरी गुफ़ा की तरह मुख को खोले पड़ी है।

अचानक मोना को एक विचार सूझा। मृत्यु वापस फेरी जा सकती है। जीवन का द्वार इसके लिए अभी खुला है।

'ऑस्कर ! अफ़सर और पहरेवाले तो चले गये। हम भी कहीं भाग जायँ तो कौन ढूँढ़ने पहुँचेगा ! नहीं भाग सकते ? कठिन है !

'कठिन, बहुत कठिन, मोना !'

'हाँ, ठीक, कठिन ही है ।' और फिर दोनों आगे बढ़ते हैं ।

प्रभात की प्रथम किरण फूटती है । इनके और समुद्र के बीच की ज़मीन पर झोंपड़ी थी, इसी समय उसमें से एक गीत सुनाई देता है । गानेवाली एक स्त्री थी और मोना की परिचित थी । एक किसान-मज़दूर ने थोड़े समय पहले ही उससे शादी की थी । उसका पति इस समय खेत में गया होगा और वह काम करती होगी । कितनी सुखी होगी वह !

बार-बार मोना के हृदय में निर्बलता आती है । काल की अपनी उदात्त-भावना का इसे विस्मरण होता है । वह सोचती है कि दूसरी स्त्रियों के भाग्य में जो सुख होता है, वह उसे नहीं मिला ।

'अपना भाग्य ही विचित्र है ।'

'तुझे इससे पश्चात्ताप होता है मोना ?' ऑस्कर उसकी तरफ़ देखकर पूछता है, यह सुनकर मोना चौंकती है ।

'नहीं, ऑस्कर ! मैं तो अपनी भावना की, अपने भाग्य की अद्भुतता की बात करती हूँ । अपने जैसा सुन्दर भाग्य किसी का भी न होगा !'

'अपनी भावना ! अपना भाग्य ! सत्य ही हम भाग्यवान हैं ।'

दोनों हाथ में हाथ डाले ऊँचे चढ़ते चले जाते हैं । मोना का कई बार पैर लचक जाता है, पर ऑस्कर उसे पकड़ लेता है । चंडूल की गीत-ध्वनि सुनाई देती है; जॉन कार्लेट के मेमने का बें-बें स्वर सुनाई देता है । दूर दूर नीचे तलहटी में समुद्र किनारे लाल टेकरियों के नीचे पील शहर पड़ा है । मकानों से काले धुएँ का समूह ऊँचा चढ़ रहा है ।

'ऑस्कर, तुम ठीक समझते हो कि जब लोग परस्पर तिरस्कार नहीं करते, किसी के हृदय में वैर-भाव नहीं होता – तब युद्ध भी नहीं होता ?'

'हाँ मोना ! मैं ऐसा नहीं समझता हूँ, किन्तु यह समय कब आयेगा ? शायद इसके पहले पृथ्वी का प्रलय हो चुका होगा।'

'अवश्य, हमें अपना बलिदान बहुत ही अच्छा लगेगा, कारण कि हमने प्रेम की ही भावना हृदय में भरी है और हमने सारी कामनाओं का त्याग किया है।'

'हाँ, प्रेम की ही भावना हमारे हृदय में है और किसी वस्तु की कामना नहीं रखी।' कहकर मोना ऑस्कर के हाथ में से अपना हाथ छुड़ा लेती है और दृढ़ता से कदम रखती आगे चलती है।

जब शिखर के नज़दीक वे पहुँचते हैं तब समुद्र की धू-धू आवाज़ सुनाई देती है। और समुद्र की खराशभरी आती हवा उनके मुँह के चमड़े को सख़्त बनाती है। अर्ध-चन्द्राकार में पूर्व-पश्चिम में विस्तृत आसमानी समुद्र पड़ा हुआ है। निरुद्देश और ठण्ड का घर।

मोना ठिठकती है। जब कि मज़बूत से मज़बूत हृदय भी मृत्यु के प्रथम दर्शन से हिम्मत हार जाता है, इस प्रकार उसके पैर ढीले पड़ गये। वह बोलती है, किन्तु उसकी आवाज़ में स्पष्ट शिथिलता दिखाई देती है।

'बहुत देर तो नहीं लगती होगी, ठीक है न ओस्कर ?'

'बहुत देर नहीं।'

'थोड़ी ही क्षण लगते होंगे।'

'थोड़े ही क्षण।'

'और फिर सनातन-काल के लिए हम फिर एक हो जायँगे।'

'सनातन काल के लिए।'

'जो थोड़े ही क्षणों के दुख के बदले में बहुत सुख मिलता हो तो क्यों न वह प्राप्त किया जाय।'

अब इसे भय नहीं रहा। उसके सामने तीक्ष्ण धारवाली टेकरी की सीधी बाजू दिखाई देती है। और दोनों मिल लेते हैं और साथ चलते हैं। उसकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं; पर इसमें ईश्वर का तेज ही दिखाई देता है।

थोड़े ही मिनटों में वे किनारे पहुँच जाते हैं। पौन सौ फीट नीचे विविध ताल स्वर में समुद्र का गीत चालू है। और मानो छाती फुलाकर साँस ले रहा है। सूर्य ऊपर आ जाता है और प्रकाश लाल रंग में रँग गया हैं। इसके सिवा दूसरा स्वर सुनाई नहीं देता।

'इसी जगह पर ?'

'इसी जगह पर मोना।'

'तब तुम्हारे अपने विचार के अनुसार...'

'हाँ, उसी के अनुसार।'

और फिर विश्व-पिता के ये दो बालक अपने ही भाइयों से तिरस्कृत। जीवन में अलग हुए और मृत्यु पाकर एक बननेवाले, ये निर्दोष बालक घुटने टेक देते हैं।

तब पास आकर दोनों धीमे स्वर में गाते हैं।

Our father, who art in heaven'

Forgive us our trespasses...

As we forgive them that trespass against us...'

(हमारे दोषों की हमें माफी दे, इसलिए जिससे हम अपने दोष करनेवाले को माफ कर दें)

× × ×

वे खड़े हो जाते हैं, हाथ में हाथ डालते हैं, समुद्र के सामने देखते हैं।

—'Jesu, lover of my soul !'

ऑस्कर कोट के बटन खोल डालता है, अपना कमरबन्द निकालता है। दोनों एक ही कमरबन्द में बँधते हैं। दोनों अब आमने-सामने हो गये, हृदय से हृदय मिलाकर एक बन गये हैं।

'समय आ गया है ऑस्कर !'

'हाँ, मोना !'

'एक आखिरी चुम्बन —'

भूँककर अपने दोनों हाथ उसकी कमर में डाल देता है। दोनों के होंठ एक दूसरे के होंठों को स्पर्श करते है।

'प्रभु तुम पर ऐसा ही प्रेम रखें, जैसा प्रेम तुमने मुझ पर रखा है।'

'प्रभु तुम पर ऐसा ही प्रेम रखें, जैसा प्रेम तुमने मुझे दिया है। प्रणाम-'

'नहीं, प्रणाम नहीं, हम जुदा नहीं होंगे।'

'ठीक है, प्रणाम किस लिए?'

× × ×

सूर्य क्षितिज से ऊपर आकर अब तीक्ष्ण किरणें फेंकने लगा है। अतल समुद्र अपना गान चालू ही रख रहा है।

थोड़ी देर बाद आसमानी आकाश के नीचे सूर्य के तेज में नाचते-चमकते पानी पर दक्षिण तरफ़ से ध्वजा-पताकाओं से सजाया हुआ एक जहाज दृष्टि में आता दीखता है। सैनिकों से वह भरा हुआ है। बहुत से सैनिक किनारा देखने डेक पर आ खड़े हुए। उत्तर की तरफ़ उनका शहर पड़ता है।

पील के बन्दरगाह से तोप की आवाज़ छूटती है। फिर जहाज़ पर बैन्ड का बजना शुरू होता है। उमंग में आकर सैनिक गाने लगते हैं—

'Keep the home—fires burning,
Till the boys come home......'

थोड़ी देर में गिर्जे का घंटा बजने लगता है। घण्टे की आवाज़ ऊँची होती जाती है। आवाज़ अधिक तेज़ होती है—मानो आकाश में से उतरती एक आवाज़ को सुनाया जायगा, इस तरह गिर्जे का घण्टा बजता है—

आकाश से आवाज़ उतरती है—

शान्ति! शान्ति! शान्ति!